वीतराग विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका

[श्री टोडरमल ग्रन्थमाला का उन्नीसवाँ पुष्प]

वीतराग विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका

लेखक व सम्पादक :

पं० हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, एम ए., साहित्यरत्न

सयुक्त मत्री, श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर

प्रकाशक :

मंत्री, श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-४, बापूनगर, जयपुर-४ (राज०)

प्रथमावृत्ति २०००
दिनाक़ १६ मई, १९७१ ई०
मूल्य २ रु० २५ पैं०

मुद्रक
जयपुर प्रिण्टर्स
मिर्जा इस्माइल रोड
जयपुर-१ (राज०)

निवेदन

श्री टोडरमल स्मारक भवन द्वारा गठित पाठ्यक्रम समिति ने कोमलमति बालकों को तत्त्वबोध कराने के उद्देश्य से एक नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया था एव तदनुरूप पाठ्यपुस्तके भी तैयार कराई तथा उनकी परीक्षा लेने हेतु वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की भी स्थापना की गई।

कुशल अध्यापन हेतु अध्यापक बन्धुओ को प्रशिक्षित करने के लिये भी प्रशिक्षण-शिविर की एक योजना तैयार की गई – जिसके माध्यम से ग्रीष्मावकाश मे २० दिन के शिविरो द्वारा उनको अध्यापन की प्रायोगिक और सैद्धान्तिक पद्धति से परिचित कराया जाता है।

अभी तक दो प्रशिक्षण-शिविर हो चुके है। प्रथम शिविर जून, १९६९ में श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर मे हुआ। इसमे भारत के विभिन्न प्रान्तो से समागत ५० अध्यापक बन्धुओ ने बालबोध-प्रशिक्षण प्राप्त किया। दूसरा शिविर जून, १९७० मे विदिशा (मध्यप्रदेश) मे हुआ कि जिसमे विभिन्न प्रान्तों से समागत ७१ अध्यापको ने बालबोध-प्रशिक्षण एव ३२ अध्यापको ने प्रवेशिका-प्रशिक्षण प्राप्त किया।

संस्था के सुयोग्य एवं उत्साही संयुक्तमंत्री श्री प० हुकमचन्दजी शास्त्री ने स्वय ही प्रशिक्षण-शिविर की योजना तैयार की थी एवं तदर्थ स्वतंत्र रूप से आवश्यक नोट्स आदि तैयार करके २ वर्ष तक उन्ही नोट्स के आधार पर अध्यापन किया। उपरोक्त प्रशिक्षणकाल में यह अनुभव किया गया कि आवश्यक निर्देश लिखने-लिखाने में बहुतसा अमूल्य समय व्यर्थ चला जाता है, अतः अगर एक पाठ्यपुस्तक तैयार हो जावे तो ऐसे बहुमूल्य समय का विशेप उपयोग हो सके।

उक्त दोनो शिविरो की अभूतपूर्व सफलता से उत्साहित होकर हमने इस वर्ष १९७१ के मई-जून मे होने वाले शिविर मे जिनवाणी के प्रबल प्रचारक पूज्य श्री कानजी स्वामी से पधारने का सविनय अनुरोध किया। उनकी पावन स्वीकृति मिल जाने से अति उत्साहित होकर समिति ने विचार किया कि इस वर्ष ही प्रशिक्षण की पाठ्यपुस्तक तैयार करके प्रकाशित की जावे और यह गुरुत्तर भार श्री प० हुकमचदजी को सौपा गया। परिणाम-स्वरूप प्रस्तुत कृति आपके सामने है।

श्री प० रतनचदजी शास्त्री ने हमारे प्रशिक्षण-शिविरो के सभालने मे बहुत सहयोग दिया तथा गत वर्ष के शिविर मे तो स्वतत्र रूप से बालबोध-प्रशिक्षण का अध्यापन कार्य सचालन कर हमारे भार को हल्का किया। उक्त दोनो महानुभावो के हम बहुत आभारी है।

आशा है, अध्यापक बधु इस निर्देशिका से लाभ उठा कर हमारे प्रयास को सार्थक बनावेंगे।

निवेदक

नेमीचन्द पाटनी — मत्री

पूरणचन्द गोदीका — अध्यक्ष

समर्पणम्

इस भौतिकवादी युग में, जबकि सम्पूर्ण विश्व भोगोन्मुख हो रहा है तथा अशान्ति की ज्वाला से सन्तप्त है, ऐसे समय में जिन्होंने आध्यात्मिकता का प्रसार और प्रचार कर अपूर्व आत्म-शान्ति का पथ प्रशस्त किया है और स्वयं निरन्तर आत्म-साधना में रत हैं, तथा मोह में गहल हम जैसे पामर प्राणियों को जिन्होंने मुक्ति का मार्ग दिखाकर हम पर महान-महान उपकार किया है; परम पूज्य आचार्य धरसेन, कुन्द-कुन्द, उमास्वामी, समन्तभद्र, अमृतचन्द्र, नेमिचन्द्र आदि वीतरागी दिगम्बर मुनिवरों में है अपार भक्ति जिनकी तथा पण्डितप्रवर पाण्डे राजमलजी, कविवर पं० बनारसीदासजी और आचार्यकल्प पं० टोडरमलजी के प्रति है अपार श्रद्धा जिनकी; उन जिनवाणी के परम भक्त व प्रबल प्रचारक आध्यात्मिक सन्त पूज्यवर श्री कानजी स्वामी के कर-कमलों में सादर सविनय समर्पित ।

पूरणचंद गोदीका

अध्यक्ष

विषय-सूची

बालबोध पाठमाला भाग १-२-३ के पाठों की आदर्श पाठ-योजनाओं व पाठ-संकेतों की तालिका

पाठ संख्या	बालबोध पाठमाला भाग १		बालबोध पाठमाला भाग २		बालबोध पाठमाला भाग ३	
	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-संकेत	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-संकेत	पृष्ठ संख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-संकेत	पृष्ठ संख्या
१	पाठ-सकेत १	५८	पाठ-सकेत ८	६३	आदर्श पाठ-योजना २	२५
२	पाठ-सकेत २	५६	पाठ-सकेत ६	६४	आदर्श पाठ-योजना ३	३४
३	पाठ-सकेत ३	५६	पाठ-सकेत १०	६५	पाठ-सकेत १५	६९
४	पाठ-सकेत ४	६०	आदर्श पाठ-योजना ४	४३	पाठ-सकेत १६	७०
५	पाठ-सकेत ५	६१	पाठ-सकेत ११	६६	पाठ-सकेत १७	७१
६	पाठ-सकेत ६	६२	पाठ-सकेत १२	६६	आदर्श पाठ-योजना १	१५
७	आदर्श पाठ-योजना ५	५१	पाठ-सकेत १३	६७	पाठ-सकेत १८	७२
८	पाठ-सकेत ७	६२	पाठ-सकेत १४	६८	पाठ-सकेत १६	७[illegible]

वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १–२–३ की आदर्श पाठ-योजनाओं व पाठ-सकेतो की तालिका

पाठ संख्या	वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १		वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २		वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३	
	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-सकेत	पृष्ठ सख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-सकेत	पृष्ठ सख्या	आदर्श पाठ-योजना या पाठ-सकेत	पृष्ठ सख्या
१	आदर्श पाठ-योजना १	७७	पाठ-सकेत ८	११९	पाठ-सकेत १७	१३१
२	पाठ-सकेत १	११०	आदर्श पाठ-योजना २	८८	पाठ-सकेत १८	१३२
३	पाठ-सकेत २	१११	पाठ-सकेत ९	१२०	पाठ-सकेत १९	१३४
४	पाठ-सकेत ३	११३	पाठ-सकेत १०	१२२	पाठ-मकेत २०	१३५
५	पाठ-सकेत ४	११५	पाठ-सकेत ११	१२४	आदर्श पाठ-योजना ३	९९
६	पाठ-सकेत ५	११७	पाठ-सकेत १२	१२५	पाठ-सकेत २१	१३६
७	पाठ-सकेत ६	११८	पाठ-सकेत १३	१२६	पाठ-सकेत २२	१३७
८	पाठ सकेत ७	११८	पाठ-सकेत १४	१२७	पाठ-सकेत २३	१३८
९	—	—	पाठ-सकेत १५	१२८	पाठ-सकेत २४	१४०
१०	—	—	पाठ-सकेत १६	१३०	पाठ-सकेत २५	१४१
११	—	—	—	—	पाठ-सकेत २६	१४३

वीतराग विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका

मंगलाचरण

दोहा – आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान ।
विश्वशान्ति का मूल है, वीतराग विज्ञान ।।१।।

वीतराग विज्ञानमय, स्वातम का धरि ध्यान ।
बने, बनेगे, बन रहे, वीतराग भगवान ।।२।।

वीतराग विज्ञान ही, तीन लोक मे सार ।
वीतराग विज्ञान का, घर घर होय प्रसार ।।३।।

सोरठा– घट घट आतमज्ञान, प्राप्ति हेतु यह लिख रहा ।
वीतराग विज्ञान, प्रशिक्षण निर्देशिका ।।४।।

विषय-प्रवेश

श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ का उद्देश्य वीतराग विज्ञान को घर-घर पहुंचाना है। यह शिक्षा के माध्यम से ही सभव है। तदर्थ देश में अनेक स्थानो पर जैन स्कूलों व पाठशालाओ मे वीतराग विज्ञान का शिक्षण चल रहा है व स्थान-स्थान पर नई वीतराग विज्ञान पाठशालाएं खुल रही है।

वैसे तो प्रत्येक कार्य को ही सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक विधि और तत्सबधी कार्यकुशलता आवश्यक है, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में यह अनिवार्य है। आधुनिक शिक्षा-पद्धति मे अनेक वैज्ञानिक परिवर्तन हुए है और निरन्तर हो रहे है। वीतराग विज्ञान की शिक्षण-पद्धति मे भी तदनुरूप परिवर्तन अपेक्षित है।

आज हमे ऐसे योग्य अध्यापको की आवश्यकता है जो (१) बालको मे वीतराग विज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर सके, (२) उन्हे सामान्य तत्त्वज्ञान करा सके तथा (३) सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित कर सके।

लौकिक शिक्षा-पद्धति मे कुशलता प्राप्त करने के लिए एक या दो वर्ष का प्रशिक्षणकाल रहता है किन्तु धार्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए इतना समय देना आज के व्यस्त जीवन मे असभव सा लगने लगा है। अतः ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय २० दिन के शिविरो के द्वारा वीतराग विज्ञान के अध्यापको को प्रशिक्षण देने का क्रम चालू किया गया है। यह प्रशिक्षण निम्न तीन शिविरो के माध्यम से पूरा होने का है :-

(१) बालबोध प्रशिक्षण
(२) प्रवेशिका प्रशिक्षण
*(३) प्रशिक्षण विशारद

प्रशिक्षण की सुविधा की दृष्टि से इस योजना को पुस्तकाकार लिपिबद्ध करना आवश्यक प्रतीत हुआ, तदर्थ बालबोध व प्रवेशिका प्रशिक्षण से सम्बन्धित यह प्रथम प्रयास है।

यह पुस्तिका तीन अध्यायो मे विभाजित है -

प्रथम अध्याय मे प्रशिक्षण सबधी सामान्य जानकारी है।

द्वितीय अध्याय मे बालबोध प्रशिक्षण सबधी विश्लेषण एव तत्संबधित पाठ-योजनाए तथा पाठ-सकेत है।

तृतीय अध्याय प्रवेशिका प्रशिक्षण से सम्बन्धित है।

---

* 'प्रशिक्षण विशारद' सम्बन्धी पुस्तिका बाद मे प्रकाशित करने की योजना है।

अध्याय | प्रथम

प्रशिक्षण संबंधी सामान्य ज्ञान

स्वयं ज्ञानार्जन करना अलग बात है और प्राप्त ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाना दूसरी बात है। नितान्त अनभिज्ञ छात्रो को वांछित विषय हृदयंगम करा देना सहज कार्य नहीं है। इसके लिए अध्यापक का जागरूक, मननशील व मनोवैज्ञानिक होना आवश्यक है। एक कुशल अध्यापक को निम्नलिखित बातों को सदैव ध्यान मे रखना चाहिये :-

(१) कक्षा मे सर्वप्रथम बोर्ड पर नाम कक्षा, विषय, प्रकरण एवं दिनांक लिख देना चाहिये।

(२) कक्षा में अध्यापक की दृष्टि छात्रों पर रहनी चाहिये।

(३) अध्यापक को न तो अति मद स्वर मे ही बोलना चाहिये न अति तेज मे। सब छात्र आसानी से सुन सकें इस प्रकार के मध्यम स्वर मे स्पष्ट बोलना चाहिये।

(४) छात्रों का स्तर एव पूर्व-ज्ञान आधार मानकर अपनी बात समझानी चाहिये।

(५) विषय को इस तरह उठाना चाहिये कि छात्रो मे प्रस्तुत विषय को जानने की जिज्ञासा जागृत हो ।

(६) सरलता से कठिनता की ओर व उदाहरण से सिद्धात की ओर जाना चाहिये ।

(७) ज्ञात से अज्ञात की ओर व मूर्त से अमूर्त की ओर जाना चाहिये ।

ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में ही कुछ अपने अलग पारिभाषिक शब्द होते है, जिनको जाने बिना तत्सबधी विशेष कथन का भाव भासित होना सभव नही है । शिक्षण-पद्धति मे भी कतिपय विशेष शब्दो का विशेष अर्थ मे प्रयोग होता है, जिनका ज्ञान प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को होना अत्यावश्यक है । वीतराग विज्ञान प्रशिक्षण मे प्रयोग मे आने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्द निम्न प्रकार है :—

१. पाठ-योजना
२. प्रकरण
३. उद्देश्य
   (क) सामान्य उद्देश्य
   (ख) विशेष उद्देश्य
४ उद्देश्य कथन
५. पूर्व-ज्ञान
६ सामग्री
   (क) आवश्यक सामग्री
   (ख) सहायक सामग्री
७. प्रस्तुतीकरण
८. आदर्श वाचन
   (क) सवाद शैली
   (ख) गद्य शैली
   (ग) पद्य शैली
९ अनुकरण वाचन
१०. सामान्यार्थ विवेचन
११. विचार-विश्लेपण
१२. प्रश्नोत्तर
   (क) वोधगम्य प्रश्नोत्तर
   (ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
   (ग) मूल्याकन प्रश्नोत्तर
      (i) समापन मूल्याकन
      (ii) पूर्व-पाठ मूल्याकन
१३. साराश कथन
१४. समापन
१५ गृहकार्य
१६ अध्यापक कथन
१७ आधार-परिचय

उपरोक्त पारिभाषिक शब्दो का विश्लेषण व उनके विशेष निर्देशो को स्पष्टतया समझ लेना आवश्यक है। इनका विशेप स्पष्टीकरण निम्नानुसार है :-

१. पाठ-योजना

पढाये जाने वाले पाठ की अध्यापन व अध्ययन की दृष्टि से विस्तृत योजना बनाना अत्यावश्यक है। इसे पाठ-योजना कहते है।

२. प्रकरण

पाठ के जिस अश का ज्ञान छात्रो को देना हो उसे प्रकरण कहते है। प्राय· पाठ के ही नाम को प्रकरण समझ लिया जाता है। पाठ का नाम भी प्रकरण हो सकता है पर सूक्ष्मता से विचार करने पर विस्तृत सीमा को लिये हुये पाठ के अन्तर्गत कई प्रकरण हो सकते है। उदाहरणत: 'कषाय' वाले पाठ मे यदि एक दिन मे 'क्रोध और मान' ही पढ़ाना हो तो प्रकरण 'क्रोध और मान कषाय' दिया जाना चाहिए।

३. उद्देश्य

प्रत्येक कार्य के पीछे एक लक्ष्य (उद्देश्य) होता है। यहाँ हम उद्देश्य को दो भागो मे विभाजित कर सकते है –

(क) सामान्य उद्देश्य
(ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – सामान्य उद्देश्य सब पाठों मे समान रूप से पाये जाते है।

(ख) विशेष उद्देश्य – विशेष उद्देश्य पाठ-विशेष से सबधित होते है। ये तात्कालिक पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किये जाते है।

४. उद्देश्य कथन

छात्रो को पढाना प्रारम्भ करने के पूर्व यदि पाठ का उद्देश्य बता दिया जाय तो वे उसे अधिक रुचिपूर्वक पढते है। अत: पाठ प्रारम्भ करने के पूर्व उद्देश्य अवश्य बता देना चाहिये। इसको ही उद्देश्य कथन कहते है। उद्देश्य कथन सरल, संक्षिप्त और रोचक होना चाहिए।

५. पूर्व-ज्ञान

प्रस्तुत पाठ को पढाते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि बालको को उक्त विषय का पहले से कितना ज्ञान है, क्योकि यह ध्यान रखे बिना दिया गया ज्ञान छात्र ग्रहण नही कर सकेगे। पूर्व-ज्ञान जानने के लिये पाठ्यक्रम की पूर्व-पुस्तको एव पूर्व-पाठो को आधार माना जाना चाहिए।

६. सामग्री

पाठ्य-विषय को पढाने से सबधित सामग्री की पहले से ही व्यवस्था हो जानी चाहिये। इसको दो भागो मे बाटा जा सकता है–

(क) आवश्यक सामग्री

(ख) सहायक सामग्री

(क) **आवश्यक सामग्री**–प्रत्येक पाठ को पढाने के लिए जिस सामान की आवश्यकता होती है, उसे आवश्यक सामग्री कहते है। जैसे–बोर्ड, चाक, डस्टर आदि।

(ख) **सहायक सामग्री**–पाठ-विशेष को पढाने से सबधित सामग्री को सहायक सामग्री कहते है। जैसे–पाठ्यपुस्तक, पाठ से सबधित नक्शा, चार्ट आदि।

७. प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुतीकरण मे किसी भी पाठ को छात्रो के समक्ष प्रस्तुत करने के पूर्व अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह तय किया जाता है कि अमुक पाठ कितने दिन मे व एक दिन मे उसका कितना भाग पढाया जावेगा। यह भी तय कर लिया जाता है कि अमुक दिन पढाया जाने वाला पाठ कितनी अन्वितियो मे विभाजित किया जावेगा व प्रत्येक अन्विति मे कितने सोपान होगे।

८. आदर्श वाचन

कक्षा मे पाठ पढाते समय पाठ्यवस्तु को अध्यापक उचित आरोह-अवरोह के साथ जो स्वय वाचन करतो है उसे आदर्श वाचन कहते है। आदर्श वाचन करने से पूर्व छात्रो को पुस्तक की पृष्ठ सख्या बता देना चाहिये तथा उन्हे पाठ को देखने एव आदर्श वाचन

को ध्यान से सुनने की प्रेरणा देने के साथ यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि जैसे मै यह पाठ पढा रहा हूँ वैसे ही किसी भी छात्र को अभी इसका वाचन करना होगा। ऐसा कहने से छात्र अध्यापक द्वारा किये जाने वाले वाचन को ध्यानपूर्वक सुनेगे। आदर्श वाचन प्राय: इन तीन शैलियो में होता है –

(क) संवाद शैली

(ख) गद्य शैली

(ग) पद्य शैली

(क) संवाद शैली – इस शैली मे अध्यापक अपने स्वर को इस तरह साध कर वाचिक और आंगिक अभिनय के साथ पाठ का वाचन करते है कि मानो अलग २ पात्र बोल रहे हो। सवाद शैली मे अध्यापक एक तरह एकपात्रीय नाटक (मोनो ऐक्टिग) करते है। यहा अभिनय का आशय कक्षा को नाटक का स्टेज बना देने से नही है बल्कि पढाने के मूलभूत विषय के साथ भावात्मक आंशिक अभिनय से है।

(ख) गद्य शैली – इस शैली में विराम, अर्द्धविराम और पूर्णविराम आदि का ध्यान रखते हुये वाचन किया जाता है।

(ग) पद्य शैली – इस शैली मे अध्यापक आवश्यक उतार-चढाव के साथ तथा छदानुसार स्वर और लय के साथ गाकर पढ़ते है। यदि गला अच्छा न हो तो पद्य को स्वर और लय के साथ बिना गाये ही पढना ठीक रहेगा।

६. अनुकरण वाचन

जिस पाठ का अध्यापक ने आदर्श वाचन किया है, उसे उसी के अनुकरण पर छात्रो मे से किन्ही एक, दो या अधिक छात्रो से पृथक्-पृथक् वाचन कराने को अनुकरण वाचन कहते है। अनुकरण वाचन मे छात्रो द्वारा की जाने वाली त्रुटियो मे अध्यापक स्वय या दूसरे छात्रो द्वारा आवश्यक सुधार कराते है।

सवाद शैली मे वाचन पात्रो के अनुसार एकाधिक पात्रो से सवाद के रूप मे कराना चाहिये। पर ध्यान रहे कि अनुकरण वाचन सामूहिक कभी नही कराना चाहिये क्योकि सामूहिक अनुकरण वाचन मे छात्रो के वाचन की अशुद्धियो का पता नही चल पाता।

छोटी कक्षाओ मे पाठो को एक साथ बोलने का अभ्यास कराने के लिये अलग से सामूहिक वाचन कराया जा सकता है।

१०. सामान्यार्थ विवेचन

अनुकरण वाचन के बाद पाठ के पठित पद्याश का सामान्य अर्थ बताने को सामान्यार्थ विवेचन कहते है। सामान्यार्थ विवेचन मे शब्दार्थ पर विशेष जोर न दिया जाकर भावार्थ को पकडा जाता है, क्योकि भाषाज्ञान हमारा उद्देश्य नही है – हमे तो विषय-ज्ञान देना है। आवश्यक शब्दार्थ सामान्यार्थ के साथ-साथ यथास्थान बता देना चाहिये।

११. विचार-विश्लेषण

अनुकरण वाचन के पश्चात् पाठ के पठित गद्याश या सवादाश मे प्रतिपादित विचारो को सुबोध व सरल भाषा मे छात्रो को समझाना ही विचार-विश्लेषण है। यह तर्कसगत एव सोदाहरण होना चाहिये।

१२. प्रश्नोत्तर

पाठ व उसमे आये हुये सिद्धान्त-वाक्यो, परिभाषाओ एव तथ्य-वाक्यो का स्पष्ट ज्ञान व उनमे निहित भावो का बोध कराने के लिये एव पढाया हुआ पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही अथवा पूर्व-दिन पढाये गये पाठ को छात्रो ने तैयार किया या नही – इनकी जाच के लिये प्रश्न व उत्तर अध्यापक को घर से बनाकर लाना चाहिये – इनको प्रश्नोत्तर कहते है। प्रश्नोत्तर तीन प्रकार के होते है –

(क) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(ग) मूल्याकन प्रश्नोत्तर

(क) **बोधगम्य प्रश्नोत्तर** – जिस विषय का बोध छात्रो को कराना है, उसे प्रश्नोत्तर में अध्यापक द्वारा लिपिबद्ध करके लाना बोधगम्य प्रश्नोत्तर कहलाता है। इस प्रकार के प्रश्न व उत्तर की शैली से छात्र विषय को सहजता से पकड़ सकेंगे।

(ख) **वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर** – (i) इस पद्धति मे प्रश्नोत्तर द्वारा मौखिक अभ्यास कराया जाता है। इसमें निम्न चार सोपान रखने से पाठ तैयार कराने में सुविधा रहती है :–

(१) है या नहीं ?
(२) क्या है ?
(३) क्या कहते है ?
(४) किसे कहते है या क्या है ?

प्रयोग :–

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है।	१. छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है या नही ?	१. कहते है।
	२. छह द्रव्यो के समूह को क्या कहते है ? गुण, विश्व, पर्याय	२. विश्व।
	३. छह द्रव्यों के समूह को क्या कहते है ?	३. विश्व।
	४ विश्व किसे कहते है ?	४. छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है।

नोट :– किसी-किसी परिभाषा या सिद्धात-वाक्य आदि मे चारो सोपान लगाना सभव न हो तो तीन या दो सोपानो से अभ्यास कराया जाना चाहिये।

(ii) लम्बी परिभाषाओ के तैयार कराने मे वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान न लगाकर उसे निम्नानुसार कई खण्ड-वाक्यो मे विभाजित करके तैयार कराना चाहिये :–

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गृहस्थपना त्याग कर मुनिधर्म अगी-कार करके निज स्वभाव साधन द्वारा चार घाति कर्मो का नाश कर अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते है, उन्हे अरहन्त कहते हैं।	१ क्या त्याग कर अरहत बनते है ?	१. गृहस्थपना।
	२ क्या अगीकार करके अरहत बनते है ?	२ मुनिधर्म।
	३ किस साधन द्वारा अरहत बनते है ?	३ निज स्वभाव साधन द्वारा।
	४ किनका नाश करके अरहत बनते हैं ?	४. चार घाति कर्मो का।
	५ क्या प्राप्त करके अरहंत बनते है ?	५ अनत चतुष्टय।

अन्त मे परिभाषा के पाचो वाक्यो को एक साथ जमा कर परिभाषा स्पष्ट कर देनी चाहिये।

(ग) मूल्यांकन प्रश्नोत्तर :– पढाया गया पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही एव पूर्व-दिन पढाये गये पाठ को छात्रो ने तैयार किया या नही, इसकी जाच के लिये बनाये गये प्रश्नोत्तर मूल्याकन-प्रश्नोत्तर कहलाते है। ये दो प्रकार के होते है –

(i) समापन मूल्याकन

(ii) पूर्व-पाठ मूल्याकन

[i] **समापन मूल्यांकन** – पाठ समाप्त करने के पूर्व पढाया गया पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही, यह जानने के लिये किये गये प्रश्नोत्तरो को समापन मूल्याकन प्रश्नोत्तर कहते है।

[ii] **पूर्व-पाठ मूल्यांकन** – पूर्व दिन पढाया हुआ पाठ छात्रो ने तैयार किया है या नही, इस दृष्टि से किये गये प्रश्नोत्तरो को पूर्व-पाठ मूल्याकन प्रश्नोत्तर कहते है।

मूल्याकन प्रश्न पूछते समय वस्तुनिष्ठ पद्धति मे प्रयुक्त चार सोपानो को उलटा प्रयोग मे लाना चाहिये क्योकि पढाते समय

सरलता से कठिनता की ओर जाते है तो मूल्यांकन के समय कठिनता से सरलता की ओर जाते है यथा –

(४) किसे कहते है या क्या है ?

(३) क्या कहते है ?

(२) क्या है ?

(१) है या नही ?

प्रयोग :–

परिभाषा	प्रश्न
छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते है।	४. विश्व किसे कहते है ? ३. छह द्रव्यो के समूह को क्या कहते है ? २. छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है या गुण या पर्याय ? १. छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है या नही ?

ध्यान रहे उक्त प्रयोग करते समय ४ नम्बर का प्रश्न पूछने पर यदि छात्र प्रश्न का उत्तर न दे सके तभी न० ३ का प्रश्न पूछा जाना चाहिये। इसी प्रकार आगे नम्बर २ व नम्बर १ के प्रश्न भी तभी पूछे जाने चाहिये जब पूर्व प्रश्नों का उत्तर देने मे छात्र असमर्थ रहे। पूर्व-प्रश्नों का उत्तर दे देने पर आगे के प्रश्न पूछना निरर्थक है।

यहा यह ध्यान रखना आवश्यक है कि समापन के मूल्यांकन सबंधी प्रश्नों मे और पूर्व-पठित पाठ सबधी मूल्याकन सबंधी प्रश्नो मे मूलभूत अतर यह रहता है कि समापन संबंधी प्रश्न तो पढाया गया पाठ छात्रो की समझ मे आया या नही, इस लक्ष्य से किये जाते है और पूर्व-पाठ मूल्यांकन सबधी प्रश्न छात्रो ने पाठ तैयार किया या नही, इस लक्ष्य से पूछे जाते है। अतः पूर्व-पाठ मूल्याकन प्रश्नो मे छात्रो से याद करके लाये गये छद भी सुने जा सकते है। समापन सम्बन्धी प्रश्नो के उत्तर यदि छात्र न देसके तो पुस्तक मे से देखकर उत्तर देने को कहा जावे।

१३. सारांश कथन

अन्त मे पाठ्यवस्तु का सक्षेप-साराश बताना चाहिये तथा परिभाषाओ व मूल सिद्धान्तो को दुहरा देना चाहिये। यह साराश कथन कहलाता है।

१४. समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व पढाये गये पाठ मे से छात्रो से कुछ मूल्याकन प्रश्न किये जाने चाहिये जिनसे पता चल सके कि अभीष्ट वस्तु छात्रो की समझ मे आई है या नही। यदि सतोषजनक उत्तर न मिले तो उक्त विषय को अगले दिन विशेष स्पष्ट करना चाहिये। ध्यान रहे कि मूल्याकन प्रश्नोत्तर पद्धति मे वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो का उलटा प्रयोग होता है।

१५. गृहकार्य

पाठ की समाप्ति पर पाठ से सबधित आवश्यक लिखित कार्य घर से करके लाने के लिए दिया जाना चाहिये। गृहकार्य की जाच अवश्य होनी चाहिये ताकि छात्र इस ओर उदासीनता न बरते। पाठ मे आई आवश्यक परिभाषाएँ, सिद्धान्त-वाक्य, भेद-प्रभेद एव छन्द आदि याद करके लाने को भी कहा जाना चाहिए।

१६. अध्यापक कथन

अध्यापक पाठ-योजना मे समझाने के लिये जो आवश्यक कथन यथास्थान नोट करते है, उन्हे अध्यापक कथन कहते है। इनके नोट करने से समझाये जाने वाला विषय व्यवस्थित हो जाता है। इसकी आवश्यकता प्राय. सामान्यार्थ विवेचन, विचार-विश्लेषण, साराश कथन, समापन एव गृहकार्य आदि मे पडती है।

१७. आधार-परिचय

वीतराग विज्ञान पाठमालाओ मे जो पाठ प्रतिष्ठित आचार्यो एव विद्वानो द्वारा लिखे गये महान् ग्रथो के आधार पर लिखे गये है, उन पाठो को पढाते समय उनके आधारग्रथो एव ग्रथकारो का परिचय देना ही आधार-परिचय है।

अध्याय | द्वितीय

बालबोध प्रशिक्षण

बालबोध प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की बालबोध परीक्षा मे निर्धारित बालबोध पाठमालाओं के अध्यापन की पद्धति में अध्यापक बन्धुओं को प्रशिक्षित करना एवं उसमें प्रतिपादित प्रमुख तात्त्विक सिद्धान्तों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना है।

बालबोध प्रशिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य दो भागो में विभाजित किए जा सकते है –

(क) सामान्य उद्देश्य
(ख) विशेप उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – सामान्य उद्देश्य वे है जो बालबोध में पढाये जाने वाले सभी पाठों मे सामान्य रूप से रहते है। वे मुख्यतः निम्नानुसार है :–

(i) छात्रों में आत्महितकारी शास्त्रो के पढने की रुचि जाग्रत करना।

(ii) तत्त्वज्ञान और सदाचार सम्बन्धी ज्ञान कराना।

(iii) चारो अनुयोगों का समन्वित ज्ञान देना।

(iv) अपने पूर्वजो के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी देना।

(v) सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(vi) प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – विशेष उद्देश्य पढ़ाये जाने वाले पाठ से संबंधित होते है। अतः ये प्रत्येक पाठ के अलग २ होते है एवं पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किए जाते है। इन्हे यथास्थान स्पष्ट किया जावेगा।

बालबोध पाठमालाओं के पाठो का पद्य, गद्य और संवाद के रूप मे तीन प्रकार से एव अनुयोगो के रूप में चार प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है तथा आदर्श पाठ-योजनाएँ बनाते समय बालबोध पाठमालाओ के तीनो भागो का प्रतिनिधित्व होना भी आवश्यक है। इन सब बातो का ध्यान रखते हुए इस अध्याय मे निम्न पॉच पाठ-योजनाएँ दी जारही है'–

(१) द्रव्य गुण पर्याय
(२) देवदर्शन
(३) पचपरमेष्ठी
(४) सदाचार
(५) भगवान आदिनाथ

वैसे तो प्रायः सभी पाठो की योजना बनाने की विधि मे कोई विशेष अन्तर नही रहता है किन्तु विषय-विलक्षणता की दृष्टि से कुछ परिवर्तन तो हो ही जाते है। जैसे कि पद्यपाठो मे सामान्यार्थ विवेचन किया जाता है तो गद्य और सवाद पाठो में विचार-विश्लेषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वैसे तो पद्यपाठो मे भी विचारो का विश्लेषण आवश्यकतानुसार किया ही जाता है और गद्यपाठो में भी सामान्यार्थ बता दिया जाता है पर मुख्यत· और गौणता की अपेक्षा ऐसा कथन है। अत. गद्य और सवाद पाठो मे विचार-विश्लेषण शीर्षक दिया गया है और पद्यपाठो मे उसके स्थान पर सामान्यार्थ विवेचन।

आदर्श पाठ-योजना १

(द्रव्य गुण पर्याय)

स्थान – श्री महावीर दि० जैन उ० माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

कक्षा – बालबोध तृतीय खंड

प्रकरण – "द्रव्य गुण पर्याय"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – तत्त्वज्ञान संबंधी सामान्य जानकारी देना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – द्रव्य गुण पर्याय का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र छह द्रव्यों का स्वरूप बालबोध पाठमाला भाग २ में पढ़ चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर द्रव्य गुण पर्याय का दिग्ददर्शक निम्न चार्ट :–
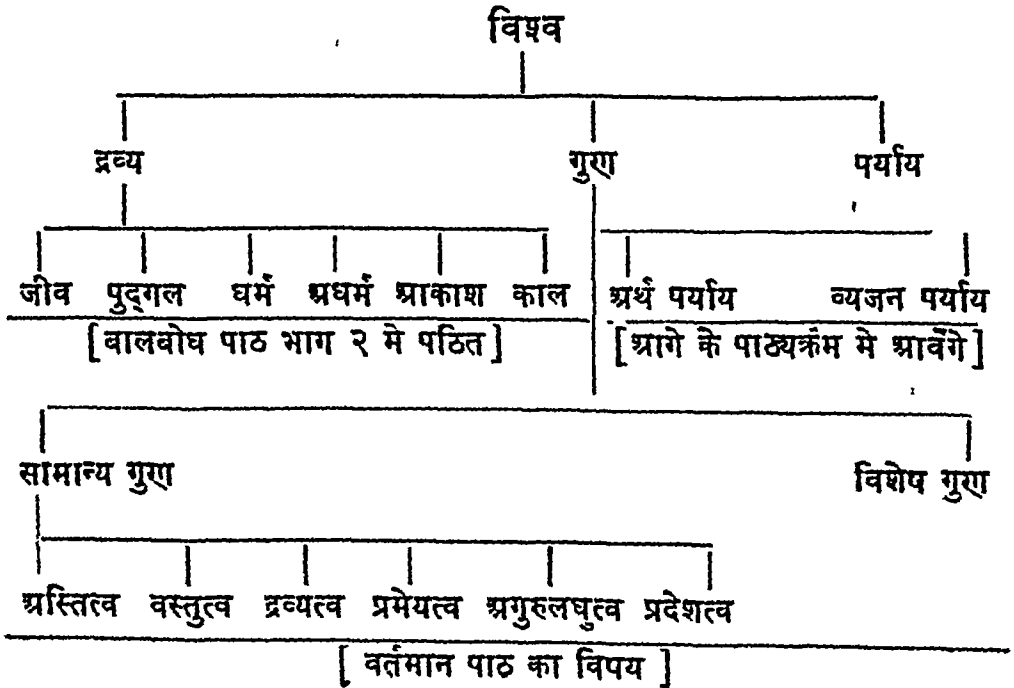
उद्देश्य कथन

आज हम द्रव्य गुण पर्याय के बारे में समझेंगे ।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो में पढाया जावेगा । प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियों में विभक्त किया जावेगा । प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होंगे :–

(क) आदर्श वाचन

(ख) अनुकरण वाचन

(ग) विचार-विश्लेषण

(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(च) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"छात्र–गुरुजी आज··················ज्ञानमय कहा जाता है ।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय संवाद पद्धति मे एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन करेंगे ।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन सवाद-विधि से ही करावेंगे । एक छात्र से छात्र वाले पाठ का एव दूसरे छात्र से अध्यापक वाले पाठ का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करावेंगे तथा किसी तीसरे छात्र द्वारा या स्वयं उसमे आवश्यक सुधार करावेंगे ।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक अनुकरण वाचन के पश्चात् प्रस्तुत अन्विति मे आये हुये विचारो, सिद्धातो और परिभाषाओ को निम्न प्रकार विश्लेषण करके समझावेंगे :–

अध्यापक कथन – देखो भाई ! हमने जो अश अभी पढा है उससे निम्न निष्कर्ष निकलते है –

(१) विश्व का कभी नाश नही होता।
(२) छह द्रव्यो के समूह को विश्व कहते है।
(३) गुणो के समूह को द्रव्य कहते है।
(४) द्रव्य – गुण और पर्याय वाला होता है।
(५) गुणो में होने वाले प्रति समय के परिवर्तन को पर्याय कहते है।
(६) जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागो मे और उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओ मे रहता है, उसको गुण कहते है।

नोट – इसके वाद अध्यापक प्रत्येक निष्कर्ष को अलग अलग स्पष्ट करेंगे।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ विश्व किसे कहते है ?	१ द्रव्यो के समूह को।
२ द्रव्य किसे कहते है ?	२ गुणो के समूह को।
३ गुण किसे कहते है ?	३ जो द्रव्य के सब भागो और सव अवस्थाओ मे रहे।
४ पर्याय किसे कहते है ?	४. गुणो के परिणमन को।
५ क्या विश्व का कभी नाश हो सकता है ?	५ नही।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नो के उत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा अध्यापक बालको को हृदयगम करावेगे।

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
गुणो के समूह को द्रव्य कहते है।	१ गुणो के समूह को द्रव्य कहते है या नही ?	१ कहते है।
	२ गुणो के समूह को द्रव्य कहते है या पर्याय ?	२. द्रव्य।
	३ गुणो के समूह को क्या कहते है ?	३ द्रव्य।
	४ द्रव्य किसे कहते है ?	४ गुणों के समूह को द्रव्य कहते है।

नोट – इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ को तैयार कराया जायगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे परिभाषाओ और सिद्धातो को सक्षेप मे सरल भाषा मे दुहरा दिया जायेगा ।

द्वितीय अन्विति

"छात्र आत्मा मे ऐसे कितने········ ······विशेष गुण हुआ ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – बालको ! प्रत्येक द्रव्य मे अनन्त गुण है । आत्मा भी एक द्रव्य है, उसमे भी अनन्त गुण है । पर ऐसा नही है कि द्रव्य अलग और गुण अलग हो, द्रव्य तो गुणमय ही है । आत्मा ज्ञानादि गुणो का पिड है, भडार नही ।

गुण दो प्रकार के होते है –

(१) सामान्य गुण

(२) विशेष गुण

अस्तित्व गुण सब द्रव्यो मे पाया जाता है, अत वह सामान्य गुण है और ज्ञान गुण आत्मा मे ही पाया जाता है, अत· वह आत्मा का विशेष गुण हुआ । इसी प्रकार रूप रस आदि पुद्गल मे ही पाये जाते है । अत वे पुद्गल के विशेष गुण हुये ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ सामान्य गुण किसे कहते है ?	१ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते हैं ।
२ विशेप गुण किसे कहते हैं ?	२ जो गुण सब द्रव्यो मे न रहकर अपने-अपने द्रव्य मे रहते है ।
३ आत्मा ज्ञानादि गुणो का पिंड है या भडार ?	३ पिण्ड ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे सामान्य गुण कहते है।	१. जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे सामान्य गुण कहते है या नही ?	१. कहते है।
	२ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे सामान्य गुण कहते है या विशेष गुण ?	२ सामान्य गुण।
	३ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है उन्हे क्या कहते है ?	३. सामान्य गुण।
	४ सामान्य गुण किसे कहते है ?	४ जो गुण सब द्रव्यो मे रहते है।

नोट :- इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ और सिद्धात-वाक्यों को तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन में परिभाषाओं और सिद्धातो को दुहरा दिया जायगा ।

समापन

पाठ का समापन करते हुये अध्यापक निम्नलिखित प्रश्न करेगे .-

(१) छह द्रव्यों के समूह को क्या कहते है ?

(२) जो गुण सब द्रव्यो में रहते है - वे कौनसे गुण है ?

(३) आत्मा ज्ञानादि गुणो का पिड है या भंडार ?

गृहकार्य

पठित पाठ मे से घर से करके लाने के लिये अध्यापक कार्य देगे ।

अध्यापक कथन - तो बालको ! तुम्हे कल निम्नलिखित परिभाषाये घर से याद करके लाना है -

विश्व, द्रव्य, गुण, पर्याय, सामान्य गुण, विशेप गुण ।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री महावीर दि० जैन उ० मा० विद्यालय, जयपुर

कक्षा – वालवोध तृतीय खड

प्रकरण – "सामान्य गुणो के भेद"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य –** पूर्ववत् ।

(ख) **विशेष उद्देश्य –** सामान्य गुणो के भेद वताना तथा अस्तित्व, वस्तुत्व और द्रव्यत्व आदि छहो सामान्य गुणो को विशेष स्पष्ट करना ।

पूर्व-ज्ञान

छात्र छह द्रव्यो का ज्ञान वालबोध पाठमाला भाग २ मे प्राप्त कर चुके है तथा द्रव्य गुण पर्याय का सामान्य स्वरूप एव गुण के सामान्य और विशेष भेद इसी पाठ के पूर्वाश मे पढ चुके है।

सहायक सामग्री – पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

वालको ! अव हम सामान्य गुणो के भेदो को समझेंगे ।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियो मे समाप्त होगा तथा इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेगे ही पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक एक सोपान और होगा ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किये जावेगे :–

(१) द्रव्य किसे कहते है ?

(२) सामान्य गुण किसे कहते है ?

(३) विशेष गुण किसे कहते है ?

प्रथम अन्विति

"छात्र – सामान्य गुण कितने होते है। ......यह बताता है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – बालको ! अभी हमने तीन सामान्य गुणो के बारे मे पढा। जिससे हम निम्न निष्कर्ष पर पहुंचे है :–

(१) प्रत्येक द्रव्य की सत्ता अनादि अनन्त है। उसे किसी ने बनाया नही है और न कोई उसे मिटा ही सकता है क्योकि प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व नाम का गुण है।

(२) कोई भी वस्तु लोक मे बेकार नही है। प्रत्येक वस्तु कुछ न कुछ स्वयं का प्रयोजन लिये हुए है क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में वस्तुत्व नाम का गुण है।

(३) प्रत्येक द्रव्य परिणमनशील है। उसमे निरन्तर अपने आप परिणमन हुआ करता है क्योकि उसमें द्रव्यत्व नाम का गुण है।

अतः अस्तित्व गुण तो वस्तु की सत्ता, वस्तुत्व गुण सार्थकता एवं द्रव्यत्व गुण परिणमनशीलता सिद्ध करता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. अस्तित्व गुण किसे कहते है ?	१. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो।
२. वस्तुत्व गुण किसे कहते है ?	२. जिस शक्ति के कारण द्रव्य मे अर्थ क्रिया हो।
३. द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं ?	३. जिस शक्ति के कारण द्रव्य की अवस्था निरतर बदलती रहती हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जिस शक्ति के कारण द्रव्य,का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते है ।	१ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते है या नही ?	१ कहते है ।
	२ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे अस्तित्व गुण कहते है या वस्तुत्व या द्रव्यत्व ?	२. अस्तित्व गुण ।
	३ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो उसे कौनसा गुण कहते है ?	३. अस्तित्व गुण ।
	४ अस्तित्व गुण किसे कहते है ?	४. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो ।

नोट – इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ और सिद्धान्त-वाक्यो को तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अन्विति के अत मे साराश कथन मे सभी परिभाषाओ को दुहरा दिया जायगा ।

द्वितीय अन्विति

"छात्र – प्रमेयत्व गुण··· ······ · ···अभाव हो जाता है ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पाठ पढा है उसमे हमे कई बातें मालूम हुई है –

(१) ज्ञान से कुछ भी छिपा नही है क्योंकि प्रत्येक पदार्थ मे प्रमेयत्व नाम का गुण है जिसके कारण प्रत्येक पदार्थ किसी न किसी ज्ञान का विषय अवश्य बनता है।

(२) कोई भी द्रव्य एक दूसरे मे मिल नही सकता। इसी प्रकार कोई गुण भी दूसरे गुण रूप नही हो सकता तथा एक द्रव्य के अनन्त गुण बिखर कर अलग-अलग भी नही हो सकते क्योकि प्रत्येक द्रव्य में अगुरुलघुत्व गुण है।

(३) प्रत्येक द्रव्य का कोई न कोई आकार रहता है। कोई द्रव्य बिना आकार का नही होता क्योकि प्रत्येक द्रव्य मे प्रदेशत्व नामक गुण है।

(४) इन सब गुणो के जानने से दीनता, अभिमान और हीन भावना निकल जाती है और हम निर्भय हो जाते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. प्रमेयत्व गुण किसे कहते है ?	१. जिस शक्ति के कारण प्रत्येक द्रव्य किसी न किसी ज्ञान का विषय हो।
२. अगुरुलघुत्व गुण किसे कहते है ?	२ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का द्रव्यपना कायम रहे अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप व एक गुण दूसरे गुण रूप नही होता और द्रव्य मे रहने वाले अनन्त गुण बिखरते नही।
३. प्रदेशत्व गुण किसे कहते है ?	३. जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो।
४. द्रव्य गुण पर्याय के जानने से क्या लाभ है ?	४ दीनता, अभिमान और भय समाप्त हो जाते है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते है।	१ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते है या नही ?	१ कहते है।
	२ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे प्रमेयत्व गुण कहते है या अगुरुलघुत्व या प्रदेशत्व ?	२. प्रदेशत्व गुण।
	३ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो उसे कौनसा गुण कहते है ?	३. प्रदेशत्व गुण।
	४ प्रदेशत्व गुण किसे कहते है ?	४ जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो।

नोट – इसी प्रकार आगत सभी परिभापाओ एव सिद्धात-वाक्यो को तैयार कराया जायगा।

समापन

पाठ का समापन करते हुए [अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे :–

(१) जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो– उसे कौनसा गुण कहते है ?

(२) जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई न कोई आकार अवश्य हो – वह कौनसा गुण है ?

गृह कार्य – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – तो वालको ! तुम्हे घर से कल छहो सामान्य गुणो की परिभापाये याद करके लाना है।

आदर्श पाठ-योजना २

(देव-दर्शन)

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, उदयपुर

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण – "देव-दर्शन"

"अति पुण्य उदय ...." स्तुति के आरम्भ के दो छन्द।

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – "देव-दर्शन" नामक स्तुति का भाव-ज्ञान छात्रों को देना एवं स्तुति याद कराना।

पूर्व-ज्ञान

देव के सामान्य स्वरूप की जानकारी बालकों को है। बालबोध पाठमाला भाग २ के "देव-स्तुति" नामक पाठ में देव के स्वरूप व स्तुति से तथा बालबोध पाठमाला भाग १ में देव-दर्शन नामक पाठ में 'देव-दर्शन' की विधि से छात्र परिचित हो चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि संभव हो तो श्री जिनेन्द्र भगवान का कैलेंडर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज 'देव-दर्शन' पाठ के माध्यम से हम दुखी क्यों है और देव-दर्शन से क्या लाभ है, यह समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन मे पढाया जावेगा। प्रत्येक दिन दो छद पढाये जावेगे। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियों मे विभाजित करके पढ़ाया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) सामान्यार्थ विवेचन
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"अति पुण्य उदय मम आया........ ..... नहि पान कर।"

आदर्श वाचन

भक्ति का वातावरण उत्पन्न करने के लिये अध्यापक पद्य विधि से आवश्यक स्वर और लय के साथ उक्त छन्द का आदर्श वाचन करेगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक छात्रो मे से किन्ही एक दो छात्रो से उक्त छन्द सस्वर वाचन करावेगे तथा उसके वाचन मे आवश्यक सुधार स्वयं या अन्य छात्रो से करावेगे।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमे अध्यापक छन्द का सामान्यार्थ निम्नानुसार बतायेगे :—

अध्यापक कथन — भक्त भगवान से कह रहा है कि हे प्रभो! आज मैने महान पुण्योदय से आपके दर्शन प्राप्त किए है। आज तक आपको जाने विना मैने अनन्त दु ख प्राप्त किए है।

मैने इस ससार को अपना जानकर और सर्वज्ञ भगवान द्वारा कहे गये, आत्मा का हित करने वाले, वीतराग धर्म को पहिचाने विना अनत दु ख प्राप्त किए है। आज तक मैंने ससार बढ़ाने वाले, सच्चे सुख का नाश करने वाले, पचेद्रिय के विषयो मे सुख मानकर सुख के खजाने स्वपर भेद-विज्ञान रूप अमृत का पान नही किया है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

छात्रों को छन्द में आये भावो का बोध कराने के लिये अध्यापक स्वय के द्वारा घर से तैयार करके लाये हुए प्रश्नोत्तर करेंगे ।

प्रश्न	उत्तर
१. उक्त छद मे जीव के दु.खी होने के कितने कारण बताये है ?	१. पाच ।
२. कौन-कौन से ?	२. (क) सच्चे देव की पहिचान न होना । (ख) जगत को अपना मानना । (ग) धर्म को नही पहिचानना । (घ) विषयो मे सुख मानना । (ङ) अपनी और पराये की पहिचान नही होना ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त वस्तु को अध्यापक वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नलिखित चार सोपानो द्वारा छात्रो को हृदयंगम करावेगे :—

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव दु खी है ।	१ सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव दु:खी है या नही ?	१ है ।
	२. सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव सुखी है या दु खी है ?	२. दु खी है ।
	३ सच्चे देव की पहिचान न होने से जीव कैसा है ?	३. दु.खी है ।
	४ जीव दु:खी क्यो है ?	४. सच्चे देव की पहिचान न होने से ।

नोट .— इस प्रकार जीव के दु खी होने के शेष चारो कारणो को वस्तुनिष्ठ प्रश्नोतरो से तैयार कराया जाना चाहिये । तदुपरान्त जीव दु खी क्यो है ? इस प्रश्न के उत्तर मे पांचो कारण स्पष्ट कर दिये जावेंगे ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे जीव के दु खी होने के पाचों कारणो को बतावेगे ।

अध्यापक कथन – तो बालको ! उक्त छन्द मे जीव के दु खी होने के निम्न पाच कारण बताये गये है :–

(१) सच्चे देव की पहिचान न होना ।

(२) जगत को अपना मानना ।

(३) धर्म (वस्तु का स्वरूप) को नही पहिचानना ।

(४) विषयो मे सुख मानना ।

(५) अपनी और पराये की पहिचान न होना ।

द्वितीय अन्विति

"तब पद मम उर मे आये ·· ······ मन दोष वादनतैं भगै ।।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमे अध्यापक छन्द का सामान्यार्थ निम्नानुसार बतायेंगे –

अध्यापक कथन – भक्त भगवान से कह रहा है कि आज आपके चरण मेरे हृदय मे वस गये है, उन्हे देखकर कुबुद्धि और मोह भाग गये है। आत्मज्ञान की कला हृदय मे जागृत हो गई है और मेरी रूचि आत्महित मे लग गई है। सत्समागम मे मेरा मन लगने लगा है। अत. मेरे मन में यह भावना जागृत हो गई है कि आपकी भक्ति ही मे रमा रहूँ ।

हे भगवान् ! यदि वचन बोलूँ तो आत्महित करने वाले प्रिय वचन ही वोलूँ। मेरा चित्त गुणीजनो के गान मे ही रहे अथवा आत्महित के निरूपक शास्त्रों के अभ्यास मे ही लगा रहे। मेरा मन दोपो के चितन और वाणी दोषो के कथन से दूर रहे ।

इस प्रकार भक्त भगवान् के समक्ष अपने भाव प्रकट कर रहा है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ देवदर्शन (भगवान की पहिचान) से कितने लाभ प्राप्त होते है ?	१ पाँच ।
२. कौन-कौन से ?	२. (क) मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव । (ख) आत्मज्ञान की प्राप्ति । (ग) आत्महित मे रुचि उत्पन्न होना । (घ) भगवान के प्रति बहुमान और सत्सग के प्रति प्रेम । (ङ) विकथाओ से हटकर मन का वीतरागी शास्त्रो मे लगना ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

सिद्धांत-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव हो जाता है ।	१. भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन और मिथ्याज्ञान का अभाव होता है या नही ?	१ होता है ।
	२ भगवान की पहिचान से मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान का अभाव होता है या सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञानका ?	२ मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान का ।
	३ भगवान की पहिचान से किसका अभाव होता है ?	३ मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान का ।
	४ मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान का अभाव किससे होता है ?	४. भगवान की पहिचान से ।

नोट :— इसी प्रकार पाँचो सिद्धात-वाक्यो को तैयार कराना चाहिये ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे देव-दर्शन (भगवान की पहिचान) के पाचों लाभो को दुहरा दिया जायगा।

समापन

पठित वस्तु को छात्रो ने कितना हृदयगम किया है यह जानने के लिये अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेगे –

(१) यह जीव दु:खी क्यो है ?

(२) देव-दर्शन से (देव की पहिचान से) क्या-क्या लाभ है ?

गृहकार्य

पठित पाठ मे से घर से करके लाने के लिए अध्यापक निम्नलिखित कार्य देगे।

अध्यापक कथन – बालको ! आज का अपना पाठ समाप्त हो रहा है। तुम्हे आज पढाये गये स्तुति के छद व बोधगम्य प्रश्नो के उत्तर घर से याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, उदयपुर

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण – 'देव-दर्शन'

"अति पुण्य उदय ···· · ··· ···" स्तुति के अन्तिम के दो छन्द।

उद्देश्य – पूर्ववत्।

पूर्व-ज्ञान – पूर्ववत्।

सहायक सामग्री – पूर्ववत्।

उद्देश्य कथन

आज हम देव-दर्शन नामक पाठ के माध्यम से भगवान का सच्चा भक्त कैसा बनना चाहता है और भक्त से भगवान बनने का मार्ग क्या है – यह समझेगे।

प्रस्तुतीकरण

द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से इसमे प्रथम दिन के प्रस्तुतीकरण वाले सम्पूर्ण सोपान तो होगे ही, साथ ही सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किये जावेगे।

(१) देव-दर्शन स्तुति का प्रथम छंद सुनाइये।

(२) देव-दर्शन से होने वाले लाभ बताइये :-

प्रथम अन्विति

"कब समता ... ...रिपुको निर्जरूँ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – भक्त कह रहा है कि मेरे मन मे यह भाव जग रहे है कि – वह दिन कब आयगा जब मै हृदय मे समता भाव धारण करके, बारह भावनाओ का चितवन करके तथा ममता रूपी भूत को भगाकर वन में जाकर मुनि दीक्षा धारण करूँगा। वह दिन कब आयगा जब मै दिगम्बर वेष धारण करके अट्ठाईस मूलगुण धारण करूँगा, बाईस परीषहो पर विजय प्राप्त करूँगा और दश धर्मो को धारण करूँगा, सुख देने वाले बारह प्रकार के तप तपूँगा और आश्रव और बध भावो को त्याग नये कर्मो को रोक कर सचित कर्मो की निर्जरा कर दूंगा।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ ज्ञानी श्रावक क्या बनना चाहता है ?	१. ममता रहित व समता सहित बनवासी मुनि।
२ वह कैसा मुनि बनना चाहता है ?	२ अट्ठाईस मूलगुण धारण करने वाला नग्न दिगबर भावलिंगी मुनि।
३ मुनि बनकर वह क्या करना चाहता है ?	३ आश्रव-बध का नाश तथा सवर-निर्जरा की प्राप्ति।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य वाक्य	प्रश्न	उत्तर
ज्ञानी भक्त ममता रहित और समता सहित वनवासी मुनि बनना चाहता है।	१ ज्ञानी श्रावक ममता रहित व ममता सहित वनवासी मुनि बनना चाहता है या नहीं ?	१ बनना चाहता है।
	२ ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि कौन बनना चाहता है – ज्ञानी श्रावक या अज्ञानी श्रावक ?	२ ज्ञानी श्रावक।
	३ ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि कौन बनना चाहता है ?	३ ज्ञानी श्रावक।
	४ ज्ञानी श्रावक क्या बनना चाहता है ?	४ ममता रहित व समता सहित वनवासी मुनि।

नोट – इसी प्रकार अन्य प्रश्नोत्तरो को भी तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

इसमे ज्ञानी भक्त क्या चाहता है यह सब छन्द के आधार पर सक्षेप मे निम्न प्रकार से बता दिया जायगा –

अध्यापक कथन – ज्ञानी भक्त चाहता है कि वह दिन कब प्राप्त करू जब नग्न दिगम्बर साधु बनकर अट्ठाईस मूल गुण धारण करूँ, बाईस परीषह सहू, दस धर्मो को धारण करूँ, बारह प्रकार के तप करके आश्रव और बध को भेद दूँ, नवीन आते हुये कर्मो को रोक दूँ एव पुराने कर्मो की निर्जरा करदूँ।

द्वितीय अन्विति

"कब धन्य सुअवसर पाऊ · · · · भवसागर तरू।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन - पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – ज्ञानी भक्त कह रहा है कि वह धन्य घडी कब होगी जब मै अपने में ही रम जाऊँगा । कर्त्ता-कर्म के भेद का भी अभाव करता हुआ राग-द्वेष दूर करूँगा और आत्मा को पवित्र बना लूँगा – जिससे आत्मा मे क्षायिक चारित्र प्रकट करके अनत दर्शन, अनत ज्ञान, अनत सुख और अनत वीर्य से युक्त हो जाऊँगा व आनदकंद जिनेन्द्र पद प्राप्त कर लूगा । मेरा वह दिन कब आवेगा जब इस दुःख रूपी भव-सागर को पार कर अमर पद प्राप्त करूँगा ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ ज्ञानी भक्त क्या चाहता है ?	१ (क) आत्मा मे रमण करना । (ख) रागादि दूर करना । (ग) अनत चतुष्टय प्राप्त करना। (घ) जिनेन्द्र भगवान् बनना ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

बोधगम्य प्रश्नो के चारो उत्तरो को प्रथम दिन की प्रथम अन्विति के प्रश्नोत्तरो के समान वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये ।

सारांश कथन

सारांश कथन मे उपरोक्त प्रश्नोत्तरो को दुहरा दिया जायगा ।

समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न करेगे :-

(१) ज्ञानी भक्त कैसा मुनि बनना चाहता हे ?

(२) ज्ञानी भक्त का अतिम लक्ष्य क्या है ?

गृहकार्य

बालको ! तुम्हे सम्पूर्ण स्तुति के छंद व बोधगम्य प्रश्नो के उत्तर घर से याद करके लाना है।

आदर्श पाठ-योजना ३

(पंच परमेष्ठी)

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, चौक, भोपाल

कक्षा – बालबोध तृतीय खड

प्रकरण – "पच परमेष्ठी"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – तत्त्वज्ञान सबधी सामान्य जानकारी देना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – पच परमेष्ठी का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र पच परमेष्ठी का नाममात्र ज्ञान बालबोध पाठमाला भाग १ के प्रथम पाठ से प्राप्त कर चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर पच परमेष्ठी का निम्न चार्ट –
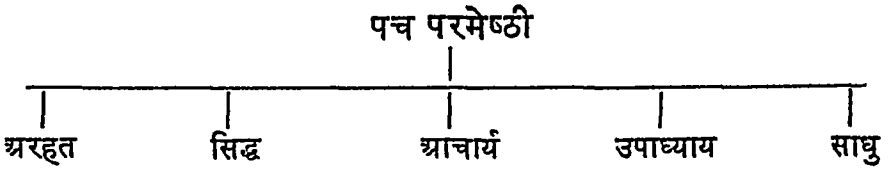
उद्देश्य कथन

आज हम पच परमेष्ठी के वारे मे विस्तार से समझेगे।

प्रस्तुतीकरण

यह पाठ गद्य पाठ के रूप मे प्रस्तुत किया जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियो मे विभक्त किया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) सारांश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"णमो अरिहंताण............ ....अरहंत के गुण हैं।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय गद्य विधि से अर्द्धविराम, पूर्णविराम का ध्यान रखते हुए स्पष्ट आदर्श वाचन करेगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक एक, दो या अधिक छात्रों से अनुकरण वाचन करावेगे तथा स्वयं या अन्य छात्रों द्वारा आवश्यक सुधार करावेगे।

विचार-विश्लेषण

प्रस्तुत अन्विति में आये हुए विचारों, सिद्धान्तों और परिभाषाओ का अध्यापक निम्न प्रकार विश्लेषण करेगे :-

अध्यापक कथन – बालको ! अभी हमने णमोकार महामंत्र पढा। उसमें पूर्ण वीतरागी अरहतो, सिद्धो और वीतराग मार्ग पर चलने वाले आचार्य, उपाध्याय और मुनिराजो को नमस्कार किया गया है।

उक्त पाचो को ही पंच परमेष्ठी कहते है क्योकि वे परमपद मे स्थित है। अरहत भगवान पूर्ण ज्ञान, दर्शन, सुख और वीर्य के धारी होते हैं। वैसे शास्त्रो मे उनके ४६ गुण कहे गये है पर वस्तुतः उनके उक्त ४ गुण है। बाकी कुछ तो शरीर से, कुछ पुण्य-सामग्री से सम्बन्धित हैं।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. नमस्कार मत्र मे किनको नमस्कार किया गया है ?	१ पच परमेष्ठी को ।
२ अरहत परमेष्ठी किन्हे कहते है ?	२ (क) जो गृहस्थापना त्यागकर (ख) मुनिधर्म अगीकार करके (ग) निज स्वभाव साधन द्वारा (घ) चार घाति कर्मों का नाश करके (ङ) अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते है ।
३ अरहन्त के कितने गुण होते है ?	३. शास्त्रो मे अरहन्त के ४६ गुणो का वर्णन है। उनमे अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य ये ४ गुण तो आत्माश्रित होने से वास्तविक उनके है। शेष ४२ व्यवहार से उनके कहे जाते हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

लम्बी परिभाषाओ के तैयार कराने मे वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान न लगाकर उसे निम्नलिखितानुसार कई खण्ड-वाक्यो मे विभाजित करके तैयार कराना चाहिए –

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो गृहस्थपना त्यागकर मुनिधर्म अगीकार करके निजस्वभाव साधन द्वारा चार घाति कर्मो का नाश करके अनन्त चतुष्टय प्राप्त करते हैं, उन्हे अरहत कहते हे।	(क) क्या त्यागकर अरहत बनते हैं ?	गृहस्थपना ।
	(ख) क्या अगीकार करके अरहत बनते है ?	मुनिधर्म ।
	(ग) किस साधन द्वारा अरहत बनते हैं ?	निज स्वभाव साधन द्वारा ।
	(घ) किनका नाश करके अरहत बनते है ?	चार घाति कर्मो का ।
	(ङ) क्या प्राप्त करके अरहत बनते हैं ?	अनन्त चतुष्टय ।

नोट – अन्त मे परिभापा के पाँचो वाक्यो को एक साथ जमा कर परिभापा स्पष्ट कर देनी चाहिये ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे पठित अश का साराश बताना चाहिये तथा अरहत की परिभापा को दुहरा देना चाहिये ।

द्वितीय अन्विति

"जो गृहस्थ अवस्था का...... ....अव्याबाध"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – बालको ! हमने अभी सिद्ध की परिभाषा पढी तथा उनके आठ गुणो को जाना । सिद्ध की परिभाषा मे बहुत-सी बाते तो अरहत की परिभाषा के समान ही है । जैसे गृहस्थपना त्यागकर आदि । अरहत होने तक तो वही स्थिति है । इतना अन्तर है सिद्धो ने चार अघाति कर्मो का भी अभाव कर दिया है और लोक के अग्र भाग में विदेह बिराजमान हो गये है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते है ? या सिद्ध कैसे बनते है ?	१ (क) जो गृहस्थपना त्याग कर (ख) मुनिधर्म साधन द्वारा (ग) आठो घाति व अघाति कर्मो का नाश करके (घ) समस्त द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित होकर (ड) आत्मिक गुण प्रकट करके (च) लोक के अग्रभाग मे किंचित न्यून पुरुषाकार विराजमान होते है, उन्हे सिद्ध कहते है ।
२. सिद्धो के कितने गुण होते है ?	२ आठ गुण होते है ।
३. अरहत और सिद्धो मे क्या अन्तर है ?	३ (क) अरहत शरीर सहित होते है। सिद्ध शरीर रहित होते हैं । (ख) अरहत भगवान् ४ घाति कर्म रहित होते हैं । सिद्ध भगवान् आठो कर्मो से रहित होते हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

सिद्धो की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से प्रथम अन्विति मे आगत अरहत की परिभाषा के समान तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन पूर्ववत्

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेगे :-

(१) कितने कर्मो का अभाव करके सिद्ध बनते है ?

(२) सिद्ध भगवान के कितने गुण होते है ?

(३) अनन्त चतुष्टय किसे कहते है ?

गृहकार्य

अध्यापक घर से करके लाने के लिये निम्न कार्य देगे -

अध्यापक कथन – तो बालको ! तुम्हे कल घर से अरहत और सिद्ध की परिभाषा व उनके गुण याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, चौक, भोपाल

कक्षा – बालबोध तृतीय खण्ड

प्रकरण–"आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – पूर्ववत्।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

बालबोध पाठमाला प्रथम भाग के आधार पर पच परमेष्ठी का सामान्य ज्ञान एव कल के पाठ के आधार पर अरहत और सिद्ध परमेष्ठी का विशेष ज्ञान छात्रो को है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर निम्न चार्ट -
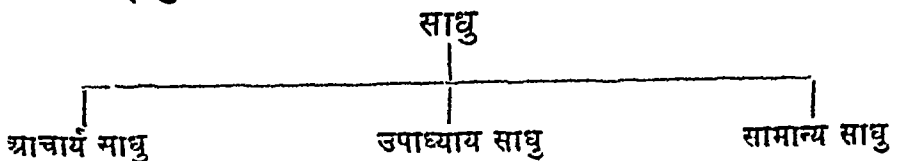
उद्देश्य कथन

कल हम अरहंत और सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप तो अच्छी तरह समझ चुके है। आज आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी का स्वरूप समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियों मे समाप्त होगा। इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेगे ही पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नाम का एक सोपान और होगा।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्याकन प्रश्न किए जावेगे :–

(१) अरहंत किसे कहते है ?
(२) सिद्ध कैसे बनते है ?

प्रथम अन्विति

"आचार्य, उपाध्याय और साधु ...... आचार्य कहलाते है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।
अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।
विचार-विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – हमने अभी जो पढा है उससे पता चलता है कि आचार्य, उपाध्याय और साधु, साधुओ के ही भेद है। सामान्य से साधु उन्हे कहते है – जो विरागी होकर सम्पूर्ण परिग्रह छोड़कर शुद्धोपयोगरूप मुनिधर्म अगीकार करते है और आत्मा के अनुभव मे लगे रहते है। यदि कभी शुभराग भी आवे तो उसे छोड़ने योग्य ही मानते है और अशुभ भाव तो उन्हे होते ही नही है। ऐसे नग्न दिगम्बर मुनिराज ही सच्चे साधु है।

उनमें जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनिसंघ के नेता हुये है, उन्हे आचार्य कहते है। वे भी निरन्तर आत्मलीन तो रहते ही है पर जब शुभ राग होता है तो धर्मोपदेश देते है, योग्य विरागी व्यक्तियो को दीक्षा देते है एवं अपने दोष प्रकट करने वालो को प्रायश्चित्त देते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आचार्य, उपाध्याय और साधुओ का सामान्य स्वरूप बताइये । अथवा सामान्य साधु का स्वरूप बताइये ।	१ जो विरागी होकर समस्त परिग्रह त्यागकर आत्मानुभव किया करते है और जिन्हे अशुभ भाव तो होता ही नही और जो शुभ भाव होता है उसे भी हेय मानते है, वेही सच्चे साधु है ।
२ आचार्य परमेष्ठी किन्हे कहते है ?	२ जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनि सघ मे नेता पद को प्राप्त हुये है, मुख्यतया आत्मलीन रहते है पर कभी-कभी धर्मोपदेश देते है, दीक्षा देते है, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनिसघ मे नेतापद को प्राप्त हुये है, मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं पर कभी-कभी धर्मोपदेश देते है, दीक्षा देते है, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते है–उन्हे आचार्य कहते ह ।	१ जो रत्नत्रय की अधिकता से मुनि सघ मे नेतापद को प्राप्त हुये है, उन्हे क्या कहते है ?	१ आचार्य परमेष्ठी
	२ जो मुख्यतया आत्मलीन रहते हैं पर कभी-कभी धर्मोपदेश देते हैं, दीक्षा देते है, प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते हैं, उन्हे क्या कहते हैं ?	२ आचार्य परमेष्ठी

नोट – इसी प्रकार आगत सभी प्रत्येक लवी परिभापा को कई हिस्सो मे विभाजित करके वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासभव विधियो का प्रयोग करके तैयार कराना चाहिये ।

सारांश कथन – पूर्ववत् ।

द्वितीय अन्विति

"जो बहुत जैन शास्त्रों ....अतः वे पूज्य है।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन - पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण - पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन - अभी हमने उपाध्याय और साधु परमेष्ठी के बारे में पढा । ध्यान रहे जो सामान्य साधु के संबंध मे पढ़ चुके थे, वे सब गुण तो आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी मे पाये ही जाते है । उनकी अपेक्षा ये विशेषताएँ और रहती है ।

उपाध्याय परमेष्ठी विशेष विद्वान होते है, अतः उन्हे आचार्य संघ मे अध्यापन का कार्य सौपते है । वे आत्मा मे तो लीन रहते ही है पर शुभ भाव के काल में शास्त्रों के अध्ययन और अध्यापन का कार्य करते है ।

आचार्य, उपाध्याय के अलावा जितने भी २८ मूलगुण धारी सम्पूर्ण अतरंग-बहिरंग परिग्रह से मुक्त, सदा आत्मध्यान में लीन रहने वाले, सासारिक झंझटों से दूर रहने वाले साधु ही साधु परमेष्ठी है ।

पांचों परमेष्ठी वीतराग विज्ञानमय होते है । अरहंत व सिद्ध तो पूर्ण वीतरागी और सर्वज्ञ होते है और आचार्य, उपाध्याय तथा साधु अल्प-वीतरागी एव आत्मज्ञानी होते है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ उपाध्याय परमेष्ठी किन्हे कहते है ?	१ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते है, उन्हे उपाध्याय परमेष्ठी कहते है ।
२ साधु की परिभाषा बताइये ।	२. आचार्य एव उपाध्याय को छोडकर जो मुनि २८ मूलगुणो का अखडित पालन करते है, समस्त अतरग एव बहिरग परिग्रह से रहित होते है तथा सदा ज्ञान-ध्यान मे लवलीन रहते है, उन्हे साधु परमेष्ठी कहते है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते है, उन्हे उपाध्याय परमेष्ठी कहते है।	१ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते है, उन्हे उपाध्याय कहते है या नही ?	१ कहते है।
	२ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते है, उन्हे उपाध्याय कहते है या शिक्षक या आचार्य ?	२. उपाध्याय।
	३ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते है, उन्हे क्या कहते है ?	३ उपाध्याय।
	४. उपाध्याय किन्हे कहते है ?	४ जो साधु बहुत जैन शास्त्रो के ज्ञाता होने से आचार्य द्वारा सघ मे पठन-पाठन के लिये नियुक्त होते है।

नोट – यदि उक्त परिभाषा लम्बी प्रतीत हो तो कई हिस्सो मे विभाजित करके वस्तुनिष्ठ पद्धति की यथासभव विधियो का प्रयोग करके तैयार कराना चाहिये।

सारांश कथन

अन्विति के अत मे साराश कथन मे परिभाषाओ और सिद्धातो को सक्षेप मे सरल भाषा मे दुहरा दिया जायेगा।

समापन

पाठ समाप्त करने के पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेंगे :–

(१) मुनि सघ मे अध्यापन का कार्य कौन करते है ?

(२) मुनि सघ मे प्रायश्चित विधि से शुद्ध कौन करते है ?

गृहकार्य पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – तो वालको ! तुम्हे घर से कल पाचो परमेष्ठियों का स्वरूप याद करके लाना है।

आदर्श पाठ-योजना ४

(सदाचार)

स्थान– श्री महावीर दि० जैन उ० मा० बालिका विद्यालय, जयपुर

कक्षा – बालबोध द्वितीय खण्ड

प्रकरण – "आंतरिक व बाह्य सदाचार"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – सदाचार संबधी ज्ञान कराना तथा सदाचारयुक्त जीवन बिताने की प्रेरणा देना।

(ख) विशेष उद्देश्य – (१) क्रोध, मान, माया, लोभ और हठ छोड़ने की ओर प्रेरित करना व (२) रात्रि भोजन त्याग करने की प्रेरणा देना तथा (३) सभा-सचालन की पद्धति से परिचित कराना।

पूर्व-ज्ञान

बालबोध पाठमाला भाग २ के 'कषाय' नामक पाठ मे कषायों का सामान्य स्वरूप, वे कैसे उत्पन्न होती है और उनका अभाव किस प्रकार किया जा सकता है – इतना ज्ञान छात्र प्राप्त कर चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेटफलक पर लिखा हुआ निम्नानुसार चार्ट :–
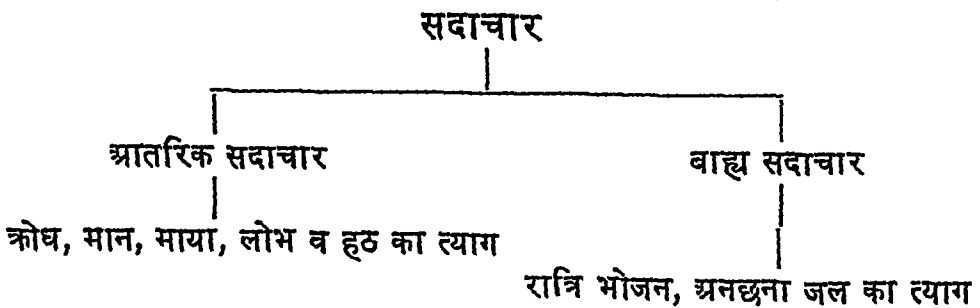
उद्देश्य कथन

बालको ! आज हम एक क्रोधी व हठी बालक की कहानी पढेगे, जिसमे यह देखेगे कि क्रोधी और हठी बालको की क्या दशा होती है।

प्रस्तुतीकरण

यह पाठ सवाद पाठ के अन्तर्गत बाल-सभा के रूप मे प्रस्तुत किया जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन के पाठ को दो-दो अन्वितियो मे विभक्त किया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे '–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषरण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"कक्षा चार के वालको · · · ग्रहण करता हूँ।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वयं सवाद-विधि से उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन करावेगे। एक छात्र अध्यक्ष सबधी पाठ का वाचन करेगा। दूसरा छात्र शान्तिलाल का पाठ पढेगा। अध्यापक स्वय या अन्य छात्र द्वारा उनमे आवश्यक सुधार करावेगे।

विचार-विश्लेषरण

पठित पाठ मे कहानी के माध्यम से आये विचारो का विश्लेषरण अध्यापक करेगे।

अध्यापक कथन – हठी वालक की कहानी से हमे यह यह शिक्षा मिलती है कि जो बालक हठी, क्रोधी, मानी और लोभी होते है उन्हे सदा दु.ख उठाना पडता है तथा भाई-वहनो का आपस में जरा-जरा सी वात पर झगडा पड़ना भी अच्छी बात नही है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ हठी वालक मे कौन-कौन से दुर्गुण थे ?	१ हठी वालक क्रोधी, मानी और लोभी था। वह वात-वात पर भाई-वहनो से लड पडता था तथा माता-पिता की आज्ञा नही मानता था।
२. इन दुर्गुणो का उसे क्या फल मिला ?	२ लड्डू भी नही मिला और विच्छू ने भी काट खाया।
३. इस कहानी से हमे क्या शिक्षा मिलती है ?	३. हमे क्रोध, मान, लोभ और हठ नही करना चाहिये। आपस मे लडना-झगडना भी नही चाहिये तथा माता-पिता व गुरुजनो की आज्ञा माननी चाहिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

यहाँ बोधगम्य प्रश्नोत्तरो को तैयार कराने के लिए वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपान लगाना सभव नही। अत' निम्नानुसार तथ्य-वाक्य को कई वाक्य-खंडो में विभाजित करके पाठ तैयार कराया जाना चाहिये :-

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
हठी वालक क्रोधी, मानी और लोभी था। वह वात-वात पर भाई-वहनो से लड पडता था तथा माता-पिता की आज्ञा नही मानता था।	हठी बालक मे कौन-कौन से दुर्गुण थे ?	१. वह क्रोधी, मानी, लोभी और हठी था। २ वात-वात पर भाई-वहनो से लड पडता था। ३ माता-पिता की आज्ञा नही मानता था।

नोट :— इसी प्रकार सभी वोधगम्य प्रश्नो को वस्तुनिष्ठ पद्धति द्वारा यथासभव विधि से तैयार कराया जाना चाहिये।

साराश कथन

साराश कथन मे हठी बालक के दुर्गुणो से होने वाली हानि बताकर छात्रो को दुर्गुणो के छोडने की प्रेरणा दी जायगी।

अध्यापक कथन – वालको ! जो बालक व्यर्थ ही बात-बात मे अपने भाई-वहनो से लड पडते है, वहुत क्रोध करते है, घमडी होने के कारण माता-पिता की वात भी नही मानते है, हठ करते है–उनको जीवन मे वहुत दु ख उठाने पडते है। अत हमे उक्त दुर्गुण छोडकर अच्छे बालक वनना चाहिये।

द्वितीय अन्विति

"अध्यक्ष-(खड़े होकर)······· · ······ग्रहण करती हूँ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा अनुकरण वाचन करावेगे। एक छात्र अध्यक्ष सबधी पाठ का व दूसरा छात्र निर्मला बहिन का पाठ पढेगा। अध्यापक स्वय या अन्य छात्र द्वारा उनमे आवश्यक सुधार करावेगे।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – बालको ! अभी तुमने सुना कि रात्रि मे भोजन करने से वहुत हानिया होती है। सूर्य-प्रकाश के अभाव मे कीडे-मकोडो की अधिकता होने से कीडे-मकोडो की हिंसा तो अधिक होती ही है, साथ मे कभी हमारा जीवन भी सकट मे पड सकता है। रात्रि मे भोजन करने वालो को अनेक वीमारिया हो जाती है। एक वात और है कि रात्रि-भोजन मे राग की अधिकता होने से पाप वध भी विशेप होता है। अत· हमे रात्रि मे भोजन कभी भी नही करना चाहिये।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. रात मे भोजन करने वाले बेहोश क्यों हो गये ?	१. साग मे साप गिर गया था और अधेरा होने से दिखाई नही दिया ।
२. रात्रि भोजन से क्या हानिया है ?	२ (क) अनेक बीमारिया तो हो ही जाती है, कभी जान की भी आ पड सकती है । (ख) राग की अधिकता होने से पाप वध भी अधिक होता है ।
३ इस कहानी से हमे क्या शिक्षा मिलती है ?	३ रात मे भोजन कभी नही करना चाहिये ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्य प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा या यथासभव अन्य विधि से तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

बरात वाली घटना का हवाला देकर अध्यापक रात्रि भोजन छोड़ने की प्रेरणा देगे ।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे :—

(१) हठी बालक की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

(२) रात्रि भोजन से क्या हानियां है ?

गृहकार्य

अध्यापक पठित अश मे से घर से करके लाने के लिये कार्य देगे ।

अध्यापक कथन – तो वालको ! तुम्हे कल घर से हठी वालक की कहानी अपने शब्दो मे याद करके लानी है तथा निर्मला बहिन ने अपने भाषण मे जो वात कही उसे भी याद करके लानी है ।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री महावीर दि० जैन उ०मा० बालिका विद्यालय, जयपुर

कक्षा – बालबोध द्वितीय खण्ड

प्रकरण – "पानी छानकर पीना"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – पूर्ववत् ।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – (१) पानी छान कर पीने की प्रेरणा देना व (२) सभा मे उठने-बैठने एव बोलने की पद्धति से परिचित कराना ।

पूर्व-ज्ञान कुछ नही ।

सहायक सामग्री – पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

आज हमे पानी छानकर ही काम मे क्यो लेना चाहिये तथा सभा मे कैसे बैठना, उठना और बोलना चाहिये इसकी चर्चा करेगे ।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ दो अन्वितियो मे समाप्त होगा। इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो रहेगे ही । पर द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से सबसे पहिले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नाम का एक सोपान और होगा ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

प्रथम दिन का पढा हुआ पाठ छात्रो ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्याकन प्रश्न किए जावेगे –

(१) हठी बालक की कहानी सुनाइये ।

(२) निर्मला बहिन द्वारा वर्णित बरात का वर्णन करो ।

(३) रात्रि-भोजन से क्या हानियाँ है ?

प्रथम अन्विति

"एक छात्र........ ....मे भी बाधक है।"

आदर्श वाचन - पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन

अध्यापक तीन छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करावेगे। एक छात्र अध्यक्ष का, एक छात्र - एक छात्र का व एक छात्र निर्मला का पाठ पढेगे। अध्यापक स्वय या अन्य छात्रों द्वारा उसमें सुधार करावेगे।

विचार-विश्लेषण- पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – बालको ! हमने अभी पढ़ा कि अध्यक्ष की बिना आज्ञा लिए एक छात्र बोलने लगा तो अध्यक्ष ने उसे डॉट दिया। इससे मालूम पड़ता है कि सभा मे बिना अध्यक्ष की आज्ञा के बीच मे नही बोलना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि रात्रि भोजन से बाहरी हानि के अलावा रात्रि भोजन में गृद्धता अधिक होने से राग अधिक होता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सभा मे कैसे बोलना चाहिये ?	१. अध्यक्ष की आज्ञा लेकर।
२ रात्रि भोजन से क्या आतरिक हानि है ?	२ रात्रि भोजन मे गृद्धता अधिक होने से राग की तीव्रता रहती है। अत आत्मसाधना मे बाधा पहुचती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्यों प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासंभव सोपानों से तैयार कराया जायगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – हमने आज दो वाते सीखी –

(१) सभा मे बिना अध्यक्ष की आज्ञा के नही बोलना चाहिये।

(२) रात्रि भोजन मे राग की गृद्धता होने से पाप वध विशेष होता है। अतः रात्रि मे भोजन नही करना चाहिये।

द्वितीय अन्विति

"अध्यक्ष (खडे होकर) .... घोषणा करता हूँ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – अभी हमे अध्यक्ष महोदय के भाषण से एक बात का पता चला कि बिना छने पानी मे असख्यात जीव होते है। खुर्दवीन से देखने पर वे साफ दिखाई देते है। अत· हम सबको बिना छना हुआ पानी कभी भी प्रयोग मे नही लाना चाहिये।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ विना छना पानी क्यो काम मे नही लेना चाहिये ?	१ विना छने पानी मे असख्यात त्रस जीव रहते है। अत हमे विना छना पानी नही पीना चाहिये।
२ यह कैसे जाना कि उसमे जीव रहते है ?	२ शास्त्रो मे लिखा है और खुर्दबीन से देखने पर साफ दिखाई देते है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

उक्त बोधगम्य प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासभव सोपानो से तैयार कराया जायगा।

सारांश कथन

अनछने पानी मे असख्यात जीव होते है – अत छना पानी पीने के लिये अध्यापक को साराश कथन मे प्रेरणा देनी चाहिये।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेंगे –

(१) बिना छना पानी क्यो नही पीना चाहिये ?

(२) सभा में कैसे वोलना चाहिये ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – तो वालको! तुम्हे घर से यह याद करके लाना है कि सभा का सचालन कैसे करना चाहिये तथा विना छना पानी पीने से क्या हानि है ?

आदर्श पाठ-योजना ५

(भगवान आदिनाथ)

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, विदिशा (म०प्र०)

कक्षा – वालबोध प्रथम खड

प्रकरण – "भगवान आदिनाथ"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – अपने पूर्वजो के सबध मे सामान्य जानकारी देना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – भगवान आदिनाथ का परिचय देना।

पूर्व-ज्ञान

वालबोध पाठमाला भाग १ के तृतीय पाठ से चौबीस तीर्थकरो के नामो का ज्ञान छात्रों को है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, लपेट फलक पर निम्नानुसार बना हुआ चार्ट :–

उद्देश्य कथन

आज हम भगवान आदिनाथ के संबंध मे चर्चा करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों में पढाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ एक-एक अन्विति में ही पढ़ाया जायगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) विचार-विश्लेषण
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

"बेटी – माँ, चलो न घर........................ उत्पन्न हुई।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय सवाद पद्धति मे एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह-अवरोह के साथ आवश्यक स्वर परिवर्तन करते हुये आदर्श वाचन करेगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा सवाद विधि से अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र से माँ वाले और दूसरे छात्र से बेटी वाले पाठ का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करावेंगे तथा किसी तीसरे छात्र द्वारा या स्वय उसमे आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक पठित अश मे आए हुये विचारो का निम्न प्रकार विश्लेषण स्पष्ट रूप से करेगे तथा आगत कथाश को भी सीधी भाषा में स्पष्ट कर देगे –

अध्यापक कथन – अभी हमने – भक्तामर स्तोत्र मे जिन आदिनाथ भगवान की स्तुति की गई है – उनके बारे मे पढा। वे वीतराग और सर्वज्ञ भगवान थे। पर वे जन्म से भगवान नही थे। जन्म तो अयोध्या के राजा नाभिराय की रानी मरुदेवी के गर्भ से बालक ऋषभ का हुआ था। राजकुमार ऋषभ की दो शादियाँ हुई। पहली पत्नी का नाम नदा और दूसरी का नाम सुनन्दा था। भरत और बाहुबली उनके ही पुत्र थे।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. भगवान आदिनाथ की स्तुति कौनसे स्तोत्र मे की गई है ?	१. भक्तामर स्तोत्र मे ।
२. क्या वे जन्म से ही वीतरागी और सर्वज्ञ थे ?	२. नही, वीतरागता और सर्वज्ञता तो मुनि होने के बाद पुरुषार्थ से प्राप्त की थी ।
३. राजकुमार ऋषभ के माता-पिता का क्या नाम था ?	३. मरुदेवी और नाभिराय ।
४. उनकी रानियो के क्या नाम थे ?	४. नदा और सुनन्दा ।
५. नदा से क्या सन्तान थी ?	५ भरत आदि सौ पुत्र एव ब्राह्मी पुत्री
६. सुनदा से क्या सतान थी ?	६. बाहुबली पुत्र और सुन्दरी पुत्री ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा बालकों को तैयार करावेंगे ।

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है।	१. भगवान आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है या नही ?	१. की गई है ।
	२. आदिनाथ की स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है या कल्याण मदिर स्तोत्र मे ?	२. भक्तामर स्तोत्र मे ।
	३. आदिनाथ की स्तुति किस स्तोत्र मे की गई है ?	३. भक्तामर स्तोत्र मे ।
	४ भक्तामर मे क्या है ?	४ भगवान आदिनाथ की स्तुति ।

नोट: – इसी प्रकार सभी प्रश्नोत्तरो को तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे पठित पाठ का साराश दुहरा दिया जायगा।

अध्यापक कथन – तो आज हमने यह जान लिया कि अयोध्या के राजा नाभिराय की रानी मरुदेवी के उदर से बालक ऋषभदेव का जन्म हुआ था।

राजा ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थी नदा और सुनन्दा। नन्दा से भरतादि सौ पुत्र व ब्राह्मी पुत्री तथा सुनन्दा से बाहुबली पुत्र एव सुन्दरी पुत्री उत्पन्न हुये। वे ही राजा ऋषभदेव मुनि होकर पूर्ण ज्ञानी भगवान आदिनाथ बने। उन्हीकी स्तुति भक्तामर स्तोत्र मे की गई है।

समापन

आज के पाठ का समापन करते हुये अध्यापक निम्न मूल्याकन प्रश्न करेगे –

(१) क्या आदिनाथ जन्म से भगवान थे ?

(२) भक्तामर मे किनकी स्तुति की गई है ?

गृहकार्य

पठित पाठ मे अध्यापक घर से करके लाने के लिये निम्न कार्य देगे –

अध्यापक कथन – बालको ! तुम्हे कल निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर याद करके लाने है :–

(१) राजा ऋषभदेव के माता, पिता, पत्नी, पुत्र और पुत्रियो के नाम।

(२) भक्तामर स्तोत्र मे क्या है ?

द्वितीय दिन

स्थान – श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला, विदिशा (म०प्र०)

कक्षा – बालबोध प्रथम खड

प्रकरण – "भगवान आदिनाथ"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत्।

(ख) विशेष उद्देश्य – पूर्ववत्।

पूर्व-ज्ञान

पूर्ववत् तथा प्रथम दिन पढाये गये पाठ मे आदिनाथ के गृहस्थ जीवन की सामान्य जानकारी छात्र प्राप्त कर चुके है ।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, पूर्वानुसार चार्ट ।

उद्देश्य कथन

बालको ! कल हमने आदिनाथ के गृहस्थ जीवन का परिचय प्राप्त किया था । आज हम यह समझेगे कि वे भगवान कैसे बने ।

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी एक अन्विति मे ही पूरा होगा । इसमे प्रथम दिन के सम्पूर्ण सोपान तो होगे ही पर द्वितीय दिन की अन्विति होने से सबसे पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' सबधी एक सोपान और होगा ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

इसमे प्रथम दिन का पाठ छात्रों ने कितना तैयार किया है, यह जानने के लिये निम्न मूल्याकन प्रश्न किए जावेगे :—

(१) ऋषभदेव के गृहस्थ जीवन का परिचय दीजिये ।
(२) ऋषभदेव के पुत्रो के क्या नाम थे ?
(३) उनकी कितनी पत्निया थी ?
(४) क्या वे जन्म से भगवान थे ?

प्रथम अन्विति

"तो क्या भरत ··· ··· ··· ··············· ··· ··· बन सकते है ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।
अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।
विचार-विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – आदिनाथ का नाम राज्यावस्था मे ऋषभदेव था । नीलाजना की मृत्यु देखकर उन्हे वैराग्य हो गया और वे नग्न दिगम्बर साधु हो गये । छह माह के उपवास के उपरान्त छह मास तक उनके आहार की विधि नही मिली । करीव एक वर्ष बाद अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने उन्हे आहार दिया । उसी दिन से अक्षय तृतीया का महापर्व मनाया जाने लगा ।

एक हजार वर्ष बाद उन्हे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और उनके द्वारा सारे भारतवर्ष मे तत्त्वोपदेश हुआ। उनके द्वारा बताया गया मुक्ति का मार्ग आज भी हमे ज्ञानियो द्वारा प्राप्त है। जो उस मार्ग पर चले वे स्वयं भगवान बन सकते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ अक्षय तृतीया के दिन क्या हुआ था ?	१ इस दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।
२ भगवान आदिनाथ ने अपने उपदेशो मे क्या बताया ?	२ मुक्ति का मार्ग।
३ उनके सच्चे भक्त कौन है ?	३ जो उनके बताये मार्ग पर चले।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहर दान दिया था।	१ अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था या नही ?	१ दिया था।
	२ अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था या राजा ऋषभदेव को या भगवान आदिनाथ को ?	२ मुनिराज आदिनाथ को।
	३ अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने किसको आहार दान दिया था ?	३ मुनिराज आदिनाथ को।
	४ अक्षय तृतीया के दिन क्या हुआ था ?	४ अक्षय तृतीया के दिन राजा श्रेयास ने मुनिराज आदिनाथ को आहार दान दिया था।

नोट — इसी प्रकार अन्य आगत सभी प्रश्नोत्तरो को भी समझावेगे।

सारांश कथन – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – आज हमने आदिनाथ के बारे मे इतनी बाते जानी :–

(१) नृत्य करते नीलांजना की मृत्यु देखकर ऋषभदेव को वैराग्य हुआ था ।

(२) दीक्षा के एक वर्ष बाद राजा श्रेयांस ने मुनिराज आदि-नाथ को आहार दान दिया था । तभी से अक्षय तृतीया पर्व चला ।

(३) एक हजार वर्ष बाद उन्हे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

(४) जो उनके बताये मार्ग पर चले वही उनका सच्चा भक्त है ।

(५) उनके बताये मार्ग पर चलकर हम भी भगवान बन सकते है ।

समापन

आज का पाठ छात्रों की समझ में आया या नही, यह जानने के लिये निम्न मूल्यांकन प्रश्न करेगे :–

(१) अक्षय तृतीया पर्व क्यों मनाया जाता है ?

(२) भगवान का सच्चा भक्त कौन है ?

(३) हम भगवान कैसे बन सकते है ?

गृहकार्य

बालको ! कल तुम्हे घर से भगवान आदिनाथ का संक्षिप्त जीवन-परिचय याद करके लाना है ।

पाठ-संकेत

बालबोध पाठमालाओ मे आये हुये पॉच पाठो की आदर्श पाठ-योजनाये प्रस्तुत की। आगे शेष पाठो के पाठ-सकेत दिये जा रहे है। पाठ-सकेतो का ध्यान रखते हुए अध्यापक बधुओ को प्रत्येक पाठ पढाने के पूर्व उपरोक्त पाठ-योजनाओ के अनुरूप पाठ-योजना तैयार करनी है। ध्यान रहे किसी भी पाठ की पाठ-योजना तैयार करते समय तत्सबंधित पाठ-सकेत मे दिये सकेतो की अवहेलना नही की जानी चाहिये।

पाठ-संकेत १

(बालबोध पाठमाला भाग १–पाठ १)

"णमोकार मंत्र"

आवश्यक निर्देश:–

(१) णमोकार मत्र गाथा-रूप मे पद्य रचना है। अत: इसका गाकर पद्य के रूप मे ही आदर्श वाचन व अनुकरण वाचन किया जायेगा। प्राय· इसे गद्य के रूप मे पढा जाता है, यह ठीक नही है।

(२) प्रत्येक पद का अर्थ अलग-अलग बताया जाना चाहिये। जैसे णमो अरहताण=अरहतो को नमस्कार हो। आदि।

(३) "लोए सव्व" शब्द प्रत्येक पद से साथ लगता है।

(४) "सव्वपावप्पणासणो" का अर्थ–सब पापो का नाश करने वाला है। इसे स्पष्ट करना कि जिस काल मे णमोकार मत्र द्वारा पच परमेष्ठी का स्मरण करते है उस काल मे हिसा, झूठ, चोरी आदि पाप भावो की उत्पत्ति ही नही होती, यही पापो का नाश है।

पाठ-संकेत २

(बालबोध पाठमाला भाग १–पाठ २)

"चार मंगल"

आवश्यक निर्देश:–

(१) "चत्तारि मंगल" आदि पाठ को शुद्ध बोलना सिखाने के लिये अध्यापक को स्वयं आदर्श वाचन देख देखकर सावधानी से करना चाहिये तथा अनुकरण वाचन में सावधानीपूर्वक अशुद्धियां ठीक करानी चाहिये।

(२) निम्न स्थानो पर विशेष अशुद्धियाँ हो जाती है :–

अशुद्ध	शुद्ध
अरहत मंगल	अरहंता मगल
सिद्ध मंगलं	सिद्धा मंगलं
केवली पण्णत धम्मो मंगलं	केवलि पण्णत्तो धम्मो मगल
केवली पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमा	केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो
केवली पणत्तो धम्मो शरणं पव्वज्जामि	केवलि पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि

(३) मंगल, उत्तम, और शरण के अर्थ स्पष्ट करके बताना है तथा उनकी परिभाषाये वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार करानी।

पाठ-संकेत ३

(बालबोध पाठमाला भाग १ – पाठ ३)

"तीर्थंकर भगवान"

आवश्यक निर्देश :–

(१) तीर्थंकर और भगवान का अतर स्पष्ट करना।

"सभी तीर्थंकर भगवान होते है पर सभी भगवान तीर्थंकर नही" – इस तथ्य को अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिये।

(२) तीर्थंकर की परिभाषा को इस प्रकार विभाजित करके तैयार कराना चाहिये :-

(क) जो धर्म तीर्थ का उपदेश देते है।

(ख) समवशरण विभूतियो से युक्त होते है।

(ग) जिनको तीर्थंकर नाम कर्म का उदय होता है, वे तीर्थंकर है।

(३) निम्नलिखित नामो के बोलने मे अधिकाशतः अशुद्धिया होती है। अत. इन पर विशेष ध्यान देना चाहिये :-

अशुद्ध	शुद्ध
पद्मप्रभु	पद्मप्रभ
चन्दाप्रभु	चन्द्रप्रभ
वासपूज्य	वासुपूज्य
कुन्थनाथ	कुन्थुनाथ
अरहनाथ	अरनाथ

पाठ-संकेत ४

(बालबोध पाठमाला भाग १ – पाठ ४)

"देव-दर्शन"

आवश्यक निर्देश :-

(१) देव की सामान्य परिभाषा बताकर देवगति के देव से सच्चे देव की पृथकता स्पष्ट करना।

(२) यह स्पष्ट करना कि वीतरागी और सर्वज्ञ ही पूज्य हैं। बाकी रागी-द्वेषी कोई भी सच्चे देव न होने से पूज्य नही है।

(३) मन्दिर मे क्या-क्या काम करना चाहिये और क्या-क्या नही, इस बात को स्पष्ट करना चाहिये। जेसे – तत्त्वचर्चा, स्वाध्याय, सामायिक आदि करना चाहिये। गप्पे लगाना, झूठे मुँह जाना, चमडे की वस्तु ले जाना आदि ठीक नही है।

(४) देव-दर्शन का लाभ बताते हुये देव-दर्शन से पाप भाव के अभाव पर जोर देना। उक्त तथ्य को तर्क व युक्ति से समझाना। जैसे – जब हम भगवान के दर्शन करेंगे तब पाप भाव उत्पन्न ही नही होंगे, यही पाप का नाश है।

(५) मूर्त्ति के माध्यम से मूर्त्तिमान अरहतादिक का स्वरूप समझाना, उनका गुण-स्तवन, चिन्तन करना देव-दर्शन है। मात्र मन्दिर में ढोक देना ही नही।

(६) सुविधानुसार यथासमय छात्रों को मन्दिर मे ले जाकर देव-दर्शन की पद्धति का ज्ञान प्रयोगात्मक रूप से कराना।

पाठ-संकेत ५

(बालबोध पाठमाला भाग १–पाठ ५)

"जीव-अजीव"

आवश्यक निर्देश :–

(१) जीव और अजीव का ज्ञान कराते समय जीव से एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध रखने वाले अजीव जैसे शरीर, आख, कान आदि और आत्मा से पृथक् रहने वाले अजीव जैसे कुर्सी, टेबिल, कुर्ता आदि का पृथक्-पृथक् ज्ञान कराना।

(२) आत्मा से एक क्षेत्रावगाह सबध रखने वाले अजीवो को प्रश्नोत्तरो द्वारा विशेष स्पष्ट करना। जैसे –

प्रश्न – जब आँख देखती है तो वह अजीव कैसे ?

उत्तर – आँख थोडे ही देखती है, आत्मा आँख द्वारा देखता है।

(३) जीव व अजीव की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) जीव-अजीव के जानने से क्या क्या लाभ है ? यह स्पष्ट करना।

पाठ-संकेत ६

(बालबोध पाठमाला भाग १ – पाठ ६)

"दिनचर्या"

आवश्यक निर्देश :–

(१) प्रात· से साय तक की दिनचर्या बनाकर छात्रो को बताना।

(२) सफाई दो प्रकार की होती है –

(क) अतरग

(ख) बहिरग

दोनो का विशेष स्पष्टीकरण करना।

(३) अतरग सफाई मे आत्मा-परमात्मा के चितवन एव तत्त्व-प्रचार पर जोर देना चाहिये।

(४) बाह्य सफाई मे स्नान, दातो की सफाई, नाखूनो की सफाई रखने आदि की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-संकेत ७

(बालबोध पाठमाला भाग १ – पाठ ८)

"मेरा धाम"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आत्मा का परिचय निम्नानुसार कराना –

(क) नाम – शुद्धात्मा

(ख) काम – मात्र जानना-देखना (पर का कुछ नही करना)

(ग) धाम – मुक्तिपुरी (मोक्ष)

(२) मेरा धाम कैसा है ? इसका ज्ञान कराना। जैसे –

(क) वहाँ भूख और प्यास नही सताती।

(ख) खासी-जुकाम आदि शारीरिक रोग नही है।

(ग) चिता, भय आदि मानसिक रोग नही है।

(३) **प्रश्न** – प्राप्त करने योग्य क्या है ?

उत्तर – (क) स्वपर भेद विज्ञान
(अपनी पराये की पहिचान)

(ख) आत्म-ध्यान

(ग) राग-द्वेष का त्याग

(घ) आत्मानंद का पान

(४) मेरा धाम नामक कविता बच्चो को कण्ठस्थ (मुखाग्र) तैयार कराके सामूहिक रूप मे एक साथ बोलने का अभ्यास कराना चाहिये एव प्रतिदिन इसे प्रार्थना के तौर पर बोलने की प्रेरणा देनी चाहिये।

पाठ-संकेत ८

(बालबोध पाठमाला भाग २ – पाठ १)

"देव-स्तुति"

आवश्यक निर्देश :–

(१) सर्व प्रथम देव-स्तुति की पहली पंक्ति के आधार पर सच्चे देव की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार करानी चाहिये।

(२) स्तुति के सामान्यार्थ विवेचन के पश्चात् स्तुति मे आये भावों को प्रश्नोत्तर मे तैयार कराना चाहिये। जैसे –

प्रश्न – ज्ञानी भक्त भगवान से क्या चाहता है ?

उत्तर – (क) पाचों पापो से दूर रहना

(ख) जिन धर्म की सेवा करना

(ग) कुरीतियोका नाश व सुरीतियोंका प्रचार करना

(घ) न्याय मार्ग पर चलना

प्रश्न – कुरीति क्या है ?

उत्तर – कुरीतियो को हम दो भागो मे बाट सकते है – धार्मिक कुरीति और सामाजिक कुरीति ।

धार्मिक कुरीति – भूत, प्रेत, व्यतर आदि की पूजा आदि से गृहीत मिथ्यात्व का सेवन करना ।

सामाजिक कुरीति – दहेज प्रथा आदि ।

धार्मिक कुरीतिया दूर करने पर अधिक बल देना चाहिये ।

(३) इसी प्रकार पूरी स्तुति मे आये भावो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना चाहिये ।

(४) छात्रो को पूरी स्तुति कठस्थ तैयार कराना है तथा उसका सामान्य भाव भी तैयार कराना है ।

पाठ-संकेत ९

(बालबोध पाठमाला भाग २–पाठ २)

"पाप"

आवश्यक निर्देश :–

(१) मिथ्यात्व ही सबसे बडा पाप है । इस तथ्य को युक्ति-पूर्वक समझा कर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना ।

(२) मिथ्यात्व और पाचों पापो की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना ।

(३) हिंसा के द्रव्य हिसा और भाव हिंसा भेदों को समझाना ।

(४) "क्या सत्य समझे विना सत्य बोला जा सकता है" – उक्त तथ्य को सयुक्ति स्पष्ट करना ।

(५) मिथ्यात्व और कषाये भी परिग्रह है – यह स्पष्ट करना ।

(६) "सब पापो की जड मिथ्यात्व और कषाय ही हैं" – इसे भी स्पष्ट करना ।

पाठ-संकेत १०

(बालबोध पाठमाला भाग २–पाठ ३)

"कषाय"

आवश्यक निर्देश :–

(१) निम्नलिखित परिभाषाओं को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना व तैयार कराना :–

विभाव, राग, द्वेष, कषाय, क्रोध, मान, माया, लोभ

(२) निम्नलिखित प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझा कर तैयार कराया जाय :–

प्रश्न – कषाय क्यो उत्पन्न होती है ?

उत्तर – मुख्यतया मिथ्यात्व के कारण पर-पदार्थ इष्ट और अनिष्ट भाषित होने से कषाय उत्पन्न होती है।

प्रश्न – कषायो का अभाव कैसे हो ?

उत्तर – तत्त्वज्ञान के अभ्यास से जब पर-पदार्थ इष्ट अनिष्ट प्रतिभासित न हों तो मुख्यतया कषाय भी उत्पन्न नहीं होती है।

(३) कषाय और राग-द्वेष को निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :–
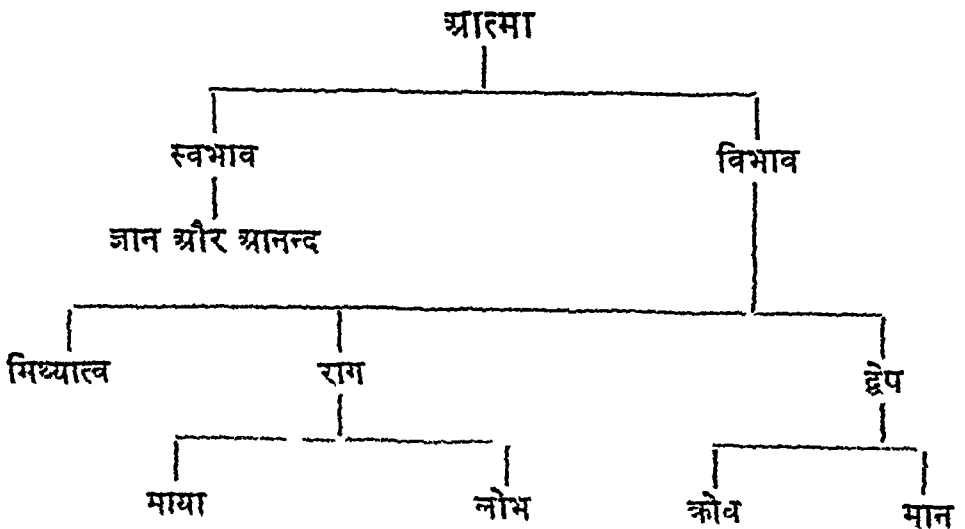
पाठ-संकेत ११

(बालबोध पाठमाला भाग २–पाठ ५)

"गतियाँ"

आवश्यक निर्देश :–

(१) गति और चारो गतियो की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) "चारो गतियो मे दु ख ही दु·ख है – सुख कही भी नही"– उक्त तथ्य की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करना।

(३) ससारी जीव की अवस्थाये तो बहुत है, पर उनका चार भागो मे वर्गीकरण किया गया है। इस तथ्य को स्पष्ट करना।

(४) कौन गति किस अपराध का फल है ? चारो गतियो के कारणो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(५) "मनुष्य पर्याय मे होने से हम सब मनुष्य कहे जाते है वस्तुत है तो हम सब जीव।" – इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करना।

(६) निरपराध दशा क्या है ? – इसे विशेष स्पष्ट करना।

पाठ-संकेत १२

(बालबोध पाठमाला भाग २–पाठ ६)

"द्रव्य"

आवश्यक निर्देश :–

(१) विश्व, द्रव्य और छहो द्रव्यो की परिभाषा समझाना एव वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) द्रव्यो को दो-दो भेदो में विभाजित करके समझाना –

(क) जीव द्रव्य – अजीव द्रव्य
(ख) रूपी द्रव्य – अरूपी द्रव्य
(ग) अस्तिकाय – नास्तिकाय

(३) परस्पर अन्तर स्पष्ट करना –

(क) धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य मे।

(ख) धर्म और धर्म द्रव्य मे।

(ग) अधर्म और अधर्म द्रव्य में।

(४) आकाश द्रव्य ऊपर नीचे सर्वत्र है तथा आकाश मे रग नही होता – उक्त तथ्यो को भली-भाति स्पष्ट करना।

(५) निम्नलिखित प्रश्नो की तर्कसगत जानकारी देना –

(क) क्या कभी विश्व का नाश हो सकता है ?

(ख) भगवान जगत के जानने वाले हैं या बनाने वाले ?

पाठ-संकेत १३

(बालबोध पाठमाला भाग २–पाठ ७)

"भगवान महावीर"

आवश्यक निर्देश :–

(१) भगवान जन्मते नही, बनते है। इसे सतर्क स्पष्ट करना।

(२) कोई भी व्यक्ति आत्मसाधना कर भगवान बन सकता है। इस पर विशेप बल देना।

(३) भगवान महावीर के पाचों नामो की सार्थकता वताना।

(४) बालक वर्धमान, राजकुमार वर्धमान, मुनि महावीर, भगवान महावीर शब्दों के यथास्थान प्रयोग का ज्ञान छात्रो को कराना।

(५) महावीर का ही जन्मोत्सव क्यो मनाया जाता है– हमारा तुम्हारा क्यो नही ? इसका सतर्क उत्तर देना।

(६) भगवान महावीर की शिक्षा नं० १, २, ३, ४ एव ११ पर विशेप वल देना।

(७) महावीर जयन्ती और दीपावली पर्व का परिचय देना।

(८) भगवान महावीर का सामान्य जीवन-परिचय अपने शब्दो मे तैयार कराना।

पाठ-संकेत १४

(बालबोध पाठमाला भाग २—पाठ ८)

"जिनवाणी स्तुति"

आवश्यक निर्देश :—

(१) जिनवाणी स्तुति को कठस्थ तैयार कराना व उसका सामान्य भाव समझाना व याद कराना।

(२) स्तुति मे आये महत्त्वपूर्ण तथ्यो को प्रश्नोत्तरो द्वारा तैयार कराना। जैसे—

प्रश्न – जिनवाणी के श्रवण से क्या लाभ है ?

उत्तर – (प्रथम छन्द के आधार पर)

(क) मिथ्यात्व का नाश।
(ख) ज्ञान का प्रकाश।
(ग) स्वपर भेद विज्ञान।
(घ) छह द्रव्यो का सही ज्ञान।
(ङ) कर्म बन्ध की प्रक्रिया का ज्ञान।
(च) आत्मानुभव व आत्मज्ञान होना।
(छ) सच्चे सुख की प्राप्ति।

(३) "मस्तक नमो" – "जपो" का भाव स्पष्ट करना—

"नमो" का अर्थ शारीरिक नमस्कार करना तो है ही पर मात्र माथा झुकाना नही है। मुख्य रूप से जिनवाणी के महत्त्व को समझकर उसके प्रति बहुमान उत्पन्न होना है और उसके अभ्यास द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति करने को यत्नशील होना है।

"जपो" का अर्थ उसके नाम की माला फेरना नही बल्कि उसका निरन्तर अभ्यास करना है।

पाठ-संकेत १५

(बालबोध पाठमाला भाग ३—पाठ ३)

"अष्ट मूलगुण"

आवश्यक निर्देश:—

(१) निश्चय मूलगुण और व्यवहार मूलगुण की परिभाषा समझाना एव वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) मद्य, मांस, मधु और पच उदुम्बर फलो के सेवन से बुराइयां स्पष्ट करना। जैसे—

प्रश्न —मद्य सेवन से क्या हानियाँ हैं ?

उत्तर— (क) विवेक की हानि (ज्ञान दबना)।

(ख) जीवो का घात (हिंसा)।

(ग) बुद्धि की भ्रष्टता।

(घ) तत्त्वज्ञान प्राप्ति के प्रसंग की समाप्ति।

(३) कौन-कौन वस्तुये मास मे आती है ? कौन-कौन मद्य में ? इसे स्पष्ट करना। जैसे—

(क) अंडा, मछली — मांस

(ख) शराब, भाग — मद्य

(४) पंच उदुम्बरो का ज्ञान कराना।

(५) अष्ट मूलगुण धारण करने की प्रेरणा देना।

(६) मद्य, मांस, मधु और पंच उदुम्बर फल मूलगुण नही है किन्तु इनका त्याग मूलगुण है। प्रायः बालक अष्ट मूलगुणों के नाम पूछने पर इस तरह उत्तर दे देते है कि मद्य, मास, मधु और पंच उदुम्बर फल। कहना ऐसा चाहिए कि मद्य त्याग, मांस त्याग, मधु त्याग और पच उदुम्बर फल त्याग—ये श्रावक के अष्ट मूलगुण हैं।

उपरोक्त तथ्य को छात्रो को हृदयंगत कराना।

पाठ-संकेत १६

(बालबोध पाठमाला भाग ३–पाठ ४)

"इन्द्रियां"

आवश्यक निर्देश :–

(१) जिन और जैन की परिभाषा बताना व वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(२) पाचो इन्द्रियो की परिभाषा समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना व प्रत्येक इन्द्रिय के कार्य को स्पष्ट करना।

(३) पाचो इन्द्रियो का हाथ से इशारा करके ज्ञान कराना है।

(४) इस प्रकार के प्रश्न करना जिससे पता चल सके कि बालको को इन्द्रियो का सही ज्ञान हुआ है या नही। जैसे –

प्रश्न – तुम्हारी चक्षु इन्द्रिय कहा है ? आदि।

(५) निम्नलिखित शकाओ का निम्नानुसार सतर्क समाधान करना है .–

प्रश्न – इन्द्रिया तो ज्ञान मे सहायक है – उन्हे जीतना क्यो ?

उत्तर – ये भोगो मे उलझाने मे भी तो निमित्त है।

प्रश्न – इन्द्रिय भोगो को छोडने की बात कहो–इन्द्रिय ज्ञान को तो नही छोडना ?

उत्तर – इन्द्रियाँ मात्र पुद्गल को जानने मे ही निमित्त है। आत्मा के जानने मे तो वे निमित्त भी नही।

प्रश्न – जिसका जितना ज्ञान कराया उतना ही ठीक – उन्हे तुच्छ क्यो कहते हो ?

उत्तर – आत्मा का हित तो आत्मा के जानने मे है। पुद्गल के जानने मे नही। पुद्गल के जानने मे उलझा हुआ आत्मा आत्मज्ञान से वचित रह जाता है। अत इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ कहा जायगा।

पाठ-संकेत १७

(बालबोध पाठमाला भाग ३—पाठ ५)

"सदाचार"

आवश्यक निर्देश :—

(१) सदाचार को दो भागो मे बाँटना –

(क) अहिंसा मूलक – जिसमें हिंसा न हो।

(ख) सभ्यता मूलक – स्वास्थ्य व सामाजिक परंपरा के अनुकूल हो। जैसे—बाजार में खड़े-खडे चलते-फिरते नही खाना, आदि।

(२) अभक्ष्यों को तीन भागो में विभाजित करना –

(क) हिंसा मूलक (त्रसघात, बहुघात)

(ख) असभ्यता मूलक – (नशाकारक, अनुपसेव्य)

(ग) अस्वास्थ्यकर – (अनिष्ट)

(३) अभक्ष्य व त्रसघात आदि पांचो अभक्ष्यो की परिभाषा पृथक्-पृथक् वस्तुनिष्ठ पद्धति से समझाना व तैयार कराना।

(४) पाचो प्रकार के अभक्ष्यो को इस प्रकार स्पष्ट करना जिससे बालको को उनकी पृथकता ध्यान मे आजावे। जैसे –

निम्नलिखित मे बताइये कौन कौनसा अभक्ष्य है ?

	× ✓
आलू	– त्रसघात, बहुघात
	✓ ×
वड़ का फल	– त्रसघात, बहुघात
	✓ ×
भाग	– नशाकारक, अनुपसेव्य
	× ✓
लहसन	– त्रसघात, बहुघात
	× ✓
लार	– नशाकारक, अनुपसेव्य
ब्लड प्रेशर	× ✓
वाले को नमक	– बहुघात, अनिष्ट

पाठ-संकेत १८

(बालबोध पाठमाला भाग ३–पाठ ७)

"भगवान नेमिनाथ"

आवश्यक निर्देश :–

(१) भगवान नेमिनाथ का सामान्य जीवन-परिचय बालको को अपने शब्दों मे तैयार कराना।

(२) गिरनार क्षेत्र का सामान्य परिचय देकर उसका महत्त्व बताना।

(३) भगवान नेमिनाथ अपनी पत्नी राजुल को बिलखती हुई छोडकर चले गये थे। क्या यह सच है? यदि नही, तो लोग ऐसा क्यो कहते है? इसे पाठ के आधार पर अच्छी तरह स्पष्ट करना।

(४) नेमिनाथ का वैराग्य लेना राजुल की दृष्टि से अच्छा रहा – इसे सतर्क स्पष्ट करना।

पाठ-संकेत १९

(बालबोध पाठमाला भाग ३–पाठ ८)

"जिनवाणी स्तुति"

आवश्यक निर्देश :–

(१) लोक मे गगा की पवित्रता धन-धान्य समृद्धिकारक होने से है। कवियो की अतिशयोक्तियो मे गगा को तीर्थ के रूप मे प्रदर्शित किया है। यहा स्तुतिकार ने जिनवाणी का रूपक गगा के रूप मे बाधा है। इसे बालको को स्पष्ट करना।

(२) दूसरे छन्द मे जिनवाणी का रूपक दीपक की शिखा से वाधा है – इसे भी स्पष्ट करना चाहिये।

(३) जिनवाणी स्तुति को बालको को कंठस्थ कराना चाहिये।

(४) जिनवाणी स्तुति का सामान्यार्थ तैयार कराना चाहिये।

(५) जिनवाणी स्तुति मे आये भावो को प्रश्नोत्तर के माध्यम से समझाना एवं तैयार कराना चाहिये। जैसे–

प्रश्न – जिनवाणी गगा कहा से निकलती है?

उत्तर – महावीर भगवान रूपी हिमालय से।

प्रश्न – यदि जिनवाणी रूपी दीप शिखा न होती तो क्या होता?

उत्तर – हम तत्त्वज्ञान प्राप्त नही कर पाते।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-४ (राज०)

ग्रीष्मकालीन शिविर, सत्र १९७०

बालबोध-प्रशिक्षण-परीक्षा-प्रश्नपत्र

समय : ३ घटे पूर्णाक : ५०

नोट – कोई भी पांच प्रश्न हल कीजिए। प्रत्येक खड मे से दो प्रश्न करना अनिवार्य है।

खण्ड अ

१. निम्नलिखित मे से किन्ही पाच की परिभाषाएँ दीजिये :–
(१) अहिंसा (२) अधर्म द्रव्य (३) सिद्ध परमेष्ठी (४) पुद्गल द्रव्य (५) हिसा (६) स्पर्शन इन्द्रिय (७) अजीव (८) तीर्थंकर।

२. किन्हीं पाच का उत्तर दीजिये :–

(क) नरकायु के बध के कारण क्या हैं ?

(ख) निरपराध दशा क्या है ?

(ग) अरहतों के गुण कितने होते है ? उनमे से आत्मा से सबध रखने वाले कौनसे है और शरीर से सबध रखने वाले कौनसे है ?

(घ) विशेष गुण किसे कहते है ? उदाहरण देकर समझाइये।

(ङ) इन्द्रियां किसे कहते है ? वे कितनी होती है ? नाम सहित गिनाइये।

(च) पाप कितने होते है ? नाम सहित गिनाइये। सबसे बडा पाप कौनसा है और क्यों ? सतर्क उत्तर दीजिये।

३. निम्नाकित मे से किन्ही चार मे परस्पर अतर बताइये :–

(क) सामान्य गुण और विशेष गुण

(ख) भगवान और तीर्थकर भगवान

(ग) बालक वर्द्धमान और भगवान महावीर

(घ) जिनवाणी गगा और गंगा

(ङ) निश्चय मूलगुण व व्यवहार मूलगुण

४ "द्रव्य गुण पर्याय" नामक पाठ के आधार पर द्रव्य, गुण, पर्याय पर विवेचन करने वाला एक निबंध लिखिये।

खण्ड ब

५ "पच परमेष्ठी" अथवा "पाप" नामक पाठ की पाठ-योजना प्रस्तुत कीजिये।

६ "भगवान नेमिनाथ" अथवा "तीर्थंकर भगवान" नामक पाठ का पाठ-सकेत तैयार कीजिये।

७ "कषाय" और "अष्ट मूलगुण" पाठ को पढाने के लिये अध्यापको को क्या आवश्यक निर्देश दिये गये है ? लिखिये।

अथवा

अध्यापको को दिये गये सामान्य निर्देश लिखिए।

८ निम्नलिखित मे से किन्ही चार को स्पष्ट समझाइये –

(क) अस्तित्व गुण को न मानने में क्या आपत्ति है ?

(ख) आदर्श वाचन और अनुकरण वाचन से क्या तात्पर्य है ?

(ग) सामान्य उद्देश्य और विशेष उद्देश्यो का अतर स्पष्ट कीजिये।

(घ) "प्रस्तुतीकरण" और "पूर्व-ज्ञान" से क्या आशय है ? स्पष्ट कीजिये।

(ङ) एक अच्छे अध्यापक में क्या २ विशेषताएँ होनी चाहिये ? लिखिए।

अथवा

श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की "प्रशिक्षण-योजना" के सवध मे अपने आलोचनात्मक विचार निवधरूप मे व्यक्त कीजिये।

अध्याय | तृतीय

प्रवेशिका प्रशिक्षण

प्रवेशिका प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की प्रवेशिका परीक्षा में निर्धारित वीतराग विज्ञान पाठमालाओ मे अध्यापन की पद्धति मे अध्यापक बन्धुओ को प्रशिक्षित करना एव उनमें प्रतिपादित प्रमुख तात्त्विक सिद्धान्तों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना है।

प्रवेशिका प्रशिक्षण संबंधी उद्देश्य दो भागो मे विभाजित किए जा सकते है –

(क) सामान्य उद्देश्य
(ख) विशेष उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – सामान्य उद्देश्य वे है जो प्रवेशिका में पढ़ाये जाने वाले सभी पाठो मे सामान्य रूप से रहते है। वे मुख्यत: निम्नानुसार है :–

(i) छात्रों मे आत्महितकारी शास्त्रो के पढने की रुचि जागृत करना।

(ii) चारो अनुयोगों का समन्वित ज्ञान देना।

(iii) तत्त्वज्ञान और सदाचार संबधी ज्ञान देना।

(iv) अपने पूर्वजो के सबध मे सामान्य जानकारी देना।

(v) जैन साहित्य-निर्माता आचार्यो एव विद्वानो का सामान्य परिचय कराना।

(vi) जैन तीर्थो एव पर्वो का सामान्य ज्ञान देना।

(vii) शास्त्रो के मर्म को समझने की पद्धति से परिचित कराना।

(viii) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी मोक्षमार्ग को जीवन मे प्राप्त करने की प्रेरणा देना।

(ix) सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एव बहुमान का भाव उत्पन्न कराना।

(x) प्राप्त ज्ञान को अपने शब्दों मे व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न कराना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – विशेष उद्देश्य पढाये जाने वाले पाठ से सबधित होते है। अतः ये प्रत्येक पाठ के अलग-अलग होते है तथा पाठ्यवस्तु के अनुसार निर्धारित किए जाते है। इन्हे यथास्थान स्पष्ट किया जावेगा।

वीतराग विज्ञान पाठमालाओ के पाठ पद्य, गद्य एव सवाद के रूप मे है। प्रत्येक प्रकार की एक-एक आदर्श पाठ-योजना यहाँ दी जा रही है। वीतराग विज्ञान पाठमालाओ के तीनो भागो का प्रतिनिधित्व रहे – इस बात को भी ध्यान में रखकर प्रत्येक भाग मे से एक-एक पाठ चुना गया है।

इस प्रकार इस अध्याय मे निम्न तीन पाठो की आदर्श पाठ-योजनाये प्रस्तुत है –

(१) देव-स्तुति
(२) देव शास्त्र गुरु
(३) मै कौन हूँ ?

शेष पाठों के पाठ-सकेत दिये गये है तथा अत मे छात्राध्यापको की सुविधा के लिये गत वर्ष का प्रश्न-पत्र भी दे दिया गया है।

आदर्श पाठ-योजना १

स्थान – श्री एस. एल. जैन उ. मा. विद्यालय, विदिशा (म. प्र.)
कक्षा – प्रवेशिका प्रथम खण्ड
प्रकरण – "देव-स्तुति"
"सकल ज्ञेय………. ………स्तुति के आरभ के १० छद।"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एव बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – "देव-स्तुति" का भाव-ज्ञान छात्रो को देना एवं स्तुति याद कराना।

पूर्व-ज्ञान

छात्र देव के सामान्य स्वरूप और देव-दर्शन की विधि से परिचित है। वे बालबोध पाठमाला भाग १ के "देव-दर्शन", बालबोध पाठमाला भाग २ के "देव-स्तुति" एवं बालबोध पाठमाला भाग ३ के "देव-दर्शन" नामक पाठो में उक्त विषय के संबध मे पढ चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि उपलब्ध हो तो तीर्थंकर भगवान का एक कैलेण्डर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज हम आध्यात्मिक कविवर प० दौलतरामजी द्वारा रचित "देव-स्तुति" का भाव समझेंगे। यह भी जानेंगे कि भगवान के गुण स्तवन से क्या लाभ है एवं हम ससार में क्यों भटक रहे है ?

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिन मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियों में विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे :–

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) सामान्यार्थ विवेचन
(घ) बोधगम्य प्रश्नोत्तर
(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
(च) साराश कथन

नोट – अन्विति आरम्भ होने के पूर्व लेखक-परिचय नाम का एक सोपान और होगा।

प्रथम दिन

लेखक-परिचय

अध्यापक देव-स्तुति के लेखक प० दौलतरामजी का सक्षिप्त परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से निम्नानुसार देगे :–

अध्यापक कथन – जो स्तुति आज हम पढने जा रहे है वह अध्यात्मप्रेमी कविवर प० दौलतरामजी ने लिखी है। आपके द्वारा लिखा गया छहढाला नामक ग्रन्थ जैन समाज मे बहुत आदर के साथ पढा जाता है। जैन समाज मे ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो छहढाला से परिचित न हो। आपने बहुत सुन्दर आध्यात्मिक पद भी लिखे है जो सारे भारतवर्ष की शास्त्रसभाओ मे प्रतिदिन गाये जाते है। हम देखेगे कि उन्होने इस स्तुति मे भी अपूर्व भाव भरे है।

प्रथम अन्विति

"सकल ज्ञेय····· · ········ ······················ अछीन।"

आदर्श वाचन

भक्ति का वातावरण उत्पन्न करने के लिये अध्यापक सुर और लय के साथ आदर्श वाचन करेगे।

अनुकरण वाचन

अध्यापक एक-दो छात्रो से इसका सस्वर वाचन करावेगे और उसमे आवश्यक सुधार स्वय करेगे या अन्य छात्रो से करावेगे।

सामान्यार्थ विवेचन

इसमे अध्यापक छन्दो का निम्नानुसार सामान्यार्थ बतावेगे। साथ ही आवश्यक कठिन शब्दो का अर्थ भी बताते जावेगे।

अध्यापक कथन – सच्चे देव की स्तुति आरम्भ करते हुये प० दौलतरामजी कहते है कि हे जिनेन्द्र ! आप लोकालोक के ज्ञाता होने पर भी आत्मानन्द में मग्न हो। घाति कर्मो से रहित प्रभो ! आपकी जय हो।

(अरि=मोहनीय, रज=ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, रहस=अंतराय)।

हे प्रभो ! आप मोहान्धकार को नाश करने वाले वीतरागी विज्ञान के सूर्य हो। अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य से सुशोभित आपकी जय हो।

आपकी शान्तमुद्रा भव्य जीवो को आत्मानुभूति की ओर लक्ष्य ले जाने मे निमित्त होती है। भव्य जीवो के भाग्य से खिरने वाली आपकी दिव्य ध्वनि को सुनकर उनका भ्रम नष्ट हो जाता है।

हे प्रभो ! आपके गुणों का चिन्तवन करने से अपनी और पराये की पहिचान हो जाती है और अनेक आपत्तिया नष्ट हो जाती है। आप समस्त दोषों से रहित और सब विकल्पो से मुक्त हो, सब महिमाओं से युक्त जग के भूषण हो। हे भगवन् ! आप समस्त विरोधों से रहित परम पवित्र शुद्ध ज्ञानमय और अनुपम हो। आप शुभ-अशुभ भावो का अभाव कर स्वभाव परिणति में बिराजमान हो।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

अध्यापक छन्दों में आई महत्त्वपूर्ण वस्तु का ज्ञान कराने के लिए निम्न प्रश्न स्वय करेगे एव छन्दों के आधार पर उत्तर देगे :–

प्रश्न	उत्तर
१ भगवान कौन है ? (द्वितीय छद के आधार पर)	१. अनन्त चतुष्टय से युक्त वीतरागी परमात्मा ही भगवान है।
२ भगवान की स्तुति से क्या लाभ है। (चतुर्थ छद के आधार पर)	२ (क) अपनी और पराये की पहिचान (भेदविज्ञान) हो जाती है। (ख) अनेक आपत्तियाँ (मोह-राग-द्वेप) नष्ट हो जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तर वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा छात्रो को निम्नानुसार तैयार कराये जावेगे :—

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान (भेदविज्ञान) हो जाती है।	१ भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान होती है या नही ?	१ होती है।
	२ भगवान की स्तुति से अपनी और पराये की पहिचान होती है या केवल पराये की ?	२ अपनी और पराये की पहिचान होती है।
	३ भगवान की स्तुति से किस-किसकी पहिचान होती है ?	३. अपनी और पराये की।
	४ अपनी और पराये की पहिचान किससे होती है ?	४ भगवान की स्तुति से।

सारांश कथन

पठिताश का साराश निम्नानुसार बताया जायगा –

अध्यापक कथन – बालको ! आज के पाठ मे भगवान की स्तुति करते हुये बताया गया है कि भगवान चार घाति कर्मो से रहित एवं अनन्त चतुष्टय से युक्त है। उनके गुणो के स्मरण से स्वपर भेद-विज्ञान प्रकट होता है और अनेक आपत्तियो का नाश होता है। शुभ-अशुभ भावो का नाश किए विना कोई भगवान नही बन सकता है। अत हमे उनका स्वरूप समझकर उनका ध्यान करना चाहिये। हम भी इस प्रकार भगवान वन सकते है।

द्वितीय अन्विति

"अष्टादश दोप· ···· · · · · ··· · ··· ·स्वपद सार।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

सामान्यार्थ विवेचन - पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन - हे भगवन् ! आप १८ दोषों से रहित अनंत-चतुष्टय सहित हैं, मुनिराज और गणधर देव आपकी स्तुति करते है। आप केवलज्ञान आदि नौ लब्धियों से युक्त है। आपके बताये मार्ग पर चलकर अनन्त जीव मोक्ष गये है, जा रहे है और जावेगे। संसार समुद्र से तारने में, भयकर दुःख दूर करने मे आप ही निमित्त कारण हो। अतः मैं आपकी शरण में आया हूँ और अपना चिरकालीन दुखड़ा सुना रहा हूँ।

मैं स्वयं अपने को भूलकर, कर्मों के फल पुण्य-पाप को अपनाकर, अपने को पर का व पर को अपना कर्त्ता मानकर और पर-पदार्थो में इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके आज तक ससार में घूमा हूँ।

हम स्वयं अपने अज्ञान के कारण दुःखी है। हमने शरीर को आत्मा मानकर कभी भी आत्मानुभव की ओर ध्यान नही दिया।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ यह जीव ससार मे क्यों घूमा ? (९वे छंद के आधार पर)	१ (क) अपने को भूल कर। (ख) पुण्य-पाप को अपनाकर। (ग) पर के साथ कर्त्ताकर्म भाव मानकर। (घ) पर में इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके।
२ यह जीव दुःखी क्यो हुआ ? (१०वे छद के आधार पर)	२. (क) अज्ञान के कारण। (ख) शरीर मे आत्मबुद्धि के कारण। (ग) आत्मानुभव न होने के कारण।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
जीव अपने को भूलकर ससार मे घूमता है।	१ जीव अपने को भूलकर ससार मे घूमता है या नही ?	१ घूमता है।
	२ जीव अपने को भूलकर ससार मे घूमता हे या अपने को जानकर ?	२ अपने को भूलकर।
	३ जीव ससार मे क्यो घूमता है ?	३ अपने को भूलकर।
	४ अपने को भूल जाने से जीव का क्या होता है ?	४ जीव ससार मे घूमता है।

नोट —इसी प्रकार सभी तथ्य-वाक्यो को तैयार कराया जायगा।

सारांश कथन

पठितांश का साराश निम्नानुसार वताया जायगा –

अध्यापक कथन – अभी हमने भगवान की स्तुति मे यह समझा कि भगवान १८ दोषो से रहित, केवलज्ञानी व नौ लब्धियो से युक्त होते है। उनके वताये मार्ग पर चलकर हम भी भगवान वन सकते है। हम आज तक ससार मे अपनी स्वय की भूल से ही घूम रहे है और अज्ञान के कारण ही दु खी है।

समापन

पठित वस्तु को छात्रो ने कितना हृदयंगम किया है, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किए जावेगे :–

(१) अपने को भूलकर इस जीव की क्या दशा हुई ?
(२) अठारह दोषो से रहित कौन होते है ?
(३) हम दु खी क्यो है ?

गृहकार्य

अध्यापक निम्नानुसार कार्य घर से करके लाने के लिये देगे –

अध्यापक कथन – कल तुम्हे घर से स्तुति के आज पढे छन्द याद करके लाने है तथा चौथे और नवे छन्द के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखकर व याद करके लाने है –

(१) भगवानके गुणोका चितवन करने से क्या लाभ होते है ?
(२) अनादि से यह जीव ससार मे क्यो घूमा ?

द्वितीय दिन

स्थान – श्री एस. एल. जैन उ. मा. विद्यालय, विदिशा (म. प्र.)

कक्षा – प्रवेशिका प्रथम खण्ड

प्रकरण – 'देव-स्तुति"

"सकल ज्ञेय..........................स्तुति के ११वे छंद से अत तक"

उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य – पूर्ववत् ।

(ख) विशेष उद्देश्य – पूर्ववत् ।

सहायक सामग्री पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

आज हम देव-स्तुति के माध्यम से यह समझेगे कि भगवान को नही पहिचानने से क्या-क्या दु ख होते है और आत्मा का अहित क्यो हो रहा है ?

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ दो अन्वितियो मे समाप्त होगा। द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से प्रथम अन्विति से पूर्व आने वाला लेखक-परिचय नामक सोपान नही होगा एव उसके स्थान पर प्रथम अन्विति के पहले 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक एक सोपान और होगा।

द्वितीय अन्विति मे लेखक-परिचय एवं पूर्व-पाठ मूल्याकन नामक सोपान को छोड़कर बाकी सब सोपान रहेगे।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ को छात्रो ने तैयार किया है या नही, यह जानने के लिए निम्नलिखित मूल्यांकन प्रश्न किए जावेगे :–

(१) यह जीव संसार मे क्यो घूमा ?

(२) देव-स्तुति का पहला छन्द सुनाइये।

(३) आकुलित भयो अज्ञान धारि..........आदि छन्द का सामान्यार्थ बताइये।

प्रथम अन्विति

"तुमको बिन जाने................ ....ज्यो निजाधीन।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – भक्त भगवान से कहता है कि हे भगवन् ! आपको पहिचाने विना मैने जो भी कष्ट पाये है उन्हे आप केवलज्ञानी होने से जानते ही है। मैने तिर्यंच, नरक, मनुष्य और देव गति मे अनन्त बार जन्म-मरण किया है।

अब काललब्धि आने से आपके दर्शन प्राप्त हुये और मेरा मन शान्त हो गया है। मै चाहता हूँ कि आपके चरणो की शरण सदा प्राप्त रहे। आप मे अनन्त गुण है। भक्त गण आपको पार उतारने वाला कहते है।

आत्मा का अहित करने वाले पचेन्द्रियो के विषयो और कषायो मे मेरा परिणाम न लगे। मै तो बस अपने मे ही लीन रहना चाहता हूँ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. भगवान को पहिचाने विना इस जीव की क्या दशा हुई ? (११वे छन्द के आधार पर)	१ चारो गतियो मे जन्म-मरण के दु ख उठाता रहा।
२ आत्मा का अहित करने वाले क्या है ? (१४वें छन्द के आधार पर)	२ पचेन्द्रियो के विषय और क्रोधादि कषाए।
३ ज्ञानी भक्त क्या चाहता है ? (१४वें-१५वे छद के आधार पर)	३ (क) आत्मा मे लीन होना। (ख) पूर्ण स्वतत्र होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
भगवान को जाने बिना जीव चारो गतियो मे जन्म-मरण के दु ख पाता है ।	१. भगवान को जाने बिना जीव चारो गतियो मे जन्म-मरण के दु ख पाता है या नही ?	१. पाता है ।
	२. भगवान को जाने बिना जीव चारो गतियो मे जन्म-मरण के दु ख पाता है या सुख ?	२. जन्म-मरण के दु ख ।
	३ भगवान को जाने बिना जीव चारो गतियो मे क्या पाता है ?	३ जन्म-मरण के दु ख ।
	४ जीव चारो गतियो मे जन्म-मरण के दुःख क्यो पाता है ?	४ भगवान को जाने बिना ।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – आज के पाठ मे हमने तीन बाते सीखी :–

(१) भगवान को पहिचाने बिना चतुर्गति भ्रमण नही मिटता ।

(२) आत्मा का अहित करने वाले – पचेन्द्रियो के विषयो की लालसा और कषाए है ।

(३) ज्ञानी भक्त आत्मा मे लीन रहना और पूर्ण स्वतत्र होना चाहता है ।

द्वितीय अन्विति

"मेरे न चाह कछु·························· त्रियोग सभार ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

सामान्यार्थ विवेचन – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – ज्ञानी भक्त भगवान से कह रहा है कि हे भगवन् ! मुझे रत्नत्रय के अलावा और कुछ नही चाहिये । जिस प्रकार चन्द्रमा स्वभाव से ही गर्मी को दूर करता है और ठडक लाता है, उसी प्रकार आपकी स्तुति से भी आनद प्राप्त होता है । जिस प्रकार अमृत पीने से रोग चला जाता है, उसी प्रकार आपके अनुभव से भव का अभाव होता है ।

मेरे हृदय मे तो यह विश्वास हो गया है कि तुम ससार-समुद्र से पार उतारने वाले जहाज हो। तीन लोक और तीन काल मे तुम्हारे समान सुखदायक कोई नही है।

आपके गुण रूपी अनन्त मणियो के गिनने मे गणधर देव भी समर्थ नही है तो अल्पबुद्धि वाला दौलतराम क्या कह सकता है? अत मै दौलतराम तो मन-वचन-काय सभालकर नमस्कार करता हूँ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ ज्ञानी भक्त की क्या इच्छा है ? (१५वे छद के आधार पर)	१ (क) रत्नत्रय निधि पाने की। (ख) मोह ताप हरने की।
२ क्या भगवान कुछ देते है ? (१६वे छद के आधार पर)	२ नही – पर जैसे चन्द्रमा शीतलता देता नही – उसकी उपस्थिति मे वातावरण स्वय शीतल हो जाता है, उसी प्रकार भगवान कुछ देते नही पर उनका स्मरण करने से सहज शान्ति प्राप्त होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
ज्ञानी भक्त भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश चाहता है।	१ ज्ञानी भक्त भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश चाहता है या नही ?	१ चाहता है।
	२ भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश कौन चाहता है ? ज्ञानी भक्त या अज्ञानी भक्त ?	२ ज्ञानी भक्त।
	३ भगवान से रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश कौन चाहता है ?	३ ज्ञानी भक्त।
	४ ज्ञानी भक्त क्या चाहता है ?	४ रत्नत्रय की प्राप्ति व मोह-ताप का नाश।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – वालको ! अभी पढे छन्दो मे हमने निम्न दो बाते जानी .–

(१) ज्ञानी भक्त पूर्ण स्वतन्त्रता चाहता है और उसकी प्राप्ति का मार्ग रत्नत्रय को मानता है – अत: उसे ही चाहता है ।

(२) भगवान कुछ देते नही पर भगवान के स्वरूप का चिन्तवन करने वाले को सहज ही शान्ति प्राप्त होती है ।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेगे .–

(१) रत्नत्रय निधि कौन चाहता है ?

(२) आत्मा के अहित करने वाले क्या है ?

गृहकार्य

पठिताश मे अध्यापक घर से करके लाने के लिये निम्नानुसार कार्य देगे :–

अध्यापक कथन – कल तुम्हे घर से सम्पूर्ण स्तुति याद करके लाना है तथा वोधगम्य प्रश्नोत्तरों के उत्तर स्तुति के आधार पर लिखकर व याद करके लाना है ।

आदर्श पाठ-योजना २

(देव शास्त्र गुरु)

स्थान – श्री तिलोकचद जैन उ० मा० विद्यालय, इन्दौर

कक्षा – प्रवेशिका द्वितीय खण्ड

प्रकरण – "सच्चा देव"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एव बहुमान का भाव उत्पन्न करना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – सच्चे देव का स्वरूप समझाना।

पूर्व-ज्ञान

देव के सबध मे छात्रो को बालबोध पाठमाला भाग २-३, वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १ मे आगत स्तुतियो एवं वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २ मे आगत देव शास्त्र गुरु पूजन के आधार पर सामान्य जानकारी है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक, यदि सभव हो तो जिनेन्द्र भगवान का कैलेन्डर-साइज चित्र।

उद्देश्य कथन

आज हम जिनकी रोज पूजन करते है, उन सच्चे देव के स्वरूप पर विचार करेगे।

प्रस्तुतीकरण

अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनो मे पढाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियो मे विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति मे निम्नलिखित सोपान होगे –

आदर्श वाचन
अनुकरण वाचन
विचार – विश्लेषण
बोधगम्य प्रश्नोत्तर
वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
सारांश कथन

नोट :– प्रथम दिन की प्रथम अन्विति आरभ होने के पूर्व एक सोपान आधार-परिचय नाम का और होगा ।

प्रथम दिन

आधार-परिचय

यह पाठ रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार पर लिखा गया है । अत: अध्यापक छात्रो को आचार्य समन्तभद्र और उनके द्वारा रचित ग्रंथ रत्नकरण्डश्रावकाचार का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से निम्नानुसार देगे :–

अध्यापक कथन – यह देव शास्त्र गुरु नामक पाठ विक्रम की द्वितीय शती के दिग्गज आचार्य समन्तभद्र के रत्नकरण्डश्रावकाचार नामक ग्रंथ के आधार पर लिखा गया है। आप कदब राजवश के क्षत्रीय राजकुमार थे। आपके बाल्यकाल का नाम शान्ति वर्मा था। आप छन्द, अलंकार, काव्य, कोष, तर्क और न्याय आदि के अद्वितीय विद्वान् थे । आप मे बेजोड़ वाद-शक्ति थी । आपने कई बार घूम-घूम कर कुवादियो का गर्व खण्डित किया था। आपने स्वय लिखा है –

"वादार्थी विचराम्यह नरपते शार्दूलविक्रीडितम्"
"हे राजन् ! मै वाद के लिए सिह की तरह विचरण करता हूँ।"

आपने आप्तमीमासा, तत्त्वानुशासन, स्वयभूस्तोत्र, गधहस्ति महाभाष्य आदि अनेक महाग्रथ लिखे है।

प्रथम अन्विति

"सुबोध – क्यो भाई·····················विजय पा ली है।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय संवाद पद्धति मे एकपात्रीय अभिनयपूर्वक उचित आरोह–अवरोह के साथ प्रस्तुत पाठ का वाचन करेगे ।

अनुकरण वाचन

अध्यापक दो छात्रो द्वारा सवाद पद्धति मे अनुकरण वाचन करावेंगे। एक छात्र सुबोध वाले व दूसरा छात्र प्रबोध वाले अश का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करेंगे। अध्यापक स्वय या अन्य छात्र द्वारा अनुकरण वाचन मे आवश्यक सुधार करावेंगे।

विचार-विश्लेषण

अनुकरण वाचन के पश्चात् अध्यापक प्रस्तुत अन्वितियो मे आगत विचारो, सिद्धातो और परिभाषाओ को विश्लेपण करके निम्नानुसार समझावेंगे –

अध्यापक कथन – देखो भाई ! अभी हमने जो अश पढा है, उसमे निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते है :–

(१) जैन धर्म में व्यक्ति को महत्त्व न देकर गुणो को महत्त्व दिया जाता है। जिस व्यक्ति मे पूज्य गुण पाये जावे वह पूज्य होता है।

(२) वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो, वही सच्चा देव है।

(३) जन्म-मरण, राग-द्वेषादि १८ दोषो से रहित हो, वे वीतरागी है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. पूजन किसकी की जाती है ?	१ देव शास्त्र गुरु की।
२ जैन धर्म मे व्यक्ति की मुख्यता है या गुणो की ?	२ गुणो की।
३ सच्चा देव किसे कहते हे ?	३ जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो, उसे सच्चा देव कहते हैं।
४ वीतरागी किसे कहते है ?	४ जो राग-द्वेप, जन्म-मरण आदि १८ दोपों से रहित हो, वे वीतरागी हैं।
५ अरहत सिद्ध सच्चे देव हे या नही ?	५ है, क्योकि वे वीतरागी सर्वज्ञ है।
६. देव गति के देव सच्चे देव हैं या नही ?	६ नही, क्योकि वे वीतरागी सर्वज्ञ नही हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत बोधगम्य प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नानुसार चार सोपानो द्वारा तैयार कराया जायगा :-

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, वे वीतरागी है।	१. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, वे वीतरागी है या नही ?	१. है।
	२. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, उन्हे वीतरागी कहते है या रागी ?	२. वीतरागी।
	३. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, उन्हे क्या कहते है ?	३ वीतरागी।
	४ वीतरागी किन्हे कहते है ?	४. जो राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोषो से रहित हो, वे वीतरागी है।

नोट :- इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्त-वाक्यो तथा तथ्य-वाक्यो को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त में साराश कथन मे परिभाषाओ और सिद्धात-वाक्यो को सक्षेप मे सरल भाषा में निम्नानुसार दुहरा दिया जावेगा :-

अध्यापक कथन – अभी हमने तीन बाते सीखी।

(१) जैन धर्म मे व्यक्ति की मुख्यता नही, वह व्यक्ति के स्थान पर गुणो मे विश्वास रखता है।

(२) सच्चा देव वही है जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो।

(३) जिनमे राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि १८ दोष न हो, वे वीतरागी है।

द्वितीय अन्विति

"सुबोध – वीतरागी तो.......................अच्छा भी होगा।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक कथन – अभी हमने पढा कि जो तीन लोक और तीन काल सबधी सभी बातो को एक साथ जानता है, वही सर्वज्ञ है तथा जो वीतराग और सर्वज्ञ हो वही सच्चा देव है। उसका उपदेश आत्महितकारी होता है अत· वह हितोपदेशी भी कहा जाता है। उसका उपदेश सच्चा होता है क्योकि वह पूर्ण ज्ञानी है और उसका उपदेश अच्छा (आत्महितकारी) होता है क्योकि वह वीतरागी है।

अत: सच्चे देव की सच्चाई का आधार सर्वज्ञता और अच्छाई का आधार वीतरागता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. सर्वज्ञ किसे कहते है ?	१ जो तीन लोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानता हो।
२ सच्चे देव को हितोपदेशी क्यो कहा जाता है ?	२ क्योकि उसकी वाणी मे आत्म-हितकारी उपदेश निकलता है।
३ सच्चे देव की वाणी सच्ची क्यो होती है ?	३. झूठ तो अज्ञानता से बोला जाता है, वे सर्वज्ञ हैं अत उनकी वाणी सच्ची ही होती है।
४ उनकी वाणी अच्छी क्यो होती है ?	४ राग-द्वेष (पक्षपात) के कारण बुरी बात कही जाती है। वीत-रागी होने से उनकी बात अच्छी (आत्महितकारी) होती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
जो तीन लोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानता हो, उसे सर्वज्ञ कहते है।	१. जो तीन लोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानता हो, उसे सर्वज्ञ कहते है या नही ?	१. कहते है।
	२ जो तीन लोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानता हो उसे सर्वज्ञ कहते है या अल्पज्ञ ?	२ सर्वज्ञ।
	३. जो तीनलोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानता हो, उसे क्या कहते है ?	३. सर्वज्ञ।
	४ सर्वज्ञ किसे कहते है ?	४ जो तीन लोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानता हो।

नोट :– इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ व सिद्धान्तो को समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – आज हमने तीन बाते समझीं :–

(१) तीन लोक और तीन काल की सब बाते एक साथ जानने वाला सर्वज्ञ कहलाता है।

(२) हित का उपदेशक होने से उसे हितोपदेशी कहते है।

(३) सच्चे देव की वाणी सच्ची और अच्छी होती है।

समापन

पाठ समाप्त करने से पूर्व पठितांश छात्रो की समझ मे आया या नही, यह जानने के लिए निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेगे –

(१) जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो, वह कौन है ?

(२) सर्वज्ञ किसे कहते है ?

(३) पूजा किसकी की जाती है ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – कल तुम्हे घर से आज समझाए गये प्रश्नों को लिखकर व याद करके लाना है।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री तिलोकचद जैन उ० मा० विद्यालय, इन्दौर

कक्षा – प्रवेशिका द्वितीय खण्ड

प्रकरण – "शास्त्र और गुरु"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – पूर्ववत् ।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – शास्त्र और गुरु का स्वरूप समझाना एव उनके बहुमान का भाव उत्पन्न करना ।

पूर्व-ज्ञान – पूर्ववत् ।

सहायक सामग्री – पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

आज हम सच्चे शास्त्र और गुरु का स्वरूप समझेगे ।

प्रस्तुतीकरण

द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से प्रथम अन्विति के पूर्व लेखक-परिचय नामक सोपान न होकर उसके स्थान पर 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक सोपान होगा। बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेगे। द्वितीय अन्विति में लेखक-परिचय व पूर्व-पाठ मूल्याकन सोपान नही होगे। बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेगे।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ छात्रो ने तैयार किया या नही, यह जानने के लिये निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न किए जावेगे :–

(१) सच्चा देव किसे कहते है ?

(२) सच्चे देव को हितोपदेशी क्यो कहा जाता है ?

(३) वीतरागी किसे कहते है ?

प्रथम अन्विति

"सुबोध – देव तो समझा................ मर्म को जानते है ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – अभी हमने पढा कि वीतरागता की पोषक सच्चे देव की वाणी मे जो तत्त्वोपदेश होता है उसे ही शास्त्र कहते है। उसमे कही भी पूर्वापर विरोध नही होता। इसके अध्ययन से सन्मार्ग का पता चल जाता है, अतः जीव खोटे रास्ते पर जाने से बच जाता है।

देव शास्त्र गुरु वाले गुरु विद्या-गुरुओ से भिन्न होते है। भगवान की वाणी के मर्म को जानने वाले वे नग्न दिगम्बर होते है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ शास्त्र किसे कहते है ?	१. पूर्वापर विरोध से रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते है।
२ इसके पढने से क्या लाभ है ?	२ जीव कुमार्ग से हटकर सन्मार्ग पर लग जाता है।
३ सच्चे गुरु कैसे होते है ?	३. जिनवाणी के मर्म को जानने वाले नग्न दिगम्बर।
४. क्या विद्यागुरु – गुरु नही है ?	४ विद्यागुरु अष्ट द्रव्य से पूजने योग्य देव शास्त्र गुरु वाले गुरु नही है। सच्चे गुरु तो नग्न दिगम्बर आत्मज्ञानी वीतरागी सन्त होते हैं।
५ क्या नग्नता बिना कोई गुरु नही हो सकता ?	५. देव शास्त्र गुरु वाले गुरु नही हो सकते।
६ नग्न रहने मात्र से कोई गुरु हो जाता है क्या ?	६. नही, आत्मज्ञान बिना कोई सच्चा गुरु नही हो सकता।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत वोधगम्य प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के निम्नानुसार चार सोपानो द्वारा तैयार कराये जावेगे :-

परिभाषा	प्रश्न	उत्तर
पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते है ।	१ पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते हैं या नही ? २. पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते है या कुशास्त्र ? ३ पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को क्या कहते हैं ? ४ शास्त्र किसे कहते है ?	१ कहते है । २ शास्त्र । ३ शास्त्र । ४. पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, सच्चे देव की तत्त्वोपदेश करने वाली वाणी को शास्त्र कहते है ।

नोट – इसी प्रकार आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्तो और तथ्यो को समझाया जावेगा ।

सारांश कथन

अन्विति के अन्त मे साराश कथन मे परिभाषाओं व सिद्धान्त-वाक्यो को सक्षेप मे सरल भाषा मे निम्नानुसार दुहरा दिया जायगा –

अध्यापक कथन – अभी हमने दो बाते सीखी ।

(१) पूर्वापर विरोध रहित, वीतरागता की पोषक, तत्त्वोपदेश करने वाली सच्चे देव की वाणी ही शास्त्र है ।

(२) विद्या गुरुओ से भिन्न सच्चे गुरु जिनवाणी के मर्म को जानने वाले नग्न दिगवर होते हैं ।

द्वितीय अन्विति

"सुबोध – अच्छा और....................हमें भी ले चलना ।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण

अध्यापक कथन – अभी हमने पढा कि आत्मज्ञानी सच्चे गुरु निरन्तर आत्मध्यान और स्वाध्याय में लीन रहते है, सर्व आरभ और परिग्रह से रहित होते है और विषय-भोगों की लालसा भी उनमें नही पायी जाती है । रत्नत्रय से युक्त उन मुनियों का बाह्याचार भी शास्त्रानुकूल होता है ।

देव शास्त्र गुरु की पूजा के बदले मे भी उनसे कुछ मागना मूर्खता है क्योकि जो सब कुछ छोड चुका हो उससे कुछ माँगना ठीक नही । उनकी पूजा तो उन जैसा बनने के भाव से की जाती है ।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ सच्चे गुरु कैसे होते है ?	१. (क) आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले । (ख) विपय-भोगो से विरक्त । (ग) रत्यत्रय से युक्त । (घ) आगमानुकूल बाह्याचार से युक्त । (ङ) समस्त आरभ-परिग्रह से रहित ।
२. क्या भगवान से कुछ माँगना ठीक है ?	२ नही, जो सब कुछ त्याग चुके, उनसे कुछ माँगना ठीक नही ।
३ तो पूजा क्यो की जाती है ?	३ उन जैसा बनने के भाव से पूजा की जाती है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते है ।	१. आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते हैं या नही ? २ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते है या विद्या गुरु ? ३ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को क्या कहते है ? ४ सच्चा गुरु किसे कहते है ?	१. कहते है । २ सच्चा गुरु । ३ सच्चा गुरु । ४ आत्मज्ञानी और आत्मा मे लीन रहने वाले गुरु को सच्चा गुरु कहते है ।

नोट – (१) इसी प्रकार सच्चे गुरु के पाचो लक्षणो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराया जायगा । तदुपरान्त सच्चे गुरु के पाचो लक्षणो को एक साथ स्पष्ट कर दिया जायगा ।

(२) शेष प्रश्नो को भी वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराया जायगा ।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अभी हमने निम्नलिखित बाते सीखी :–

(१) सच्चे गुरु आत्मज्ञानी, आत्मध्यानी, रत्नत्रयधारी, विषय-भोगो की इच्छा से रहित, आरंभ-परिग्रह से रहित तपस्वी होते है ।

(२) उन जैसे बनने की भावना से ही उनकी पूजा की जाती है, लौकिक भोगो की इच्छा से नही ।

समापन

अध्यापक कथन – आज का पाठ तुम्हारी समझ मे आगया होगा ? अच्छा बताओ –

(१) विद्या गुरु सच्चे गुरु है या नही ?

(२) सच्चे शास्त्र वीतरागता के पोषक होते है या राग के ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – कल तुम्हे घर से आज बताये गये प्रश्नोत्तर लिखकर व याद करके लाना है ।

आदर्श पाठ-योजना ३

(मै कौन हूँ ?)

स्थान – श्री जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ़

कक्षा – प्रवेशिका तृतीय खड

प्रकरण – "मै कौन हूँ ?"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – आत्मज्ञान सबधी जानकारी देना।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – अपनी आत्मा के संबंध में विशेष जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करना एवं "मैं" के संबंध में प्रचलित गलत धारणाओं का निराकरण करना।

पूर्व-ज्ञान

छात्रों को जीव तत्त्व की सामान्य जानकारी है। वे बालबोध पाठमाला भाग १ मे 'जीव-अजीव', बालबोध पाठमाला भाग २ में 'षट् द्रव्य', वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १ में 'सात तत्त्व' एवं वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २ में 'सात तत्त्वों संबंधी भूल' नामक पाठो मे जीव तत्त्व के सबंध में बहुत कुछ सीख चुके है।

सहायक सामग्री

पाठ्यपुस्तक।

उद्देश्य कथन

आज हम वस्तुत: "मैं कौन हूँ" अर्थात् आत्मा क्या है ? यह समझने का प्रयत्न करेगे।

प्रस्तुतीकरण

इस पाठ मे 'स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर' वाले सिद्धान्त का विशेष ध्यान रखा जायगा। अध्ययन और अध्यापन की सुविधा की दृष्टि से यह पाठ दो दिनों मे पढ़ाया जायगा। प्रत्येक दिन का पाठ दो अन्वितियो में विभाजित होगा। प्रत्येक अन्विति में निम्नलिखित सोपान होंगे ;–

आदर्श वाचन
अनुकरण वाचन
विचार – विश्लेषण
बोधगम्य प्रश्नोत्तर
वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
साराश कथन

प्रथम दिन

प्रथम अन्विति

" 'मै' शब्द का प्रयोग····· ··············पडित भी नही है ।"

आदर्श वाचन

अध्यापक स्वय गद्य वाचन विधि से अर्द्ध विराम, पूर्ण विराम का ध्यान रखते हुए स्पष्ट आदर्श वाचन करेगे ।

अनुकरण वाचन

अध्यापक सुविधानुसार एकाधिक छात्रो से अनुकरण वाचन करावेगे तथा स्वय या अन्य छात्रो से उसमे सुधार करावेगे ।

विचार-विश्लेषण

अन्विति मे आये विचारो का विश्लेषण निम्नानुसार करेगे :-

अध्यापक कथन – अभी हमने पढा कि प्राय: सभी सामान्य जन 'मै' शब्द का प्रयोग तो करते हैं पर उसका सही अर्थ नही जानते । बाह्य बालकपन आदि सयोगी पर्यायो को ही 'मैं' मान लेते है ।

जब हम विचार करते है तो पता चलता है कि 'मै' – बालक, वृद्ध, पडित, सेठ कुछ भी नही हूँ । एक बात सोचिये – यदि ऐसा मान लिया जाय कि 'मै' बालक हूँ तो बताइये बालक आप कब तक रहेगे ? दस-बीस वर्ष तक ही, उसके बाद आप बालक तो रहेगे नही । तो क्या फिर आप नही रहेगे ? रहेगे । अवश्य रहेगे । इसी प्रकार कोई कहे कि 'मै' जवान हूँ, तो क्या दस-बीस वर्ष पहले भी वे जवान थे ? यदि नही, तो वे तो थे । अत: यह स्पष्ट है कि बालकपन और जवानी तो शरीर से सम्बन्धित हैं और 'मै' आत्मा को कहते है । आत्मा बालक, जवान और बुड्ढा नही होता । अत· 'मै' बालक हूँ, वृद्ध हूँ, यह मानना कल्पना ही है ।

कुछ लोग कहते है कि 'मै' सेठ हूँ या पडित हूँ और भी कई प्रकार की कल्पनाये करते है। पर जरा सोचिये – सेठ तो पैसे के सयोग से कहे जाते है, पैसा नही रहेगा तो आप सेठ तो नही रहेगे पर आप तो रहेगे न। फिर आप सेठ कैसे हो सकते है ? इसी प्रकार शास्त्रो का विशेष ज्ञान होने से लोग पडित कहलाते है पर जब वे बालक थे, शास्त्र ज्ञान नही था, तब क्या वे नही थे ? थे। अतः आत्मा को सेठ या पडित कहना भी उपचार ही है। वस्तुतः आत्मा न सेठ है न पडित।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. "मै बालक या जवान हूँ" – क्या यह मानना ठीक है ?	१ "नही, क्योकि बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाये है और 'मै' आत्मा हूँ।
२ "मै सेठ हूँ" – इस मान्यता मे क्या भूल है ?	२ सेठ तो धन के सयोग से कहा जाता है। धन के बिना भी तो आत्मा रहता है, अतः आत्मा सेठ नही।
३ "मै पडित हूँ" – यह तो ठीक है न ?	३. नही। पडिताई तो शास्त्र ज्ञान का नाम है। शास्त्र ज्ञान के बिना भी आत्मा की सत्ता देखी जाती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाये है।	१ बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाये है या नही ?	१ है।
	२ बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाये है या आत्मा की ?	२ शरीर की।
	३ बालकपन और जवानी किसकी अवस्थाये है ?	३ शरीर की।
	४ शरीर की अवस्थाये क्या है ?	४ बालकपन और जवानी।

निष्कर्ष – बालकपन और जवानी शरीर की अवस्थाये है और "मै" आत्मा हूँ। अत· "मैं" बालक और जवान नही हो सकता।

नोट – इसी प्रकार सेठ और पडित वाला प्रश्न भी समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अभी हमने यह निर्णय किया कि –

(१) "मै" बालक, जवान और वृद्ध नही क्योकि ये शरीर के धर्म है और "मै" शरीर से भिन्न चेतन आत्मा हूँ।

(२) "मै" सेठ भी नही हूँ क्योकि सेठ तो धन के सयोग से कहा जाता है। 'मै' तो असयोगी आत्मा हूँ।

(३) "मै" पण्डित भी नही हूँ क्योकि पडित तो शास्त्रो सबधी क्षयोपशम ज्ञान के कारण कहा जाता है। "मै" तो निगोद जैसी अल्पज्ञान वाली दशा और सिद्ध जैसी पूर्ण ज्ञान वाली दशा मे रहने वाला हूँ।

द्वितीय अन्विति

"तब प्रश्न उठता है कि······ ·· यह अति आवश्यक है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत्।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत्।

विचार-विश्लेषण – पूर्ववत्।

अध्यापक कथन – अभी हमने पढा कि आत्मा क्या है – इस विषय पर हमने कभी गभीरता से सोचा नही। यही कारण है कि "मैं कौन हूँ" का उत्तर हमे प्राप्त नही हो सका है। हम पर की खोज मे अपने को भूल रहे है। कैसी विचित्र बात है कि खोजने वाला खोजने वाले को खोज रहा है और खोजने वाले को खोजने वाला नही मिल रहा है।

आत्मा तो मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष, परोन्मुखी बुद्धि से अलग तीन काल रहने वाला शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभावी स्थायी वस्तु है।

जब आदमी के दिल मे सकुचित भावनाएँ आ जाती है तो वह विशालता को भूलने लगता है। जिस प्रकार प्रान्त मे अपनत्व की तीव्रता आते ही देश का अपनत्व कम हो जाता है या दब जाता है, उसी प्रकार जब तक आत्मा की पर्याय मे एकत्व बुद्धि रहती है तब

तक आत्मा द्रव्य-दृष्टि से ओझल रहता है। जैसे देश के प्रति अगाढ राष्ट्रीयता के लिए "मै भारतीय हूं" – यह अनुभूति प्रबल होना जरूरी है, उसी प्रकार आत्मानुभूति के लिए "मै आत्म-द्रव्य हूँ" – यह दृढ धारणा होना बहुत जरूरी है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१. आत्मा कैसा है ?	१. (क) आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष, परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है। (ख) त्रैकालिक अनादि, अनन्त ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्त्व है।
२. "मै कौन हूँ" का सही उत्तर क्यो प्राप्त नही होता ?	२. हम गभीरता से विचार नही करते।
३ "मै कौन हूँ" का सही उत्तर पाने के लिए क्या आवश्यक है ?	३. "मै आत्मा हूँ" – यह अनुभूति प्रबल होना आवश्यक है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मा मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है।	१ आत्मा, मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एव परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न है या नही ?	१ है।
	२. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेप एव परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न आत्मा है या शरीर ?	२. आत्मा।
	३ मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेष एवं परलक्ष्यी बुद्धि से कौन भिन्न है ?	३. आत्मा।
	४. आत्मा किस-किस से भिन्न है ?	४. मन, वचन, काय, मोह, राग-द्वेप एव परलक्ष्यी बुद्धि से।

नोट :–इसी प्रकार आगत अन्य तथ्यो को भी समझाया जावेगा।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अभी हमने यह समझा कि आत्मा तो शरीर, मन, वाणी, मोह, राग-द्वेष, परलक्ष्यी ज्ञान से भिन्न एक त्रैकालिक शुद्ध ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्व है तथा उसकी प्राप्ति "मै कौन हूँ" की प्रबल जिज्ञासा हो तभी सभव है ।

समापन

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पाठ पढा वह आप लोगो की समझ मे आ ही गया होगा । अच्छा बताओ –

(१) "मै बालक हूँ" ऐसा मानने मे क्या आपत्ति है ?

(२) "मै" मन वचन काय से भिन्न हूँ या अभिन्न ?

गृह कार्य

अध्यापक कथन – आज समझाये गये प्रश्नोत्तरो को कल तैयार करके लाना है तथा पठित पाठ का भावार्थ लिख कर लाना है ।

द्वितीय दिन

स्थान – श्री जैन विद्यार्थी गृह, सोनगढ

कक्षा – प्रवेशिका तृतीय खण्ड

प्रकरण – "मै कौन हूँ ?"

उद्देश्य

(क) **सामान्य उद्देश्य** – पूर्ववत् ।

(ख) **विशेष उद्देश्य** – आत्मज्ञान की दिशा की ओर सकेत करना ।

पूर्व-ज्ञान – पूर्ववत् ।

सहायक सामग्री – पूर्ववत् ।

उद्देश्य कथन

आज हम यह समझेगे कि आत्मानुभव कैसे किया जा सकता है ?

प्रस्तुतीकरण

आज का पाठ भी दो अन्वितियो मे समाप्त होगा । द्वितीय दिन का प्रस्तुतीकरण होने से 'पूर्व-पाठ मूल्याकन' नामक एक सोपान और होगा । बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेगे । द्वितीय अन्विति मे पूर्व-पाठ मूल्याकन नामक सोपान को छोडकर बाकी सब सोपान पूर्ववत् रहेगे ।

पूर्व-पाठ मूल्यांकन

पूर्वपठित पाठ छात्रो ने तैयार किया या नही, यह जानने के लिए अध्यापक निम्नलिखित मूल्याकन प्रश्न करेगे –

(१) "मै कौन हूँ" या "आत्मा कैसा है" ?

(२) "मै पंडित हूँ" – यह मानना ठीक है या नही ?

(३) आत्मा को समझने के लिए क्या आवश्यक है ?

प्रथम अन्विति

"हा ! तो स्त्री, पुत्र··· ··············भी नही हो सकती है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार विश्लेषण – पूर्ववत् ।

अध्यापक कथन – अभी हमने पढा उसमे निम्न चार बाते स्पष्ट हुई :–

(१) आत्मा स्पष्ट पर-सयोगी पदार्थ जैसे स्त्री, पुत्र, मकान, रुपया-पैसा और शरीर से भिन्न है।

(२) आत्मा मे उत्पन्न होने वाले मोह, राग-द्वेष आदि विकारी भाव भी आत्मा की सीमा मे नही आते ।

(३) परलक्ष्यी क्षयोपशम ज्ञान भी पूर्ण ज्ञानस्वभावी आत्मा नही है।

(४) ज्ञान की पूर्ण विकसित केवलज्ञान पर्याय भी पर्याय होने से त्रिकाली ध्रुव रूप आत्मद्रव्य नही हो सकता है ।

वस्तुत· आत्मा तो अन्तरोन्मुखी दृष्टि का विषय है। वह तो अनुभवगम्य है। उसे विकल्पो मे नही बाधा जा सकता है। उसमें स्पर्श, रस, गध, वर्णादि न होने से उसे इन्द्रियो से भी नही जाना जा सकता है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आत्मतत्त्व किस-किस से भिन्न है ?	१ (क) स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थो से । (ख) आत्मा मे उत्पन्न होने वाले मोह, राग-द्वेष आदि विकारी भावो से । (ग) परलक्ष्यी क्षयोपशम ज्ञान से। (घ) एक समय वाली केवलज्ञान पर्याय से ।
२ यह आत्मा कैसे जाना जा सकता है ?	२ (क) अन्तरोन्मुखी दृष्टि से । (ख) आत्मानुभव से ।
३. यह आत्मा कैसे प्राप्त नही किया जा सकता ?	३ (क) वहिलक्ष्यी दौड-धूप से । (ख) मानसिक विकल्पो से । (ग) पचेन्द्रियो से ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थो से भिन्न है ।	१ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि पदार्थो से भिन्न है या नही ?	१ है ।
	२ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थो से भिन्न है या अभिन्न ?	२ भिन्न ।
	३ आत्मतत्त्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थो से कैसा है ?	३. भिन्न ।
	४ आत्मतत्त्व कैसा है ?	४ आत्मतत्व स्त्री, पुत्र, मकान, शरीरादि सयोगी पदार्थो से भिन्न है ।

नोट :— इसी प्रकार आगत सभी सिद्धात-वाक्यो को समझाया जायगा ।

सारांश कथन

अध्यापक कथन – अब हम इस निर्णय पर पहुंचे कि आत्मा शरीरादि पर-संयोगो से, मोहादि संयोगी भावों से, क्षयोपशम ज्ञानादि से एव क्षायिक भाव रूप पर्यायों से भी भिन्न त्रैकालिक वस्तु है तथा उसे बाहरी क्रियाकाण्ड से, इन्द्रियो एव मानसिक विकल्पों से नही पाया जा सकता है।

द्वितीय अन्विति

"यह अनुभवगम्य......................दशा नही ला सकती है।"

आदर्श वाचन – पूर्ववत् ।

अनुकरण वाचन – पूर्ववत् ।

विचार-विश्लेषण –

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पढ़ा उसमे निम्नलिखित तथ्य निरूपित है :–

(१) पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है।

(२) अनादि अनन्त गुणो की अखण्डता ही आत्मा की एकता है।

(३) पर से कुछ चाहिये नही और न पर को कुछ देने लायक इसमे है, यही आत्मा की पूर्णता है।

(४) आत्मानुभूति को प्राप्त करने का प्रारम्भिक उपाय तत्त्वविचार है।

(५) वह आत्मानुभूति अपनी प्रारम्भिक भूमिका तत्त्वविचार का अभाव करती हुई प्रगट होती है।

(६) आत्मा ज्ञान का विषय है, वाणी और लेखनी की पकड़ से परे है।

बोधगम्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
१ आत्मा की शुद्धता क्या है ?	१ पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है ।
२ आत्मा की एकता क्या है ?	२ अनादि अनन्त गुणो की अखण्डता ही आत्मा की एकता है ।
३ आत्मा की पूर्णता क्या है ?	३ पर से कुछ चाहिये नही और न पर को कुछ देने लायक इसमे है, यही आत्मा की पूर्णता है ।
४. आत्मानुभूति प्राप्त करने का प्रारभिक उपाय क्या है ?	४ आत्मानुभूति प्राप्त करने का प्रारभिक उपाय तत्त्वविचार है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

तथ्य-वाक्य	प्रश्न	उत्तर
पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता हैं ।	१. पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है या नही ?	१ हे ।
	२ पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है या अशुद्धता या एकता ?	२ शुद्धता ।
	३ आत्मा की पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता क्या है ?	३ शुद्धता ।
	४ आत्मा की शुद्धता क्या है ?	४ पर भावो से भिन्नता और ज्ञानादि भावो से अभिन्नता ही आत्मा की शुद्धता है ।

नोट — इसी प्रकार आगत सभी सिद्वात-वाक्यो को समझाया जावेगा ।

सारांश कथन

साराश कथन में उक्त तथ्यो को सक्षेप में दुहरा दिया जायेगा ।

समापन

अध्यापक कथन – अभी हमने जो पढा वह आप लोगों की समझ में आ गया होगा । अच्छा बताइये –

(१) आत्मा को वाणी से कहा जा सकता है क्या ?

(२) क्या आत्मा इन्द्रियो से जाना जा सकता है ? यदि नही, तो क्यो ?

गृहकार्य

अध्यापक कथन – आज समझाये गये सभी प्रश्नोत्तर तैयार करके लाना है । साथ ही "मै कौन हूँ ?" इस विषय पर एक निबन्ध लिख कर लाना है और ध्यान रखो कि आने वाले शनिवार को अपनी छात्रहितकारिणी सभा में "मै कौन हूँ ?" इस विषय पर ही भाषण व कवितायें होगी । जो भी छात्र बोलना चाहे – मत्री, छात्र-हितकारिणी सभा को अपना नाम लिखवा देवे ।

पाठ-संकेत

वीतराग विज्ञान पाठमालाओं मे आये हुये तीन पाठो की आदर्श पाठ-योजनाये प्रस्तुत की। आगे शेष पाठो के पाठ-सकेत दिये जा रहे है। पाठ-सकेतो का ध्यान रखते हुये अध्यापक बन्धुओं को प्रत्येक पाठ पढाने के पूर्व उपरोक्त पाठ-योजनाओ के अनुरूप पाठ-योजना तैयार करनी है। ध्यान रहे किसी भी पाठ की पाठ-योजना तैयार करते समय तत्संबधित पाठ-सकेत मे दिये सकेतो की अवहेलना नही की जानी चाहिये।

पाठ-संकेत 1

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ २)

"आत्मा और परमात्मा"

आवश्यक निर्देश :—

(१) मुनिराज योगीन्दु का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना। परमात्मप्रकाश और योगसार मूल ग्रन्थो को पढने की प्रेरणा देना, जिनके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) सवाद काल्पनिक है, यह स्पष्ट करना।

(३) आत्मा के भेद-प्रभेदो को निम्नलिखित चार्ट से स्पष्ट करना :—
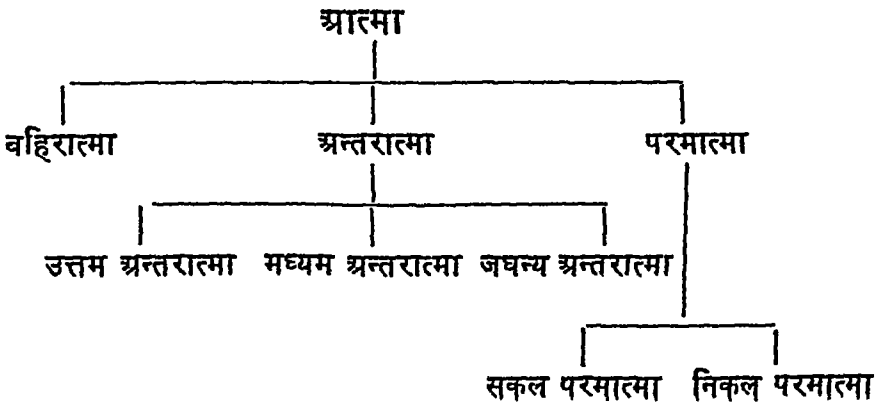
(४) आत्मा और आत्मा के समस्त भेद-प्रभेदो की परिभाषाये वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराना।

(५) लम्बी परिभाषाओं को टुकड़ों में तैयार करावे। जैसे –

प्रश्न – शरीर को आत्मा मानने वाला कौन है ?

उत्तर – बहिरात्मा।

प्रश्न – पर-पदार्थ में अपनापन मानने वाला कौन है ?

उत्तर – बहिरात्मा।

प्रश्न – रागादि मे अपनापन मानने वाला कौन है ?

उत्तर – बहिरात्मा।

प्रश्न – आत्मा को न जानने वाला कौन है ?

उत्तर – बहिरात्मा।

नोट :– चारो परिभाषाये पृथक्-पृथक् वस्तुनिष्ठ पद्धति के चारो सोपानो द्वारा तैयार कराके उन्हे एकत्र करके पूरी परिभाषा स्पष्ट कर दे। इस प्रकार बहिरात्मा की परिभाषा निम्नानुसार हुई :–

"शरीर को आत्मा तथा अन्य पदार्थो और रागादि में अपनापन मानने वाला या आत्मा का स्वभाव न जानने वाला मिथ्यादृष्टि जीव बहिरात्मा है।"

पाठ-संकेत २

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १–पाठ ३)

"सात तत्त्व"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आचार्य उमास्वामी का जिज्ञासोत्पादक ढंग से परिचय देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र पढने की प्रेरणा देना जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) पाठ में आगत सभी परिभाषाओ को वस्तुनिष्ठ पद्धति द्वारा तैयार कराया जावे।

(३) "प्रयोजनभूत तत्त्व" और "द्रव्य दृष्टि" को विशेष स्पष्ट करना एवं वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) आश्रववादि तत्त्वो को द्रव्य और भाव के भेद से स्पष्ट करना चाहिये।

(५) पुण्य और पाप का अन्तर्भाव आश्रव और बन्ध मे होता है। इस तथ्य को निम्न चार्ट द्वारा समझाया जाना चाहिये :–
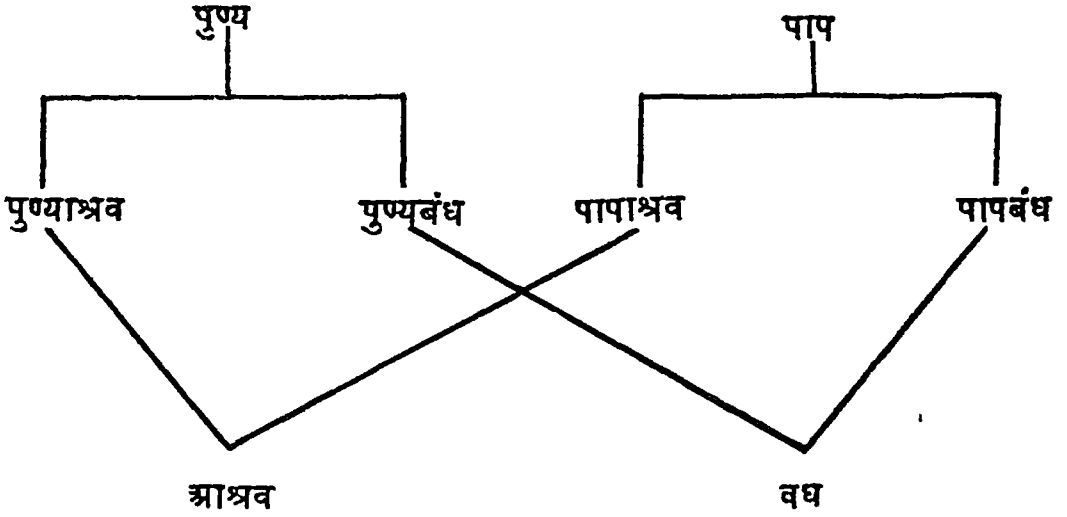
(६) तत्त्व के भेद-प्रभेद स्पष्ट करने के लिये निम्न चार्ट का प्रयोग करना चाहिये –
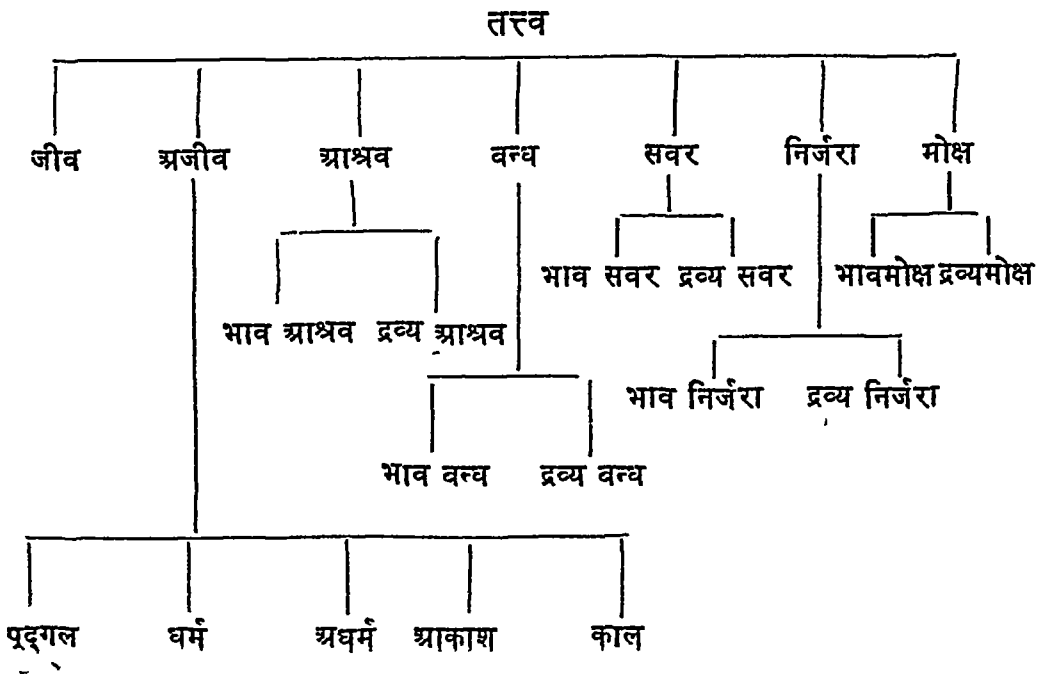
पाठ-संकेत ३

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १ – पाठ ४)

"षट् आवश्यक"

आवश्यक निर्देश :–

(१) निश्चय आवश्यक और व्यवहार आवश्यक की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना तथा प्रत्येक आवश्यक मे निश्चय व्यवहार का भेद स्पष्ट करना।

(२) निश्चय और व्यवहार आवश्यकों का भेद स्पष्ट करते समय निम्नानुसार ध्यान दिया जाना चाहिये :–

	निश्चय आवश्यक	व्यवहार आवश्यक
(क)	शुद्ध भाव	शुभ भाव
(ख)	बन्ध का अभाव	पुण्य बन्ध
(ग)	ज्ञानी के ही होते है।	ज्ञानी के तो होते ही है पर अज्ञानी के भी देवपूजादि के शुभ भाव होते है।

(३) व्यवहार आवश्यक को पुण्य बन्ध का कारण कहने से प्राय: लोग यह आशंका व्यक्त करते है कि ऐसा कहोगे तो लोग देवपूजनादि छोड देगे। अत इस प्रश्न को स्वय उठाकर समुचित समाधान निम्नानुसार करना चाहिये :–

उपदेश तो ऊँचा चढने को दिया जाता है, नीचे गिरने को नही। अत: जो जीव देवपूजनादि के शुभ भाव छोड़कर विषय कषायादिक अशुभ भावो में प्रवर्तेगे, उनका तो और भी बुरा होगा अर्थात् पाप बन्ध होगा। अत: देवपूजनादि शुभ भावों को छोडकर अशुभ भावो मे जाना ठीक नही है। यदि देवपूजनादि के शुभ भाव छोड़कर शुद्ध भाव मे रह सके तो बहुत ठीक अन्यथा अशुभ भाव मे जावेगे तो पाप बध करेगे। यहाँ शुभ भाव को पुण्य बध का कारण कहा है वह तो सत्य का ज्ञान कराने के लिये कहा है – अशुभ भाव मे जाने के लिये नही।

(४) आवश्यक के भेदो-प्रभेदों को स्पष्ट करने के लिये अगले पृष्ठ पर दिये गये चार्ट को प्रयोग मे लाना चाहिये।

श्रावक के आवश्यक कर्त्तव्य

- देव पूजा
  - द्रव्य पूजा
  - भाव पूजा
    - निश्चय भाव पूजा
    - व्यवहार भाव पूजा
- गुरु उपासना
  - निश्चय गुरु उपासना
  - व्यवहार गुरु उपासना
- स्वाध्याय
  - निश्चय स्वाध्याय
  - व्यवहार स्वाध्याय
- सयम
  - निश्चय सयम
  - व्यवहार सयम
- तप
  - निश्चय तप
  - व्यवहार तप
- दान
  - निश्चय दान
  - व्यवहार दान
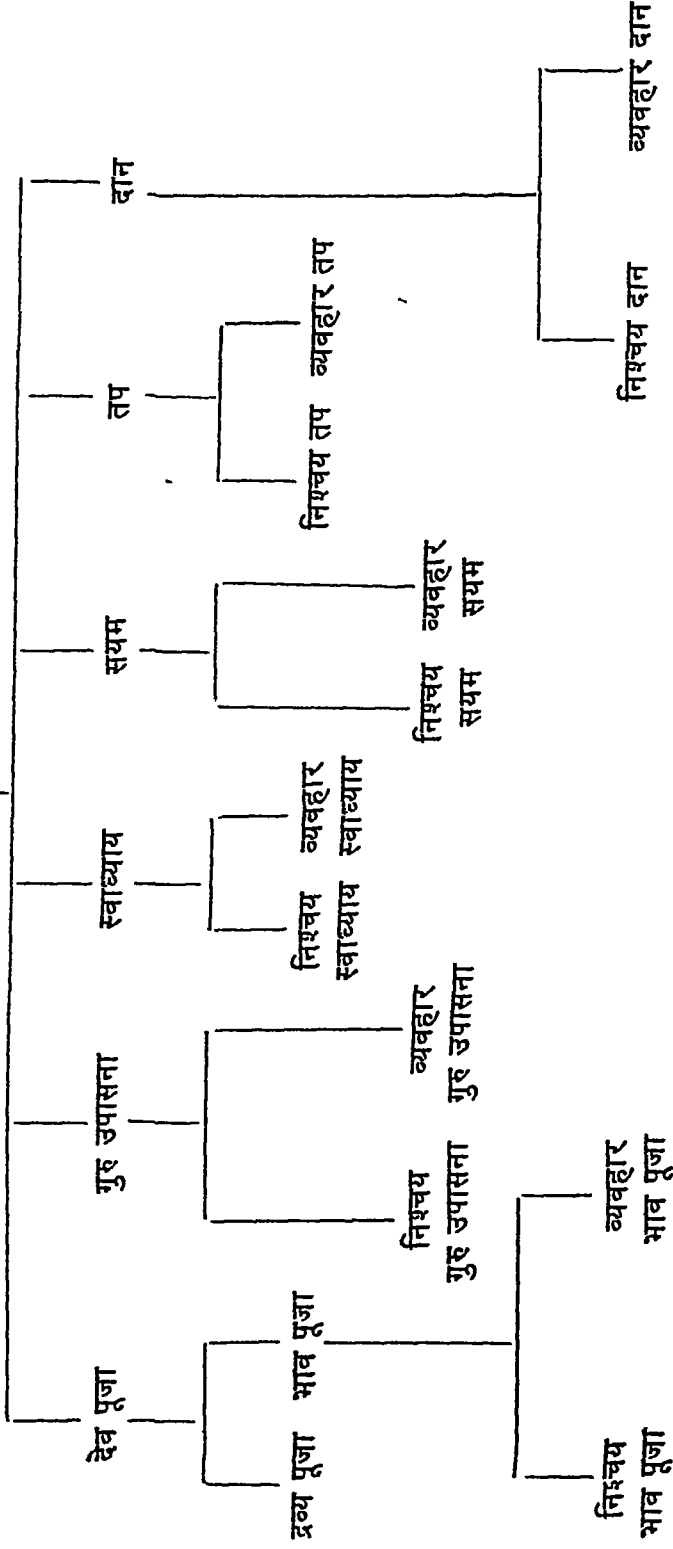
नोट – ध्यान रहे देव पूजा को छोडकर अन्य आवश्यको मे द्रव्य और भाव का भेद नही किया गया है।

पाठ-संकेत ४

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १—पाठ ५)

"कर्म"

आवश्यक निर्देश :—

(१) सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना। सिद्धान्त चक्रवर्ती शब्द का अर्थ स्पष्ट करना तथा गोम्मटसार कर्मकाण्ड पढने की प्रेरणा देना – जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(२) सवाद काल्पनिक है – यह स्पष्ट करना।

(३) "कर्म आत्मा को बलात् विकार नही कराते किन्तु जब आत्मा स्वय विकार रूप परिणमे तब कर्म का उदय उसमे निमित्त कहा जाता है।" उक्त तथ्य भली भाति स्पष्ट करना।

(४) निमित्त कारण की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा तैयार कराना।

(५) निमित्त और उपादान की स्थिति को निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :–

(क) कोई कार्य होता है तो उसका कारण अवश्य होता है। जो द्रव्य स्वयं कार्यरूप परिणमे – उसे उपादान (असली) कारण कहते है। पर जो पदार्थ स्वयं कार्यरूप तो परिणमे नही किन्तु कार्य की उत्पत्ति में अनुकूल होने का जिस पर आरोप आ सके – उसे निमित्त कारण कहते है। जैसे – घडा एक कार्य है। मिट्टी घड़े रूप स्वयं परिणमित होती है – अतः घड़े रूपी कार्य की उपादान कारण हुई और कुम्हार चक्र दण्ड आदि घडे रूपी कार्य के अनुकूल परद्रव्य है – अतः उन्हे निमित्त कारण कहा जाता है।

(ख) घडे के उदाहरण के वाद स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर के सिद्धान्तानुसार आत्मा सम्बन्धी उदाहरण से निमित्त उपादान को स्पष्ट करना चाहिये। जैसे – आत्मा स्वय मोह-राग-द्वेष रूप परिणमित होता है। अतः आत्मा मोह-राग-द्वेष रूप कार्य का उपादान कारण हुआ और कर्म का उदय उसमे अनुकूल परद्रव्य है। अतः वह निमित्त कारण हुआ।

(६) उक्त तत्त्व को वस्तुनिष्ठ पद्धति से स्पष्ट करना चाहिये जिससे छात्रो को स्पष्ट हो जाय । जैसे –

प्रश्न	उत्तर
१ आत्मा दु खी क्यो है ? कर्म के कारण या स्वय की भूल से ?	१ स्वयं की भूल से ।
२ घडे का निमित्त कारण कौन है ? मिट्टी या कुम्हार ?	२ कुम्हार ।
३ कपडे का उपादान कारण कौन है ? सूत या बुनकर ?	३ सूत ।
४ राग का उपादन कारण क्या है ? कर्म या आत्मा ?	४ आत्मा ।

(७) द्रव्य कर्म और भाव कर्म के लक्षण वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो से तैयार कराने के बाद निम्नानुसार मूल्याकन प्रश्नो से वस्तु को स्पष्ट करना चाहिये –

(क) "मेरी बात सुनकर उसे क्रोध आ गया ।" इस वाक्य मे क्रोध द्रव्य कर्म है या भाव कर्म ? (भाव कर्म)

(ख) "जो दूसरो के अध्ययन मे बाधा पहुचाते है, उन्हे ज्ञानावरणी कर्म का बन्ध होता है ।" उक्त वाक्य मे प्रयुक्त ज्ञानावरणी कर्म द्रव्य कर्म है या भाव कर्म ? (द्रव्य कर्म)

(८) आठ कर्मो मे घाति अघाति का विभाग निम्नानुसार चार्ट द्वारा समझाया जाय :–
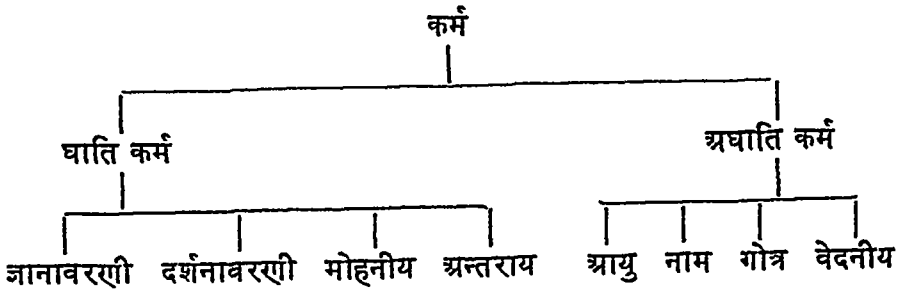
(९) आठ कर्मो की परिभाषाये भी वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा तैयार कराई जावे ।

पाठ-संकेत ५

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १–पाठ ६)

"रक्षाबन्धन"

आवश्यक निर्देश :–

(१) रक्षाबन्धन कथा छात्रो के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत की जावे - जिससे छात्रो मे कथानक सबधी जिज्ञासा अन्त तक वनी रहे ।

(२) कथा मे आगत निम्न प्रसगों पर विशेष बल व ध्यान दिया जाना चाहिये :–

(क) जिस प्रकार सांप को दूध पिलाने से विष ही बनता है, उसी प्रकार तीव्र कषायी अज्ञानी जीवों से की गई तत्त्वचर्चा उनके क्रोध को ही वढाती है ।

(ख) प्रत्येक आत्मा को चाहिये कि जगत के प्रपचों से दूर रह कर तत्त्वाभ्यास में ही प्रयत्नशील रहे । यही ससार बन्धन से रक्षा का उपाय है ।

(३) निम्न प्रश्नोत्तर को विशेप स्पष्ट किया जावे :–

प्रश्न – "विष्णुकुमार ने बावनिया का भेष बनाया और श्रुतसागर ने मुनियो से विवाद किया ।" क्या उक्त क्रियाये मुनि भूमिका मे होना ठीक है ?

उत्तर – नही । यदि ठीक होती तो उन्हे मुनिपद छोड़ना एवं प्रायश्चित लेना जैसे दण्ड क्यों लेने पडते ?

"विष्णुकुमार मुनि ने मुनि पद मे वावनिया वेप नही वनाया किन्तु मुनिपद छोड़कर ऐसा वेप वनाया ।" इस तथ्य की ओर विशेप ध्यान आकर्षित करना चाहिये ।

(४) रक्षावन्धन कथा को अपने शव्दो मे लिखने एवं अपनी भाषा में आकर्षक ढंग से वोलने का अभ्यास कराना ।

पाठ-संकेत ६

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १–पाठ ७)

"जम्बूस्वामी"

आवश्यक निर्देश :–

(१) कविवर प० राजमलजी पाण्डे का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से दे तथा "जम्बूस्वामी चरित्र" को जिसके आधार पर यह पाठ लिखा गया है – पढने की प्रेरणा दे।

(२) जम्बूस्वामी की कथा इस प्रकार प्रस्तुत करना जिससे छात्रो मे अन्त तक उत्सुकता बनी रहे।

(३) पाठ पढाते समय निम्नलिखित अश पर विशेष ध्यान आर्कषित करना :–

"रागियो का राग ज्ञानियो को क्या प्रभावित करेगा ? ज्ञान और वैराग्य की किरणे तो अज्ञान और राग का नाश करने मे समर्थ होती है।"

(४) जम्बूस्वामी की कहानी अपने शब्दो में लिखने और आकर्षक ढग से बोलने का अभ्यास कराना।

(५) उक्त पाठ से मिलने वाली शिक्षा की ओर ध्यान आर्कषित करना।

पाठ-संकेत ७

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग १–पाठ ८)

"बारह भावना"

आवश्यक निर्देश:–

(१) प्रस्तुत बारह भावनाओ के लेखक प० जयचन्दजी छावडा का जिज्ञासोत्पादक ढग से परिचय देना।

(२) बारह भावना नाम से प्रचलित वैराग्योत्पादक एव तत्त्वज्ञानमय विशाल जैन साहित्य का सामान्य परिचय देना एव अन्य कवियो द्वारा लिखित बारह भावनाओ को पढने की प्रेरणा देना। जैसे – छहढाला की पाँचवी ढाल मे वर्णित बारह भावनाएँ आदि।

(३) निम्नलिखित भावनाओ का अर्थ समझाते समय विशेष सावधान रहना चाहिये :-

अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, संवर, बोधिदुर्लभ ।

(४) प्रत्येक भावना मे आये भाव को स्पष्ट करना चाहिये । शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ या केन्द्रीय भाव पर विशेष ध्यान देना है ।

(५) भावनाओ के विशिष्ट अर्थ को प्रश्नोत्तर मे तैयार कर वस्तुनिष्ठ पद्धति के यथासम्भव रूपो से तैयार कराया जावेगा । जैसे -

प्रश्न	उत्तर
१. द्रव्य दृष्टि से सर्व पदार्थ कैसे है ?	१. स्थिर ।
२ पर्याय दृष्टि से पदार्थ कैसे है ?	२ अस्थिर ।
३. उक्त चिन्तवन किस भावना मे किया जाता है ?	३ अनित्य भावना मे ।
४. निश्चय से शरण कौन है ?	४. शुद्धात्मा ।
५. व्यवहार से शरण कौन है ?	५ पच परमेष्ठी ।
६ उक्त चिन्तवन किस भावना मे किया जाता है ?	६ अशरण भावना मे ।

नोट. - इसी प्रकार आगे की भावनाओ को भी स्पष्ट करना चाहिए ।

पाठ-संकेत ८

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २ - पाठ १)

"उपासना"

आवश्यक निर्देश :-

(१) पूजन के छन्दो व जयमाला का सामान्यार्थ बताते समय शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ और केन्द्रीय भाव पर ध्यान देना चाहिए ।

(२) पूजन मे आये विशिष्ट भावो को प्रश्नोत्तरों मे तैयार कराकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना । जैसे -

प्रश्न - स्थापना मे किसको नमस्कार किया गया है ?

उत्तर - सच्चे देव शास्त्र गुरु को ।

प्रश्न – यह जीव पर की ममता मे क्यो अटका है ?

उत्तर – आत्मा मे विद्यमान अनन्त गुणो के वैभव को भूलकर।

प्रश्न – मन की झूठी वृत्ति क्या है ?

उत्तर – पर-पदार्थों को अनुकूल व प्रतिकूल मानना ही मन की झूठी वृत्ति है।

नोट – इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर प्रत्येक छन्द मे से व जयमाला मे से तैयार करके समझाना चाहिए।

(३) निम्न छन्दो पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये –
चन्दन, नैवेद्य, दीप, धूप, अर्घ।

(४) जयमाला मे वर्णित बारह भावनाओ मे से निम्नलिखित भावनाओ पर विशेष ध्यान दिया जाय :–
अनित्य, ससार, अन्यत्व, अशुचि, सवर और बोधिदुर्लभ।

(५) पूजन कठस्थ करने एवं प्रतिदिन करने की प्रेरणा देना।

पाठ-संकेत ९

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग२–पाठ ३)

"सात तत्त्वों सम्बन्धी भूल"

आवश्यक निर्देश :–

(१) यह पाठ प० दौलतरातजी द्वारा लिखित छहढाला की दूसरी ढाल के आधार पर लिखा गया है। अध्यापक को प० दौलतरामजी और उनकी कृति छहढाला का सामान्य परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना है एव छहढाला के अध्ययन की प्रेरणा देनी है।

(२) सात तत्त्वो के सम्बन्ध मे हुई भूलो के सदर्भ मे इस प्रकार भी प्राय प्रयोग किया जाता है कि "आश्रव की भूल" वताइये। भूल तो जीव ही करता है पर जिस तत्व के सम्बन्ध मे भूल करता है, व्यवहारिक भाषा मे उस तत्त्व सम्बन्धी भूल कही जाती है। इस तथ्य को छात्रो के सामने स्पष्ट कर देना चाहिये।

(३) सातो तत्त्वो सम्बन्धी भूलो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(४) जीव और अजीव तत्त्व के सम्बन्ध में की गई भूलों को समझाते समय निम्न सूत्र-वाक्य को ध्यान मे रखना चाहिये :–

जीव को अजीव मानना जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है और अजीव को जीव मानना अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है। जैसे– नीबू को आम माना तो हमने नीबू के सम्बन्ध मे गलती की क्योकि आम तो वहाँ है ही नहीं, नीबू को ही गलत समझ लिया गया है। इसी प्रकार आम को नीबू माना तो आम के सम्बन्ध में गलती हुई।

इसी प्रकार जीव और अजीव के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये जैसे –"मै काला हूँ" यह मानना जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल है क्योकि "मै" आत्मा का वाचक है और "काला" शरीर का रंग है। "मै" (जीव) को काला (अजीव) माना। अतः जीव तत्त्व सम्बन्धी भूल हुई।

इसी प्रकार–"आँख देखती है"–ऐसा मानना अजीव तत्त्व सम्वन्धी भूल है। क्योकि "आँख" अजीव है। "देखना" जीव की क्रिया है। यहाँ अजीव को जीव माना– अतः अजीव तत्त्व सम्बन्धी भूल हुई।

नोट :–इसी प्रकार के कई उदाहरणो से प्रश्नोत्तर कर करके जीव और अजीव तत्त्व सम्वन्धी भूल का ज्ञान कराना चाहिये।

(५) निम्नानुसार मूल्यांकन प्रश्नोत्तरो द्वारा छात्रो के ज्ञान की परीक्षा की जानी चाहिये :–

प्रश्न – शुभाशुभ राग को सुखकर मानना कौन से तत्त्व सम्वन्धी भूल है ?

✓ ✕ ✕
आश्रव, वन्ध, सवर

प्रश्न – शुभ वन्ध को अच्छा और अशुभ वन्ध को बुरा मानना कौन से तत्त्व सम्वन्धी भूल है ?

✕ ✓ ✕
आश्रव, वन्ध, सवर

प्रश्न – आश्रव और वन्ध तत्त्व के सम्वन्ध मे हुई भूलों मे आपस मे क्या अन्तर रहा ?

उत्तर – बन्ध के कारण को अच्छा मानना आश्रव तत्त्व सम्बन्धी भूल है और शुभ बन्ध और उसके फल को अच्छा मानना बन्ध तत्त्व सम्बन्धी भूल है।

प्रश्न – आत्मज्ञान और वैराग्य को दुखकर मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है ?

√ × ×
संवर तत्त्व, बन्ध तत्त्व, आश्रव तत्त्व

प्रश्न – इच्छाओ की पूर्त्ति मे सुख मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है ?

√ × ×
निर्जरा, बन्ध, आश्रव

प्रश्न – ससार मे सुख मानना कौन से तत्त्व सम्बन्धी भूल है ?

× √ ×
बन्ध, मोक्ष, निर्जरा

नोट :—उक्त समस्त प्रश्नोत्तरो को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो द्वारा तैयार कराया जाय।

पाठ-संकेत १०

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ४)

"चार अनुयोग"

आवश्यक निर्देश :—

(१) यह पाठ पं० टोडरमलजी कृत मोक्षमार्ग प्रकाशक के अष्टम अध्याय के आधार पर लिखा गया है। अत. उनका परिचय जिज्ञासोत्पादक ढंग से दिया जाय तथा मोक्षमार्ग प्रकाशक का परिचय देकर उसके स्वाध्याय की प्रेरणा दी जावे।

(२) अनुयोग और चारो अनुयोगो की परिभाषाये वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराई जावे।

(३) किस अनुयोग मे किस बात की मुख्यता रहती है – इसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से तैयार कराया जाय। जैसे –

(क) प्रथमानुयोग मे – कथाओ की।

(ख) करणानुयोग मे – गणित की।

(ग) द्रव्यानुयोग मे – अध्यात्म एवं न्याय शास्त्र की।

(घ) चरणानुयोग मे – बाह्य क्रिया, सुभाषित और नीतिशास्त्र की।

(४) अनुयोगो के परस्पर अन्तर को भी इसी प्रकार प्रश्नोत्तरो के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिये।

(५) चारो अनुयोगो का ज्ञान परिभाषाओं के अतिरिक्त इनकी वर्णन-पद्धति, प्रमुख-उद्देश्य, वर्णन की मुख्यता आदि से कराया जावेगा।

(६) गृहस्थो को समयसारादि अध्यात्म शास्त्र पढने के निषेध की चर्चा चलती है। उस प्रकरण मे उठने वाली शंकाओं को निम्नलिखित तर्क देकर समुचित समाधान करना चाहिये और अध्यात्म शास्त्र पढने की विशेष प्रेरणा दी जानी चाहिये :-

(क) यदि गृहस्थो को समयसारादि पढने की अनुमति नही है तो फिर प० जयचन्दजी, प० टोडरमलजी आदि विद्वानों ने समय-सारादि ग्रन्थो की टीकाये की व उनके उद्धरणों के उल्लेख अपने मौलिक ग्रन्थों मे किये। क्या यह सब बिना पढे सम्भव है ?

(ख) उनमे सम्यग्दर्शन (आत्मानुभूति) प्राप्त करने का उपदेश हे वह तो मुख्यतया गृहस्थो को ही है क्योकि सम्यग्दर्शन के बिना मुनि पद तो होता ही नहीं।

(७) कुछ लोग अध्यात्म शास्त्रो के अध्ययन-अध्यापन से ही आचरण भ्रष्ट होने की आशका व्यक्त करते है। अत: तत्सम्बन्धी शकाओं का निम्नानुसार समुचित समाधान किया जाना आवश्यक है :-

(क) द्रव्यानुयोग मे आत्मज्ञान शून्य बाह्याचार का निषेध अवश्य किया है पर साथ ही सर्वत्र स्वछन्द होने का निषेध भी किया है। अत: भ्रष्ट होने की शका निर्मूल है, किन्तु सही बात जानने से सच्चा व्रती बनने की ही सम्भावना है।

(ख) यदि कोई अज्ञानी भ्रष्ट भी हो जाय तो यदि गधा मिश्री खाने से मर जाय तो सज्जन तो मिश्री खाना छोडे नही, उसी

प्रकार कोई अज्ञानी अध्यात्म शास्त्र सुनकर भ्रष्ट हो जावे तो सभी मुमुक्षु तो अध्यात्म चर्चा बन्द करेंगे नही।

(ग) यदि कुछ अज्ञानियो की भ्रष्टता के डर से अध्यात्म शास्त्रो के अध्ययन-अध्यापन का निषेध करेंगे तो मूल मोक्षमार्ग का ही निषेध हो जावेगा।

पाठ-संकेत ११

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ५)

"तीन लोक"

आवश्यक निर्देश :--

(१) यह पाठ आचार्य उमास्वामी द्वारा लिखित महाग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र के आधार पर लिखा गया है। अत. उनका परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र का परिचय देकर उसे पढ़ने की प्रेरणा करना।

(२) तीन लोक और जम्बू द्वीप की स्थिति नक्शा के माध्यम से समझाना चाहिये। बड़ा नक्शा उपलब्ध न हो तो बोर्ड पर आवश्यक रेखाये बनाकर प्रत्येक क्षेत्र, पर्वत, नदी आदि स्थानो एव नरक-स्वर्ग की भी स्थिति स्पष्ट करना चाहिये।

(३) छात्रो से पर्वत, नदी आदि की जानकारी नक्शा या बोर्ड के माध्यम से मूल्याकन प्रश्नोत्तरो मे ज्ञात करना चाहिये। जैसे –

(क) गगा नदी कहा है ?

(ख) नील पर्वत कौन सा है ? आदि।

(४) जैन भूगोल और आधुनिक विज्ञान के खोजो के तुलनात्मक प्रश्नो मे उलझना नही चाहिये।

(५) इस पाठ का उद्देश्य जैन भूगोल का सामान्य ज्ञान देना है। अत. इस पाठ पर विशेष वल देने की आवश्यकता नही। विशेप वल देने पर व्यर्थ के प्रश्न उठ खडे होते है।

पाठ-संकेत १२

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २—पाठ ६)

"सप्त व्यसन"

आवश्यक निर्देश :-

(१) यह पाठ कविवर प० बनारसीदासजी रचित नाटक समयसार के आधार पर लिखा गया है। अतः कविवर बनारसीदास का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना तथा नाटक समयसार का सामान्य परिचय देकर पढने की प्रेरणा देना।

(२) सामान्य व्यसन की परिभाषा समझाकर फिर उसमे द्रव्य और भाव व्यसन ऐसे दो भेद करके समझाना एवं उन्हे वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(३) "द्रव्य व्यसन को व्यवहार व्यसन और भाव व्यसन को निश्चय व्यसन कहते हैं"। इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना चाहिए।

(४) प्रत्येक भाव व्यसन की परिभाषा समझाते समय पं० बनारसीदास द्वारा लिखित छन्द की सम्बन्धित पक्ति की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

(५) विषय को स्पष्ट करने के बाद तथा परिभाषा को तैयार करा देने के उपरान्त निम्नानुसार कुछ प्रश्नोत्तर करके विषय को हृदयंगम कराया जाय :-

प्रश्न – देह मे मगन रहना कौन सा व्यसन है ?

उत्तर – भाव मास खाना।

प्रश्न – दूसरो की ही बुद्धि की जाँच मे लगे रहना कौन सा व्यसन है ?

उत्तर – भाव पर स्त्री रमण।

प्रश्न – जंगल मे शेर आदि मारना कौनसा व्यसन है ?

उत्तर – द्रव्य शिकार व्यसन।

प्रश्न – मोह मे पडे रहकर आत्मस्वरूप से अनजान बने रहना कौन सा व्यसन है ?

उत्तर – भाव मदिरापान।

पाठ-संकेत १३

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २–पाठ ७)

"अहिंसा – एक विवेचन"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आचार्य अमृतचन्द्र का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना क्योंकि उक्त पाठ उनके द्वारा रचित ग्रन्थ पुरुषार्थसिद्धयुपाय के आधार पर लिखा गया है। पुरुषार्थसिद्धयुपाय का भी सामान्य परिचय देकर उसे पढने की प्रेरणा देना।

(२) हिसा और अहिंसा को समझाने के पूर्व तत्सम्बन्धी प्रचलित लोक मान्यताओ का निराकरण करना चाहिये।

(३) "स्थूल से सूक्ष्म की ओर" वाला सिद्धान्त यहाँ विशेष रूप से प्रयोग मे लाना चाहिये। हिसा और अहिंसा का स्वरूप समझाते समय प्रथम शारीरिक दृष्टिकोण से, फिर मानसिक दृष्टिकोण से और उसके बाद आध्यात्मिक दृष्टिकोण से विवेचन करना चाहिये।

(४) पर के घात को ही हिसा मानने वालों को समझाने के लिये प्रथम मारने के भाव (द्वेष भाव) को हिसा सिद्ध करना चाहिये। द्वेष भाव मे हिसा सिद्ध हो जाने के उपरान्त राग भाव मे हिसा सिद्ध करना चाहिये। सामान्य राग को हिसा सिद्ध करने मे अशुभ राग सम्बन्धी उदाहरण पहले लें क्योंकि इसके माध्यम से छात्र अपेक्षाकृत शीघ्रता से भाव ग्रहण करेंगे। अशुभ राग के हिसा सिद्ध हो जाने के बाद ही शुभ राग को हिसा सिद्ध करना चाहिये।

(५) द्रव्य हिसा और भाव हिसा का भेद स्पष्ट करके भाव हिसा के त्याग पर विशेष बल देना चाहिये।

(६) हिसा और अहिसा की परिभाषा, आचार्य अमृतचन्द्र के श्लोक के आधार पर वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानो के माध्यम से अच्छी तरह तैयार करा देना चाहिये।

(७) हिसा और अहिसा की उक्त परिभाषा मे उठने वाली प्रचलित शकाओ को स्वय उठाकर उनका समाधान किया जाना चाहिये।

(८) उक्त विषय को लेकर निबन्ध-प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिये।

(९) निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण स्थलो की विशद् एवं स्पष्ट व्याख्या की जानी चाहिये :-

(क) "मोह-राग-द्वेष आदि विकारी भावो की उत्पत्ति होना ही हिसा है और उन भावो की उत्पत्ति नही होना ही अहिसा है।"

(ख) "मोह-राग-द्वेष भावो की उत्पत्ति होना हिसा है और उन्हे धर्म मानना महा हिसा है तथा रागादिक भावों की उत्पत्ति नही होना ही परम अहिसा है और रागादिक भावों को धर्म नही मानना ही अहिसा के सम्बन्ध मे सच्ची समझ है।"

पाठ-संकेत १४

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २-पाठ ८)

"अष्टाह्निका महापर्व"

आवश्यक निर्देश :-

(१) लौकिक पर्व और धार्मिक पर्वो का अन्तर स्पष्ट करना और धार्मिक पर्वों में भी तात्कालिक और शाश्वत पर्वों का भेद स्पष्ट करके उनमें अष्टाह्निका पर्व का स्थान निश्चित करना। निम्नानुसार चार्ट द्वारा विषय स्पष्ट करना चाहिये :-
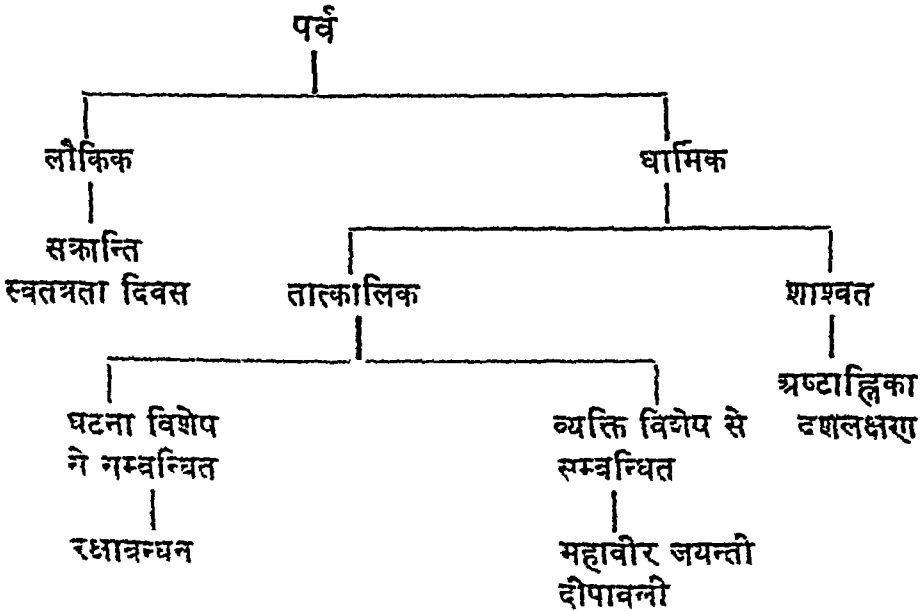
(२) सिद्धचक्र मण्डल विधान और उसके सही महत्त्व से छात्रो को परिचित कराना।

(३) लोक में प्रचलित कथाओ के आधार पर सिद्धचक्र विधान पूजन का सम्बन्ध कुष्ठ रोग निवारण से जुड सा गया है – उक्त धारणा का समुचित तर्कसगत समाधान करना चाहिये।

(४) आजकल पर्व के दिनो मे वाह्याडवर क्रियाकाण्ड और चमक-दमक की प्रमुखता रहती है – उसका तर्कसगत निराकरण करके आत्मज्ञान प्राप्ति और आत्मशुद्धि प्राप्त करने की प्रेरणा देना चाहिये।

(५) पढाते समय पाठ मे आगत निम्नलिखित अशो पर विशेष ध्यान देना चाहिये :–

(क) यह तो आत्मसाधना का पर्व है। धार्मिक पर्वो का प्रयोजन तो आत्मा मे वीतराग भाव की वृद्धि करने का है।

(ख) आत्मा का कोढ तो मोह-राग-द्वेष है। जो आत्मा सिद्धो के सही स्वरूप को जानकर उन जैसी अपनी आत्मा को पहिचानकर उसमे ही लीन हो जावे तो जन्म-मरण और मोह-राग-द्वेष जैसे महारोग भी समाप्त हो जाते है।

(ग) सिद्धो की आराधना का सच्चा फल तो वीतराग भाव की वृद्धि होना है क्योकि वे स्वयं वीतराग है। सिद्धो का सच्चा भक्त उनसे लौकिक लाभ की चाह नही रखता है।

(घ) धार्मिक पर्व तो वीतरागता की वृद्धि करने वाले तथा सयम और साधना के पर्व है।

पाठ-सकेत १५

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २–पाठ ६)

"भगवान पार्श्वनाथ"

आवश्यक निर्देश :–

(१) कविवर भूधरदास और उनके द्वारा लिखित पार्श्वपुराण का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना एव पार्श्वपुराण पढने की प्रेरणा देना क्योकि यह पाठ पार्श्वपुराण के आधार पर लिखा गया है।

(२) भगवान पार्श्वनाथ का सामान्य परिचय बोर्ड पर निम्नानुसार चार्ट बनाकर देना :–

नाम	–	पार्श्वनाथ
पिता का नाम	–	अश्वसेन
माता का नाम	–	वामादेवी
जन्म स्थान	–	वाराणसी
निर्वाण स्थान	–	सम्मेदशिखर

(३) भगवान पार्श्वनाथ की निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर का परिचय देकर वहाँ की यात्रा करने की प्रेरणा देना।

(४) भगवान पार्श्वनाथ का सामान्य परिचय अपने शब्दो मे लिखने और बोलने का अभ्यास कराना।

(५) पाठ पढ़ाते समय निम्न अंशों पर विशेष ध्यान देना :–

(क) पर राज्य-वैभव एवं पुण्य-सामग्री के लिये उनके हृदय में कोई स्थान न था। भोगों की लालसा उन्हे किञ्चित् भी न थी। वैभव की छाया मे पलने पर भी जल में रहने वाले कमल के समान उससे अलिप्त ही थे।

(ख) साधारण देव-देवी तीन लोक के नाथ की क्या रक्षा करेंगे? वे तो अपनी आत्मसाधना द्वारा पूर्ण सुरक्षित थे ही, पर बात यह है कि उस समय धरणेन्द्र और पद्मावती को उनके उपसर्ग को दूर करने का विकल्प अवश्य आया था तथा उन्होंने यथाशक्य अपने विकल्प की पूर्त्ति भी की थी।

(ग) आत्मा ही अनन्त ज्ञान और सुख का भण्डार है। इसकी श्रद्धा किये बिना, इसे जाने बिना और इसमें लीन हुये बिना कोई भी कभी सच्चा सुख प्राप्त नही कर सकता है।

पाठ-संकेत १६

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग २ – पाठ १०)

"देव-शास्त्र-गुरु स्तुति"

आवश्यक निर्देश:–

(१) देव-स्तुति का अर्थ बताते समय उसमे निर्दिष्ट भ्रान्तियो के सम्बन्ध मे बोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये और उन्हे वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये। जैसे –

प्रश्न – आत्मा को चौरासी लाख योनियो मे चक्कर क्यो काटने पड़ते है ?

उत्तर – वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा की सही पहिचान न होने के कारण।

प्रश्न – भगवान की वीतरागता नही पहिचान पाने के कारण क्या गलतियाँ हुई ?

उत्तर – (क) भगवान को करुणानिधि मानकर उनके भरोसे ही पड़ा रहा – स्वय कुछ भी पुरुषार्थ नही किया।

(ख) यह नही जाना कि वे तो इच्छारहित स्वय मे लीन और कृतकृत्य है। वे किसी के भले बुरे के कर्त्ता-धर्त्ता नही है।

प्रश्न – सर्वज्ञता को नही पहिचान पाने से क्या-क्या गलतियाँ हुई ?

उत्तर – सर्वज्ञ भगवान ने बताया कि यह जगत स्वयं परिणमन-शील है। इसका कर्त्ता-धर्त्ता कोई नही। इस पर विश्वास नही किया और पर का कर्त्ता-धर्त्ता स्वयं को मानता रहा और अपना कर्त्ता-धर्त्ता दूसरो को।

(२) जिनवाणी स्तुति का अर्थ वताते समय वोधगम्य और वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरों से यह वतलाना चाहिये कि जिनवाणी के मर्म को समझने में क्या-क्या गलतियाँ हुई ? जैसे –

(क) जिनवाणी मे अनेकान्तात्मक शुद्धात्मा का स्याद्वाद पद्धति से कथन है। उस पर तो ध्यान नही दिया और सारा समय विकथाओं मे गंवाया।

(ख) यह भी नही समझ पाये कि जिनवाणी किसे कहते है और उसमें किस बात का वर्णन है ।

(ग) अभी तक तो राग को धर्म और धर्म को रागमय मानते रहे और शुभ करते-करते धर्म होगा, यह जानते रहे है ।

(३) जिनवाणी के मर्म को समझने से क्या-क्या लाभ हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में बताना चाहिये कि जिनवाणी के मर्म को जानने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि –

(क) धर्म राग में नही, वीतरागता में है ।
राग मे धर्म मानना महाअधर्म है ।

(ख) जिनवाणी वीतरागता की ही पोषक होती है – राग की नही ।

(४) गुरु स्तुति का अर्थ समझाते समय गुरुओं में विशेषताये स्पष्ट करनी चाहिये । जैसे –

सच्चे गुरु जिनवाणी के रहस्य को जानने वाले, दिन-रात आत्म-चिन्तनरत, मृदुभाषी, निर्विकारी नग्न दिग्म्बर होते है ।

(५) उक्त सभी तथ्यों को वस्तुनिष्ठ पद्धति के चार सोपानों द्वारा अच्छी तरह तैयार करा देना चाहिये ।

(६) "देव-शास्त्र-गुरु स्तुति" कंठस्थ कराना चाहिये एव उसके सामान्यार्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करने की प्रेरणा देनी चाहिये ।

पाठ-संकेत १७

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ १)

"सिद्ध पूजा"

आवश्यक निर्देश :–

(१) पूजन के छन्दों व जयमाला का अर्थ बताते समय शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ और केन्द्रीय भाव पर ध्यान दिया जाना चाहिये ।

(२) पूजन मे आये विशिष्ट भावो को प्रश्नोत्तरो में तैयार करके वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये । जैसे –

प्रश्न – भक्त सिद्धो की शरण में क्यो आया है ?

उत्तर – सुख की चाह मे सारे जग मे घूमा पर सुख कही नही मिला, अत अनन्त सुख प्राप्त करने वाले सिद्ध भगवान की शरण मे आया है ।

प्रश्न – "भोजन से जीवन चलता है" – क्या यह मान्यता ठीक है ?

उत्तर – नही, क्योकि नरको मे भोजन बिना जीवन चलता है और खाते-खाते भी मानव मरते देखे जाते है ।

प्रश्न – "भोजन से सुख प्राप्त होता है" – क्या यह मान्यता ठीक है ?

उत्तर – नही, क्योकि भोजन करते हुये भी मानव दु खी देखे जाते है और सिद्ध भगवान भोजन बिना भी अनत सुखी है ।

नोट :– इसी प्रकार पूजन के प्रत्येक छन्द मे से आवश्यक वोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये एव छात्रो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये ।

(३) निम्नलिखित छन्दो पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये :–
चन्दन, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फल ।

(४) जयमाला मे वर्णित सप्त तत्त्व सम्बन्धी भूलो के वोधगम्य प्रश्नोत्तर घर से तैयार करके लाना चाहिये और छात्रो को वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये ।

पाठ-संकेत १८

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ २)

"पूजा – विधि और फल"

(१) पाठ पढ़ाते समय निम्नलिखित अशो पर विशेष ध्यान देना चाहिये तथा इनमे आगत परिभाषाओ, सिद्धातो और निष्कर्षो को वोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे घर से तैयार करके लाना चाहिये तथा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये :–

(क) इष्ट देव-शास्त्र-गुरु का गुण स्तवन ही पूजा है।

(ख) अष्ट द्रव्य से पूजनीक तो वीतरागी सर्वज्ञदेव, वीतरागी मार्ग के निरूपक शास्त्र और नग्न दिगम्बर भावलिगी गुरु ही है।

(ग) मिथ्यात्व राग-द्वेष आदि का अभाव करके पूर्ण ज्ञानी और सुखी होना ही इष्ट है। उसकी प्राप्ति जिसे हो गई वही इष्ट देव है।

(घ) ज्ञानी जीव लौकिक लाभ की दृष्टि से भगवान की आराधना नही करता – उसे तो सहज ही भगवान के प्रति भक्ति का भाव आता है।

(ङ) पूजा भक्ति का सच्चा लाभ तो विषय कषाय से बचना है।

(२) पूजन की विधि छात्रो को एक दिन का मन्दिर मे पूजन का कार्यक्रम रखकर प्रायोगिक रूप से बताना चाहिये।

(३) पूजन की विधियाँ देश-देश मे, प्रान्त-प्रान्त मे, यहाँ तक कि गाव-गांव मे, कुछ अलग-अलग होती है। अत जहा जो पद्धति प्रचलित हो उसके विरुद्ध अध्यापक का उलझना ठीक नही है। हाँ, इतना ध्यान रखना चाहिये कि सचित्तादि वस्तुओ से पूजन न की जावे। पूजन की विधि शुद्धाम्नानुसार ही हो।

(४) ज्ञानी और अज्ञानी के पूजन करने के भाव मे निम्न अन्तर होता है :–

ज्ञानी	अज्ञानी
१ ज्ञानी विषय-कषाय से बचने के लिये पूजन करता है।	१. अज्ञानी विषय-कषाय की चाह से पूजन करता है।
२. ज्ञानी को पूजा-भक्ति का भाव सहज ही आता है।	२. अज्ञानी को पूजा-भक्ति का भाव विषय-सामग्री की प्राप्ति की कामना से आता है।

पाठ-संकेत १९

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ ३)

"उपयोग"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आचार्य उमास्वामी एव उनके द्वारा रचित महाग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना तथा तत्त्वार्थ सूत्र के पढने की प्रेरणा देना। क्योंकि यह पाठ तत्त्वार्थ सूत्र के द्वितीय अध्याय के आधार पर लिखा गया है।

(२) उपयोग के भेद-प्रभेदो को पाठ्यपुस्तक मे पृष्ठ स० १३ पर अकित चार्ट के अनुसार स्पष्ट करना।

(३) उपयोग व उसमे भेद-प्रभेदो की परिभापाओ का भाव अच्छी तरह समझाने के उपरान्त उन्हे वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना।

(४) मतिज्ञान की परिभाषा दो अपेक्षा से समझाना चाहिये –

(क) अपने आत्मा को जानने की अपेक्षा–"पराश्रय बुद्धि को छोडकर दर्शनोपयोग पूर्वक स्वसन्मुखता से प्रगट होने वाले निज आत्मा के ज्ञान को मतिज्ञान कहते है।"

(ख) पर पदार्थो को जानने की अपेक्षा–"इन्द्रियाँ और मन है निमित्त जिसमे, उस ज्ञान को मतिज्ञान कहते है।"

(५) सुज्ञान और कुज्ञान का भेद मिथ्यात्व के कारण तथा प्रयोजनभूतता के कारण होता है – यह स्पष्ट करना चाहिये क्योकि सम्यग्दृष्टि का सभी ज्ञान सुज्ञान है और मिथ्यादृष्टि का सभी ज्ञान कुज्ञान है। लौकिक ज्ञान कैसा भी हो पर प्रयोजनभूत जीवादिक का सही ज्ञान हो तो ज्ञान सच्चा ही है, लौकिक ज्ञान सही होने पर भी यदि प्रयोजनभूत तत्त्वो का ज्ञान नही है या गलत हो तो वह अज्ञान ही है। इस तथ्य को अच्छी तरह स्पष्ट कर देना चाहिये।

पाठ-संकेत २०

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ ४)

"गृहीत और अगृहीत मिथ्यात्व"

आवश्यक निर्देश :–

(१) छहढाला और छहढालाकार प० दौलतरामजी का परिचय जिज्ञासोत्पादक ढग से देना तथा छहढाला पढ़ने की प्रेरणा देना क्योंकि यह पाठ छहढाला की द्वितीय ढाल के आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ की स्थिति निम्नलिखित चार्ट द्वारा स्पष्ट करना :–
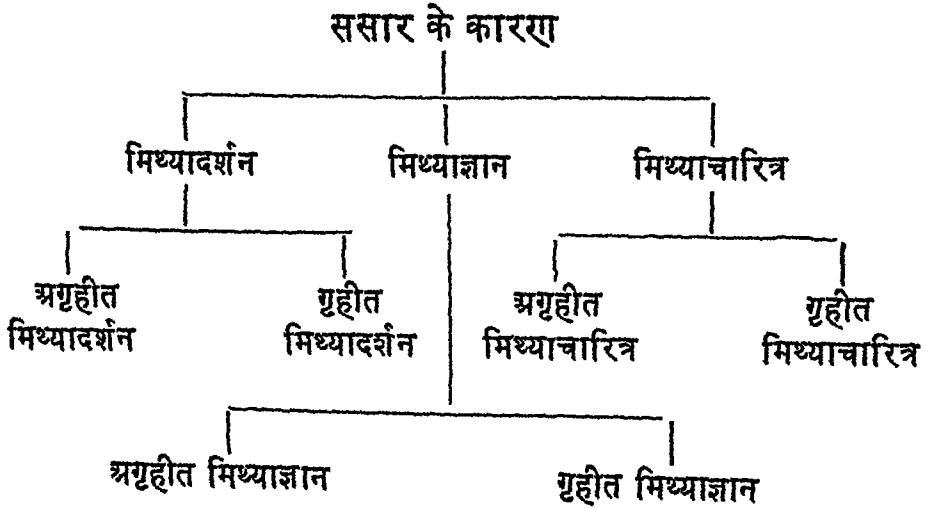
(३) पाठ मे आगत समस्त परिभाषाओ, सिद्धान्तो और तथ्यों को बोधगम्य प्रश्नोत्तारो मे तैयार कर लेना चाहिये और वस्तुनिष्ठ पद्धति से प्रश्नोत्तर करके छात्रों को तैयार कराना चाहिये।

(४) गृहीत और अगृहीत का भेद समझाने के लिये घी मे छाछ और घी मे डालडा आदि के उदाहरण से स्पष्ट करना चाहिये। जैसे–

घी मे छाछ तो उसके आरम्भ काल में ही है क्योंकि घी और छाछ का तो जन्मजात सम्बन्ध है किन्तु घी डालडा आदि पदार्थ बाद मे मिलाये जाते है, उसी प्रकार आत्मा मे अगृहीत मिथ्यात्वादि तो अनादि काल से है और गृहीत कुगुरु आदि के सयोग से यह बुद्धि-पूर्वक ग्रहण करता है।

पाठ-संकेत २१

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ ६)

"ज्ञानी श्रावक के बारह व्रत"

आवश्यक निर्देश .–

(१) बारह व्रतो की स्थिति पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ न० २६ पर अकित चार्ट द्वारा स्पष्ट करनी चाहिये ।

(२) पाठ मे आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्तो और तथ्यो को बोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे तैयार कर लेना चाहिये और वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये ।

(३) निम्नलिखित व्रतो की परिभाषा समझाते समय विशेष ध्यान रखना चाहिये –

अहिसाणुव्रत, परिग्रह परिमाणव्रत और सामायिक शिक्षाव्रत ।

क्योकि इनके समझाने मे प्राय भूल हो जाती है। जैसे – परिग्रह परिमाणव्रत समझाते समय प्राय' कह देते है कि चौबीस प्रकार के परिग्रह का परिमाण कर लेना परिग्रह परिमाणव्रत है परन्तु यह ध्यान नही रखते कि मिथ्यात्व नामक परिग्रह का परिमाण नही होता – उसका तो सर्वथा त्याग होता है ।

(४) हिसा के सकल्पी आदि चार भेद, असत्य के सत् का अपलाप आदि चार भेद भी अच्छी तरह स्पष्ट करना चाहिये ।

(५) निम्नलिखित व्रतो मे परस्पर अन्तर भी बहुत सावधानीपूर्वक स्पष्ट करना चाहिये –

(क) दिग्व्रत और देशव्रत

(ख) परिग्रह परिमाणव्रत और भोगोपभोग परिमाणव्रत ।

पाठ-संकेत २२

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ ७)

"मुक्ति का मार्ग"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आचार्य अमृतचन्द्र और उनके द्वारा लिखित महान् ग्रन्थ पुरुषार्थसिद्धयुपाय का परिचय छात्रो को जिज्ञासोत्पादक ढंग से देना व पुरुषार्थसिद्धयुपाय पढने की प्रेरणा देना क्योंकि यह पाठ उसके आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ मे आगत सभी परिभाषाओ, सिद्धान्तो एव विचारो को बोधगम्य प्रश्नोत्तरो मे तैयार कर लेना चाहिये एव उन्हे वस्तु-निष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(३) मुक्तिमार्ग के भेद-प्रभेदो को निम्न चार्ट के आधार से स्पष्ट करना चाहिये :–
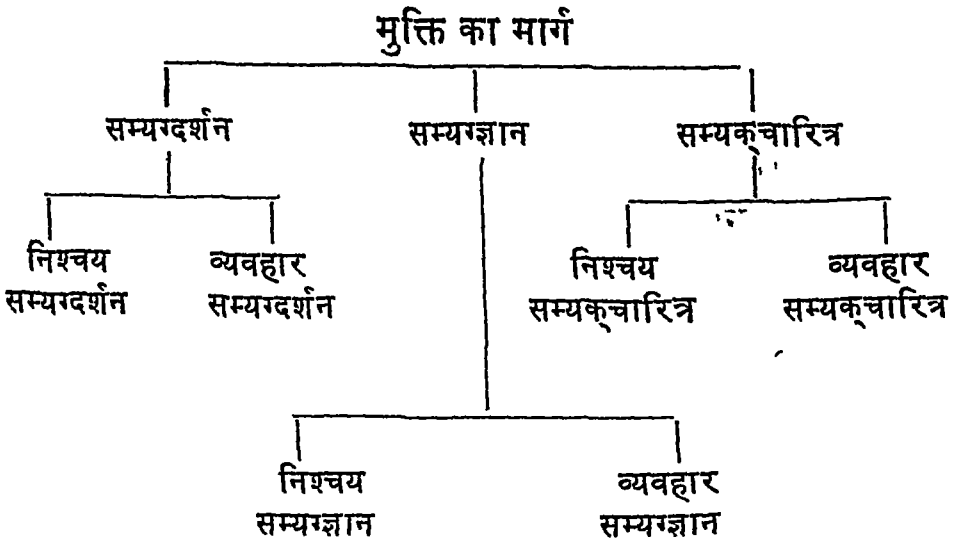
(४) "रत्नत्रय ही मुक्ति का मार्ग है" और "रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है" – उक्त दोनो तथ्यों पर छात्रो का ध्यान विशेष आकर्षित किया जाय।

(५) उक्त तथ्यो की स्थापना मे उत्पन्न होने वाली शकाओ का समुचित समाधान करना। जैसे –

प्रश्न – यदि रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है तो रत्नत्रयधारी मुनिवर स्वर्ग क्यो जाते है ?

उत्तर – रत्नत्रय तो मुक्ति का ही कारण है पर रत्नत्रयधारी मुनिवर शुभभाव रूप राग (अपराध) के फल से ही स्वर्ग जाते है।

प्रश्न – शुभोपयोग को अपराध क्यो कहा है ?

उत्तर – जो बन्ध का कारण हो, वह अपराध ही है।

प्रश्न – रत्नत्रय को ही मुक्ति का मार्ग क्यो कहते है ? रत्नत्रय के साथ होने वाले शुभराग को भी मुक्ति का मार्ग क्यो न कहे ?

उत्तर – जो बन्ध का कारण हो, वही मुक्ति का कारण कैसे हो सकता है ?

पाठ-संकेत २३

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३ – पाठ ८)

"निश्चय और व्यवहार"

आवश्यक निर्देश :–

(१) आचार्यकल्प प० टोडरमलजी और उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ मोक्षमार्ग प्रकाशक का परिचय देकर मोक्षमार्ग प्रकाशक के पढने की प्रेरणा देना चाहिये क्योकि यह पाठ मोक्षमार्ग प्रकाशक के आधार पर लिखा गया है।

(२) पाठ मे आगत निश्चय और व्यवहार की निम्नलिखित तीनो परिभाषाये वस्तुनिष्ठ पद्धति से बहुत अच्छी तरह तैयार कराना चाहिये तथा अनेक उदाहरणो द्वारा उन्हे अच्छी तरह स्पष्ट करके समझाना चाहिये –

(क) सच्चे निरुपण को निश्चय कहते है और उपचरित निरुपण को व्यवहार।

(ख) एक ही द्रव्य के भाव को उस स्वरूप मे ही वर्णन करना निश्चय नय है और उपचार से उस द्रव्य के भाव को अन्य द्रव्य के भाव स्वरूप वर्णन करना व्यवहार है ।

(ग) जिस द्रव्य की परिणति हो, उसको उसी की कहने वाला निश्चय नय है और उसे ही अन्य द्रव्य की कहने वाला व्यवहार नय है ।

(३) "मोक्ष मार्ग दो नही है – मोक्षमार्ग का कथन दो प्रकार से है" – उक्त कथन को भलीभाँति स्पष्ट करना ।

(४) पाठ मे आगत निम्नलिखित अंशो को विशेष स्पष्ट करना :–

(क) निश्चय नय से जो निरुपण किया हो उसे सच्चा (सत्यार्थ) मानकर उसका श्रद्धान करना और व्यवहार नय से निरुपण किया हो उसे असत्यार्थ मानकर उसका श्रद्धान छोड़ना ।

(ख) व्यवहार नय स्वद्रव्य परद्रव्य को व उनके भावों को व कारण कार्यादिक को किसी को किसी में मिलाकर निरुपण करता है – इस प्रकार के श्रद्धान से मिथ्यात्व होता है । अतः व्यवहार नय त्याग करने योग्य है तथा निश्चय नय उन्ही को यथावत् निरुपण करता है, किसी को किसी में नही मिलाता है – ऐसे श्रद्धान से सम्यक्त होता है । अतः उसका श्रद्धान करना ।

(५) निश्चय व्यवहार के सम्बन्ध मे उत्पन्न होने वाली निम्न शकाओ का समुचित सतोषजनक उत्तर देना .–

(क) शास्त्रो मे दोनो नयो का ग्रहण करना क्यो लिखा है ?

(ख) व्यवहार को हेय कहोगे तो लोग व्रत-शील-सयमादि करना छोड देगे ?

(ग) जिनवाणी मे व्यवहार का कथन ही क्यो किया है ?

(घ) व्यवहार निश्चय का प्रतिपादक कैसे है ?

नोट – उक्त प्रश्नो के सरल, सक्षिप्त व समुचित उत्तर वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३ के पृष्ठ ३८–३९ पर दिये हुये है तथा अध्यापकों को इस सदर्भ मे मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवे अध्याय से विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहिये तथा छात्रो को विशेषकर उक्त प्रकरण पढने की प्रेरणा देनी चाहिये ।

पाठ-संकेत २४

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ ६)

"दशलक्षण महापर्व"

आवश्यक निर्देश :–

(१) लौकिक और धार्मिक पर्वो का अन्तर पाठ-सकेत १४ मे दिये गये चार्ट के अनुसार करना चाहिये और उसमे दशलक्षण पर्व का स्थान निर्धारित करके समझाना चाहिये।

(२) सामान्य रूप से दशलक्षण पर्व की परिभाषा वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराके धर्म के दश भेदो के नाम तैयार कराना चाहिये।

(३) उत्तम क्षमादि प्रत्येक धर्म की परिभाषाएँ निश्चय व्यवहार की सधिपूर्वक समझाकर वस्तुनिष्ठ पद्धति से तैयार कराना चाहिये।

(४) अनन्तानुबधी आदि कषायो का सामान्य परिचय छात्रो को करा देना चाहिये क्योकि उनका प्रयोग इस पाठ मे बार-बार हुआ है। उनका भाव स्पष्ट किए बिना पाठ का भाव समझ पाना कठिन है।

(५) प्रत्येक धर्म के आगे "उत्तम" शब्द का प्रयोग होता है। "उत्तम" शब्द का अर्थ निश्चयपूर्वक है। इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये इसे वोर्ड पर लिख देना चाहिये और इसकी ओर प्रश्नोत्तरो के बीच वार-वार ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

"उत्तम = निश्चय सम्यग्दर्शन पूर्वक"

(६) "सत्य वचन बोलना सत्य धर्म नही क्योकि सत्य धर्म तो आत्मा का धर्म है और वचन तो पुद्गल की पर्याय है।" इस तथ्य की ओर छात्रो का ध्यान विशेष आकर्षित करना चाहिये।

(७) निश्चय धर्म और व्यवहार धर्म मे अन्तर निम्नानुसार वताना चाहिये -

निश्चय धर्म	व्यवहार धर्म
१. शुद्ध भाव ।	१. शुभ भाव ।
२. सवर, निर्जरा और मोक्ष के कारण ।	२. पुण्याश्रव और पुण्यबध के कारण ।
३. वास्तविक धर्म ।	३. उपचरित धर्म ।

(८) मुनियों और गृहस्थों के उत्तम क्षमादि धर्मो के बीच अन्तर निम्नानुसार स्पष्ट करना चाहिये :-

मुनियो के उत्तम क्षमादि धर्म	ज्ञानी गृहस्थों के उत्तम क्षमादि धर्म
१ अनन्तानुवन्धी, अप्रत्याख्यान एव प्रत्याख्यान क्रोधादि के अभावरूप उत्तम क्षमादिधर्म ।	१. अनन्तानुवन्धी क्रोधादि के अभाव-रूप या अनन्तानुबधी और अप्रत्याख्यान कषायादि सबधी क्रोधादि के अभाव रूप उत्तम क्षमादि धर्म ।

पाठ-संकेत २५

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ १०)

"बलभद्र राम"

आवश्यक निर्देश :–

(१) रामकथा अति प्रसिद्ध है। छात्रों मे उसके सम्बन्ध में पूर्वाग्रह हो सकते है। अतः रामकथा बताते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिये।
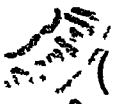
(२) पाठ मे आगत राम के परिवारिक परिचय को ।न चार्टानुसार स्पष्ट कर देना चाहिये :–
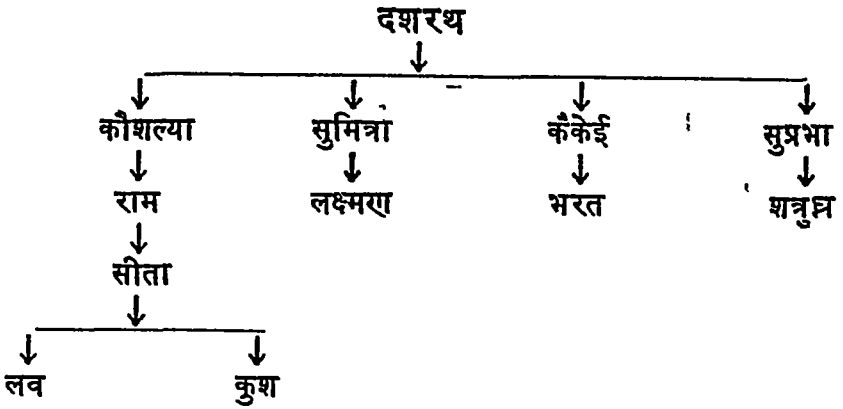
(३) हनुमान और रावण आदि के संबंध में प्रचलित लोक-धारणाओ का बडी ही सावधानी से सतर्क समाधान करना चाहिये । जैसे –

प्रश्न – क्या हनुमान बन्दर थे ?

उत्तर – नही, हनुमानादिक बन्दर न थे किन्तु वानरवशी सर्वांग सुन्दर महापुरुष थे जो कि आत्मोन्मुखी वृत्ति का महान पुरुषार्थ करके वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा बने ।

प्रश्न – हनुमानादिक को वानर क्यो कहा जाता है ?

उत्तर – वानरवंशी होने से उन्हे वानर कहा जाने लगा । आज भी कई लोगो के गोत्र आदि ऐसे पाये जाते है, जो पशु के वाचक है । जैसे – भैंसा आदि ।

प्रश्न – क्या रावण के दशमुख थे ? यदि नही, तो उसे दशमुख क्यों कहा जाता है ?

उत्तर – उसके दशमुख नही थे । एक वार बालक रावण पालने मे लेटा था । उसके गले मे एक नौ मणियो का हार पडा था । उसमे उसका प्रतिबिम्ब पडने से उसके दशमुख दिखाई दे रहे थे । उस दिन से उसे लोग दशमुख कहने लगे ।

(४) रामकथा मे जो लोक अपरिचित व्यक्तियो के उल्लेख हुए हैं, उनके परिचय की ओर छात्रो का ध्यान प्रश्नोत्तर द्वारा विशेष

आकर्षित करना चाहिये क्योंकि लोक परिचित प्रसिद्ध व्यक्तियों से तो प्रायः छात्र परिचित रहते ही है। जैसे –

प्रश्न – वज्रजंघ कौन था ?

उत्तर – पुण्डरीकपुर के राजा – जिन्होने राम के द्वारा निर्वासित गर्भवती सीता को धर्म बहिन बनाकर आश्रय दिया था।

(५) रामकथा को अपने शब्दों में लिखने और बोलने का अभ्यास कराना।

पाठ-संकेत २६

(वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग ३–पाठ ११)

"समयसार स्तुति"

आवश्यक निर्देश :–

(१) समयसार ग्रन्थ व उसके कर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द का परिचय छात्रों को इस प्रकार देना कि जिससे उन्हे समयसार ग्रन्थ पढने की जिज्ञासा जगे।

(२) स्तुति मे आगत सिद्धान्तों, तथ्यों एवं महत्त्वपूर्ण विचारों को बोधगम्य प्रश्नोत्तरों मे तैयार करके वस्तुनिष्ठ पद्धति से छात्रों को तैयार कराना चाहिये। जैसे –

प्रश्न – समयसार रूपी बर्तन में कुन्दकुन्दाचार्य ने क्या भरा ?
उत्तर – भगवान महावीर की अमृतवाणी रूपी गंगा-जल।
प्रश्न – समयसार के सदुपदेश रूपी अमृतपान से क्या लाभ है ?
उत्तर – विभावों में रुकी आत्म-परिणति स्वभाव की ओर दौड़ पड़ती है।
प्रश्न – समयसार सुनने से क्या लाभ है ?
उत्तर – कर्म का रस ढीला पड़ जाता है।
प्रश्न – समयसार जान लेने से क्या लाभ है ?
उत्तर – ज्ञानी का हृदय जान लिया जाता है।
प्रश्न – समयसार की रुचि करने पर क्या होता है ?
उत्तर – संसार और विषय-कषाय से रुचि हट जाती है।

श्री वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

ए-४, बापूनगर, जयपुर-४ (राज०)

ग्रीष्मकालीन शीविर, सत्र १६७०

प्रवेशिका-प्रशिक्षण-परीक्षा-प्रश्नपत्र

समय : ३ घंटे पूर्णाङ्क : ५०

नोट :—कोई भी पॉच प्रश्न हल कीजिये। प्रत्येक खण्ड मे से दो प्रश्न करने अनिवार्य है।

खण्ड अ

१. निम्नलिखित मे से किन्ही पॉच की परिभाषाएँ दीजिए :-
(१) उत्तम क्षमा, (२) विपर्यय, (३) परिग्रह परिमाणव्रत, (४) अहिसा, (५) मतिज्ञान, (६) निमित्त, (७) भावाश्रव

२. निम्न मे से किन्ही पॉच का अन्तर स्पष्ट कीजिये –
(क) निश्चय मोक्षमार्ग एव व्यवहार मोक्षमार्ग
(ख) दिग्व्रत और देशव्रत
(ग) बहिरात्मा और अतरात्मा
(घ) विद्या गुरु और सच्चे (धर्म) गुरु
(ङ) द्रव्य जुआ और भाव जुआ
(च) करणानुयोग और चरणानुयोग

३. निम्न गद्याशो मे से किन्ही दो की सप्रसग विस्तृत सोदाहरण व्याख्या कीजिये :-
(क) एक ही द्रव्य के भाव को उस स्वरूप मे ही वर्णन करना निश्चय नय है और उपचार से उस द्रव्य के भाव को अन्य द्रव्य के भावस्वरूप वर्णन करना व्यवहार है।
(ख) 'मै' शरीर, मन, वाणी और मोह-राग-द्वेष यहॉ तक कि क्षणस्थायी परलक्ष्यी बुद्धि से भिन्न एक त्रैकालिक, शुद्ध, अनादि, अनन्त, चैतन्य, ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुव तत्त्व हूँ, जिसे आत्मा कहते है।
(ग) राग-द्वेष-मोह भावो की उत्पत्ति होना हिंसा है और उन्हे धर्म मानना महाहिसा है। तथा रागादि भावो की उत्पत्ति नही होना परम अहिसा है, और रागादि भावो

को धर्म नही मानना ही अहिंसा के संबंध में सच्ची समझ है।

४ निम्न मे से किन्ही चार का समाधान कीजिए :-

(क) 'श्रद्धान तो निश्चय का रखे और प्रवृत्ति व्यवहार रूप'– उक्त मान्यता क्या ठीक है ?

(ख) यदि रत्नत्रय मुक्ति का ही कारण है तो फिर रत्नत्रयधारी मुनिराज स्वर्गादिक क्यो जाते है ?

(ग) 'युगलजी' कृत देव-शास्त्र-गुरु पूजन (उपासना) के धूप के छद मे किस भ्रान्ति का वर्णन है ?

(घ) सवर तत्त्व के सबध मे यह आत्मा क्या भूल करता है ?

(ङ) प० दौलतरामजी कृत देव-स्तुति के "मै भ्रम्यौ अपनपो बिसरि आप · ·· आदि नौवे दशवे छन्द मे ससार भ्रमण के क्या २ कारण बताए है ?

(च) जो विष्णुकुमार और श्रुतसागर ने किया क्या वह सब मुनि-भूमिका मे संभव है ?

(छ) रत्नत्रय ही मुक्ति का मार्ग है और रत्नत्रय मुक्ति का ही मार्ग है—उक्त सूत्र का भाव स्पष्ट कीजिये।

खण्ड ब

५ "उपासना" अथवा "सात तत्त्वो सबधी भूल" नामक पाठ की पाठ-योजना प्रस्तुत कीजिये।

६ "मैं कौन हूँ" अथवा "निश्चय और व्यवहार" नामक पाठ के पाठ-संकेत तैयार कीजिये।

७. अध्यापकों के लिए दिए गये सामान्य निर्देश लिखिए।

अथवा

वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की प्रशिक्षण-शिविर-योजना पर एक आलोचनात्मक निबंध लिखिए।

८. निम्नलिखित मे से किन्ही पांच पर टिप्पणिया लिखिए :-

(क) प्रस्तुतीकरण (ख) आदर्श वाचन (ग) उद्देश्य कथन (घ) सहायक सामग्री (ङ) पूर्वज्ञान (च) आधार परिचय